सामुदायिक
GOONJ
National News Magazine
RNI No. MPBIL02443/2020-TC
वर्ष : 02 अंक : 01 जनवरी 2022 मूल्य: ₹ 25 पृष्ठ : 52

26th JAN
REPUBLIC DAY
INDIA

REPUBLIC DAY SPECIAL

नमन गणतंत्र

नया साल, नई उम्मीदें.....

कृति सिंह
संपादक

नए साल पर गूंज मीडिया ग्रुप के सभी सुधि पाठकों को नव वर्ष 2022 की हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। यह 21वीं सदी के नए और तीसरे दशक की शुरुआत है। मेरी कामना यही है कि नए साल में हम नए संकल्प लें और पुरानी गलतियों से सबक लें। कोरोना महामारी हमें बहुत कुछ सिखा गई है जिंदगी में कई उतार चढ़ाव हमने 2021 में देखे अब 2022 से यही आशा है कि कोरोना जैसी महामारी से हमें छुटकारा मिले और अंधेरे में उजाले की तरह कोरोना वैक्सीन से यह महामारी समाप्त हो और पूरी दुनिया में फिर एक नई सुबह हो। कोई भी नया वक्त, नया साल या नया दशक एक स्वाभाविक खुशी और उम्मीद के साथ अवतरित होता है। खुशी यह होती है कि हम पुराने से नए की ओर जा रहे हैं और उम्मीद यह कि जो होगा, पहले से बेहतर होगा। मैं अपने देश के कोरोना वॉरियर्स को सलाम करना चाहूंगी, जिन्होंने महीनों अपने घर न जाकर, अपने घर-परिवार की रक्षा-सुरक्षा की परवाह न करते हुए खुद को जनसेवा में झोंक दिया। उन्होंने कड़ी गरमी, बरसात और इस जाड़े में लगातार काम करते हुए, एक सीमा के बाद सब्र खो देने वाली जनता के गुस्से, उसकी आक्रामकता को भी बिना शिकायत सहन किया और उनकी पीड़ा, वेदना को अपनी सदाशयता से शांत करने में कोई कोर-कसर न छोड़ी। दोस्तो, आपका यह हीरो पिछले पूरे साल भी आपके साथ लगातार बना रहा है।

कोविड-19 बीमारी ने पूरी दुनिया में सिर उठाया और हाहाकार मचा दिया। कई लोगों का घर-बार छूट गया, रोजगार छूट गया। अपने सपनों की गठरी लिए कितने ही घर, परिवार से बेदखल हो गए। कितने ही लोग शहरों से गांव लौट गए, कितने ही राहों में ही बीमार हुए और जीवन से हाथ धो बैठे। बीते साल में आम आदमी के साथ-साथ देश के कुछ बड़े कलाकार और लेखक भी हमसे बिछुड़ गए। खबरें आती रहीं, हम मन मसोसकर सुनते रहे। 2021 का साल इस मायने में याद किया जाएगा कि उसने लगभग हर इंसान के मनोबल को तोड़ने का काम किया। ऐसी बीमारी हमारे पीछे लग गई, जो बिना आहट हमला करती थी। लेकिन 2021 का साल इस बीमारी से लड़ने वालों और इसका मुकाबला करने वालों के नाम भी रहा।

नया साल उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने का समय भी है। ऐसे अधूरे संकल्प भी बहुत सारे हैं। अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जाने के संकल्प, बेरोजगारी को खत्म करने के संकल्प, देश को विकसित राष्ट्र और विश्व शक्ति बनाने के संकल्प। ये सभी ऐसे संकल्प हैं, जो हमारे पास एक-दो साल से नहीं, बल्कि कई दशकों से हैं। हमारी अर्थव्यवस्था की नई चुनौतियों के बीच ये समस्याएं भी लगातार जटिल होती जा रही हैं। अच्छा होगा कि हम साल 2022 में उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने में जान लगा दें। यह भी अपने आप में एक नई शुरुआत ही होगी। यकीन मानिए, जो बीत गया, उसमें भी बहुत कुछ अच्छा था, जिसे साथ लिए चलना होगा। जैसे, महामारी के दौर में हम जिस तरह मिलकर लड़े, जिस तरह से हमने एक-दूसरे की चिंता की, वह काबिले तारीफ है।

"नया साल उन अधूरे संकल्पों को पूरा करने का समय भी है। ऐसे अधूरे संकल्प भी बहुत सारे हैं। अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाई पर ले जाने के संकल्प, बेरोजगारी को खत्म करने के संकल्प, देश को विकसित राष्ट्र और विश्व शक्ति बनाने के संकल्प। यकीन मानिए, जो बीत गया, उसमें भी बहुत कुछ अच्छा था, जिसे साथ लिए चलना होगा। जैसे, महामारी के दौर में हम जिस तरह मिलकर लड़े, जिस तरह से हमने एक-दूसरे की चिंता की, वह काबिले तारीफ है।"

दिसंबर 2021 का अंक

ग्वालियर, जनवरी 2022
(वर्ष 02, अंक 01, , पृष्ठ 52, मूल्य 25 रुपए)

प्रेरणास्रोत
श्रीमती संध्या सिकरवार

चेयरमैन
डॉ. जे. एस. सिकरवार

सम्पादक
कृति सिंह

सह संपादक
मनोज सिंह भदौरिया

उप संपादक
अंतिमा सिंह -कौस्तुभ सिंह

कार्यकारी संपादक
डॉ. आर. एन. एस. तोमर

सहायक संपादक
अछेन्द्र सिंह कुशवाह

सब एडिटर/एडिटिंग
इमरान गौरी

क्रिएटिव टीम
दर्शिता चौबे, नेहल सिंह

एडिटोरियल प्रभारी
स्तुति सिंह, स्निग्ध तोमर

संकलन
भरत सिंह, सचिन सिंह

कानूनी सलाहकार
अरविन्द दूदावत

कार्यालय प्रभारी
आकांक्षा तिवारी

छायांकन/सिटी रिपोर्टर
अनिल सिंह सिकरवार

गूंज पत्रिका संपादकीय कार्यालय
ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश
(संपर्कः 7880075908)

IN THIS ISSUE...

नया साल, नई उम्मीदें.....

26
ग्वालियर एसपी को दी बधाई....

पुलिस सेवा के कार्यों को सदैव याद.....

03
नमन गणतंत्र....

टेनिस के क्षेत्र में युवा बनाएं कैरियरः विकास पाण्डेय

48
संगीत के क्षेत्र में उभरता सितारा हैं नमन श्रीवास्तव

युगल प्रदर्शनी प्रेरणा दायक

स्वात्वाधिकारी एवं प्रकाशक कृति सिंह के लिए मुद्रक संदीप कुमार सिंह द्वारा नेहा ग्राफिक्स, 32 ललितपुर कॉलोनी, लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से मुद्रित एवं ई-69/70, हरिशंकरपुरम लश्कर ग्वालियर मध्य प्रदेश से प्रकाशित। संपादक कृति सिंह। सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र ग्वालियर होगा। RNI.Title Code-MPBIL02443/2020-TC (समाचार चयन के लिए पीआरबी एक्ट के तहत जिम्मेदार) पत्रिका में प्रकाशित सामग्री, रचनाएं, एवं स्तंभ लेखक के स्वयं के हैं इसमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। (पत्रिका में सभी पद अवैतनिक एवं अस्थाई हैं।) संपर्कः 7880075908

नमन गणतंत्र 26 JANUARY

HAPPY REPUBLIC DAY

GOONJ COVER STORY

देशभक्तों की गाथाओं से भारतीय इतिहास के पृष्ठ भरे हुए हैं। देशप्रेम की भावना से ओत-प्रोत हजारों की संख्या में भारत माता के वीर सपूतों ने, भारत को स्वतंत्रता दिलाने में अपना सर्वस्य न्योछावर कर दिया था। ऐसे ही महान देशभक्तों के त्याग और बलिदान के परिणाम स्वरूप हमारा देश, गणतान्त्रिक देश हो सका। 26 जनवरी, 1950 भारतीय इतिहास में इसलिये भी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारत का संविधान, इसी दिन अस्तित्व मे आया और भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। भारत का संविधान लिखित एवं सबसे बडा संविधान है। संविधान निर्माण की प्रक्रिया में 2 वर्ष, 11 महिना, 18 दिन लगे थे। भारतीय संविधान के वास्तुकार, भारत रत्न से अलंकृत डॉ.भीमराव अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विश्व के अनेक संविधानों के अच्छे लक्षणों को अपने संविधान में आत्मसात करने का प्रयास किया है। इस दिन भारत एक सम्पूर्ण गणतान्त्रिक देश बन गया।देश को गौरवशाली गणतन्त्र राष्ट्र बनाने में जिन देशभक्तो ने अपना बलिदान दिया उन्हे याद करके, भावांजली देने का पर्व है, 26 जनवरी।

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

गणतंत्र दिवस हमारा राष्ट्रीय पर्व है जो 26 जनवरी को मनाया जाता है। सन 1950 में 26 जनवरी को ही भारत सरकार अधिनियम को हटाकर भारत का संविधान लागू किया गया था। संविधान को लागू करने के लिए 26 जनवरी का दिन इसलिए चुना गया क्योंकि इसी दिन 1930 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था। गणतंत्र दिवस के दिन भारत में राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाता है। देश में स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती के दिन भी राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाता है। हमारे देश में गणतंत्र दिवस समारोह धूमधाम से मनाया जाता है। 26 जनवरी के दिन भारत के राष्ट्पति राष्ट्ध्वज फहराते हैं और राष्ट्गान गाया जाता है। वैसे तो गणतंत्र दिवस पूरे देश में ही धूमधाम से मनाया जाता है लेकिन राजधानी दिल्ली में इसकी छटा देखने लायक होती है। हर साल गणतंत्र दिवस के दिन एक भव्य परेड का आयोजन किया जाता है जो इंडिया गेट से राष्टपति भवन तक होती है। इस परेड के दौरान थलसेना, वायुसेना और नौसेना के

जवान शामिल होते हैं। इस परेड के दौरान तीन सेनाओं के प्रमुख राष्टपति को सलामी देते हैं। यही नहीं इस दिन तीन सेनाएं आधुनिक हथियारों का प्रदर्शन भी करती हैं जो राष्टीय शक्ति का प्रतीक है।

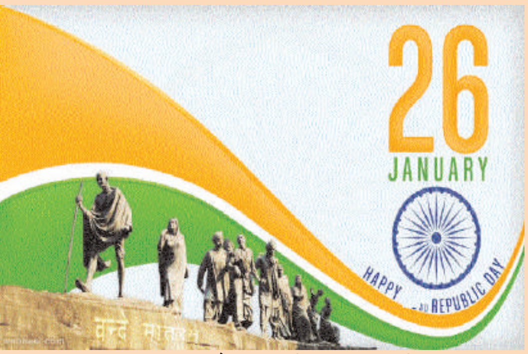

गणतन्त्र का अर्थ है, जनता के द्वारा जनता के लिये शासन। इस व्यवस्था को हम सभी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते हैं। वैसे तो भारत में सभी पर्व बहुत ही धूमधाम से मनाते हैं, परन्तु गणतंत्र दिवस को राष्ट्रीय पर्व के रूप में मनाते हैं। इस पर्व का महत्व इसलिये भी बढ जाता है क्योंकि इसे सभी जाति एवं वर्ग के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं।

गणतंत्र दिवस, 26 जनवरी को ही क्यों मनाते हैं? मित्रों, जब अंग्रेज सरकार की मंशा भारत को एक स्वतंत्र उपनिवेश बनाने की नजर नही आ रही थी, तभी 26 जनवरी 1929 के लाहौर अधिवेशन में जवाहरलाल नेहरु जी की अध्यक्षता में कांग्रेस ने पूर्णस्वराज्य की शपथ ली। पूर्ण स्वराज के अभियान को पूरा करने के लिये सभी आंदोलन तेज कर दिये गये थे। सभी देशभकतों ने अपने-अपने तरीके से आजादी के लिये कमर कस ली थी। एकता में बल है, की भावना को चरितार्थ करती विचारधारा में अंग्रेजों को पिछे हटना पडा। अंतोगत्वा 1947 को भारत आजाद हुआ, तभी यह निर्णय लिया गया कि 26 जनवरी 1929 की निर्णनायक तिथी को गणतंत्र दिवस के रूप में मनायेंगे।

26 जनवरी, 1950 भारतीय इतिहास में इसलिये भी महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि भारत का संविधान, इसी दिन अस्तित्व मे आया और भारत वास्तव में एक संप्रभु देश बना। भारत का संविधान लिखित एवं सबसे बडा संविधान है। संविधान निर्माण की प्रक्रिया में 2 वर्ष, 11 महिना, 18 दिन लगे थे। भारतीय संविधान के वास्तुकार, भारत रत्न से अलंकृत डॉ.भीमराव अम्बेडकर प्रारूप समिति के अध्यक्ष थे। भारतीय संविधान के निर्माताओं ने विश्व के अनेक संविधानों के अच्छे लक्षणों को अपने संविधान में आत्मसात करने का प्रयास किया है। इस दिन भारत एक सम्पूर्ण गणतान्त्रिक देश बन गया।देश को गौरवशाली गणतन्त्र राष्ट्र बनाने में जिन देशभक्तो ने अपना बलिदान दिया उन्हे याद करके, भावांजली देने का पर्व है, 26 जनवरी।

अतः 26 जनवरी को उन सभी देशभक्तों को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए, गणतंत्र दिवस का राष्ट्रीय पर्व भारतवर्ष के कोने-कोने में बड़े उत्साह तथा हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। प्रति वर्ष इस दिन प्रभात फेरियां निकाली जाती है। भारत की राजधानी दिल्ली समेत प्रत्येक राज्य तथा विदेषों के भारतीय राजदूतावासों में भी यह त्योहार उल्लास व गर्व से मनाया जाता है। 26 जनवरी का मुख्य समारोह भारत की राजधानी दिल्ली में भव्यता के साथ मनाते हैं। देश के विभिन्न भागों से असंख्य व्यक्ति इस समारोह की शोभा देखने के लिये आते हैं। हमारे सुरक्षा प्रहरी परेड निकाल कर, अपनी आधुनिक सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हैं तथा सुरक्षा में सक्षम हैं, इस बात का हमें विश्वास दिलाते हैं। परेड विजय चौक से प्रारम्भ होकर राजपथ एवं दिल्ली के अनेक क्षेत्रों से गुजरती हुयी लाल किले पर जाकर समाप्त हो जाती है। परेड शुरू होने से पहले प्रधानमंत्री 'अमर जवान ज्योति' पर शहीदों को श्रंद्धांजलि अर्पित करते हैं। राष्टपति अपने अंगरक्षकों के साथ 14 घोड़ों की बग्घी में बैठकर इंडिया गेट पर आते हैं, जहाँ प्रधानमंत्री उनका स्वागत करते हैं। राष्ट्रीय धुन के साथ ध्वजारोहण करते हैं, उन्हें 21 तोपों की सलामी दी जाती है, हवाई जहाजों द्वारा पुष्पवर्षा की जाती है। आकाश में तिरंगे गुब्बारे और सफेद कबूतर छोड़े जाते हैं। जल, थल, वायु तीनों सेनाओं की टुकड़ियां, बैंडो की धुनों पर मार्च करती हैं। 26 जनवरी का पर्व देशभक्तों के त्याग, तपस्या और बलिदान की अमर कहानी समेटे हुए है। प्रत्येक भारतीय को अपने देश की आजादी प्यारी थी। भारत की भूमि पर पग-पग में उत्सर्ग और शौर्य का इतिहास अंकित है। किसी ने सच ही कहा है- कण-कण में सोया

शहीद, पत्थर-पत्थर इतिहास है। ऐसे ही अनेक देशभक्तों की शहादत का परिणाम है, हमारा गणतान्त्रिक देश भारत। 26 जनवरी का पावन पर्व आज भी हर दिल में राष्ट्रीय भावना की मशाल को प्रज्वलित कर रहा है। लहराता हुआ तिरंगा रोम-रोम में जोश का संचार कर रहा है, चहुँओर खुशियों की सौगात है। हम सब मिलकर उन सभी अमर बलिदानियों को अपनी भावांजली से नमन करें, वंदन करें।

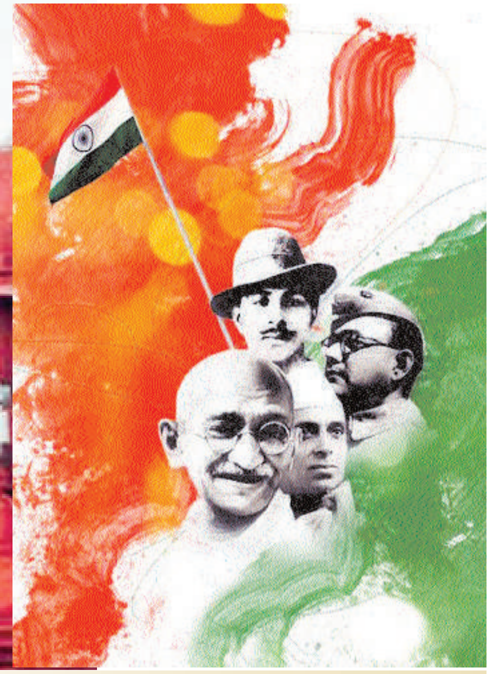

ज़रा याद करो कुर्बानी....

जिस देश में चंद्रशेखर, भगत सिंह, राजगुरू, सुभाष चन्द्र, खुदिराम बोस, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे क्रान्तिकारी तथा गाँधी, तिलक, पटेल, नेहरु, जैसे देशभक्त मौजूद हों उस देश को गुलाम कौन रख सकता था। आखिर देशभक्तों के महत्वपूर्ण योगदान से 14 अगस्त की अर्धरात्री को अंग्रेजों की दासता एवं अत्याचार से हमें आजादी प्राप्त हुई थी। ये आजादी अमूल्य है क्योंकि इस आजादी में हमारे असंख्य भाई-बन्धुओं का संघर्ष, त्याग तथा बलिदान समाहित है। ये आजादी हमें उपहार में नही मिली है। वीर शहीदों की कुर्बानी की बदौलत की आज हम स्वतंत्र होकर गणतंत्र की वर्षगांठ मना रहे हैं देश के वीर सपूतों को शत्-शत् नमनं

लक्ष्मीबाई

वीरता और शौर्य की बेमिसाल निशानी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जब भी बात होती है तो वह इस वीरांगना के वर्णन के बगैर अधूरी मानी जाती है. यूं तो नारी को कोमल और ममता की देवी माना जाता है लेकिन समय आने पर महिला का चंडी रूप विनाश का परिचायक साबित होता है. लक्ष्मीबाई भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का वह ध्रुव तारा है जिसकी रोशनी कभी कम नहीं हो सकती.

भगत सिंह

युवाओं के असली आदर्श- कहते हैं युवा हवा की तरह होते हैं जिन्हें जिस दिशा में बढ़ाया जाए वह उसी दिशा में बह जाते हैं. युवाओं को अगर सही नेतृत्व मिले तो वह देश की अनमोल धरोहर साबित होते हैं. भगत सिंह ने भारतीय युवाओं की उपयोगिता और उनके जुनून को सबके सामने रखा. शहीद भगत सिंह ने ही देश के नौजवानों में ऊर्जा का ऐसा गुबार भरा कि विदेशी हुकूमत को इनसे डर लगने लगा. हाथ जोड़कर निवेदन करने की जगह लोहे से लोहा लेने की आग के साथ आजादी की लड़ाई में कूदने वाले भगत सिंह की दिलेरी की कहानियां आज भी हमारे अंदर देशभक्ति की आग जलाती हैं.

चन्द्रशेखर आजाद

आजाद नाम आजाद, पिता का नाम स्वाधीनता, घर जेल. यह परिचय उस चिंगारी का था जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की आग में सबसे ज्यादा घी डाला. चन्द्रशेखर आजाद ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में

क्रांतिकारियों की ऐसी फौज खड़ा की है अंग्रेजों की नींद उड़ गई. अंग्रेजों में चन्द्रशेखर का ऐसा खौफ था कि उनकी मौत के बाद भी कोई उनके करीब जाने से डरता था. वीरता, साहस और दृढ़निश्चयता की ऐसी मिसाल दुनिया में बहुत कम देखने को मिलती है.

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस

असल मायनों में बोस- अगर आप सोचते हैं कि कहानियों में आने वाले साहसी कारनामें करने वाले नायक सिर्फ कल्पनाओं में होते हैं तो शायद आप गलत है. सुभाष चन्द बोस वह शख्स हैं जिन्होंने अपने कारनामों से ना सिर्फ अंग्रेजों के दांत खट्टे कर दिए थे बल्कि उन्होंने देश को आजाद कराने के लिए अपनी एक अलग फौज भी खड़ी की थी. देश से तो उन्हें निकाल दिया गया लेकिन माटी की स्वतंत्रता के लिए उन्होंने विदेश में जाकर ऐसी सेना चुनी जिसने अंग्रेजों को दिन में ही तारे दिखाने का हौसला दिखाया. अगर नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को भारतीय राजनेताओं का सहयोग मिला होता तो मुमकिन था वह देश को एक सशक्त आजादी दिलाते जिसके बाद शायद आज हमें पाकिस्तान नाम की परेशानी का सामना न करना पड़ता.

सुखदेव

युवाओं के एक और आदर्श - दिल में आस हो और हौशलों में उड़न हो तो कोई मंजिल दूर नहीं होती. कुछ ऐसा ही हौशला था युवा सुखदेव में जिन्होंने देशभक्ति की राह पर चलते हुए फांसी के झुले पर हंसते हंसते खुद को कुर्बान कर दिया.

करतार सिंह सराभा

19 साल के अमर शहीद की कहानी - जिस उम्र में आजकल के बच्चें स्कूल और कॉलेजों में अपना कॅरियर बनाने के सपने देखते हैं उस उम्र में इस महान सेनानी ने देश के लिए अपने प्राणों की आहुति दी.

अपर परिवहन आयुक्त अरविंद सक्सैना को वीरता पदक

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अरविंद सक्सैना को राष्ट्रपति वीरता गैलेंटियर मैडल से किया सम्मानित

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने अपर परिवहन आयुक्त अरविंद सक्सैना को भोपाल में वीरता पदक से सम्मानित किया। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने भव्य समारोह के दौरान श्री सक्सैना को राष्ट्रपति वीरता गैलेंटियर मैडल लगाकर सम्मानित किया। गौरतलब है कि 2017 में भोपाल एसपी रहते श्री सक्सैना ने गांधी मेडिकल कॉलेज के अंदर एक विवादित भवन को लेकर दो पक्षों में हुए दंगों की घटना पर सफलता से अपनी टीम के साथ नियंत्रण कर लॉ एण्ड ऑर्डर की स्थिति बरकरार रखी थी।

सम्मान

मध्य प्रदेश के आईपीएस और एडिशनल कमिश्नर परिवहन श्री अरविंद कुमार सक्सैना जिन्हें अभी हाल ही में वीरता पदक से सम्मानित किया गया है जो कि अपने आप में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने मध्य प्रदेश का गौरव पूरे देश में बढ़ाया है। एडिशनल कमिश्नर श्री सक्सेना एक पुलिस परिवार से ताल्लुक रखते हैं। उनके पिताजी एएसपी रह चुके हैं। श्री सक्सैना को अपने पिता से प्रेरणा मिली कि वह भी पुलिस विभाग में शामिल हो कर समाज के प्रति अपना योगदान दे रहे हैं। जब श्री सक्सैना परिवहन विभाग में पदस्थ हुए तो सबसे बड़ी चुनौती राज्य में राजस्व बढ़ाना था।उन्होंने इस चुनौती को स्वीकार किया और सभी के सहयोग से पिछले वित्तीय वर्ष में 106 करोड़ अधिक आय बढ़ा कर दी है।

श्री सक्सैना को 2021 में भारतय सरकार द्वारा शौर्य मेडल प्राप्त हुआ। इसके अतरिक्त, चुनाव आयोग से चुनाव में पारदर्शिता रखने के लिए सराहना और पुरस्कार मिला। परिवहन विभाग में पदस्था के दौरान कोरोना काल में ऑक्सीजन की कमी सभी के लिए एक बहुत बड़ी चुनौती थी। परिवहन विभाग में पदस्त होने के कारण श्री सक्सैना के कंधो पर एक बड़ी जिम्मेदारी भी थी कि सही समय पर ऑक्सीजन अस्पतालों में पहुंच सके एक राज्य से दूसरे राज्य में ऑक्सीजन का आवागमन एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया थी उस समय श्री सक्सैना ने दिनरात एक कर कोरोना वॉरियर्स की तरह अपनी टीम के साथ एक राज्य से दूसरे राज्य में ऑक्सीजन पहुंचाने का कार्य सफलतापूर्वक किया गया।

श्री सक्सैना एक सुलझे हुए ईमानदार, कर्तव्यनिष्ठ अधिकारी कें रूप में जाने जाते हैं। उन्हें वीरता पुरस्कार मिलने पर गूंज मीडिया ग्रुप परिवार की ओर से बधाई एवं शुभकामनाएं।

5 राज्यों में चुनावी शंखनाद

पाँच राज्यों में अब चूँकि चुनावी बिसात बिछ चुकी है इसलिए पल-पल राजनीतिक घटनाक्रम बदलता रहेगा। देखना होगा कि इन पाँच में से चार राज्यों में सत्तारुढ़ भाजपा क्या फिर से चारों राज्यों की सत्ता हासिल कर पाती है और क्या वाकई पंजाब में प्रभावी उपस्थिति दर्ज करा पाती है। पाँच राज्यों में विधानसभा चुनावों की तारीखों का ऐलान हो चुका है और इसके साथ ही अब चुनावी मैदान सज गया है। देखना होगा कि किस-किस दल से कौन-कौन-से राजनीतिक महारथी चुनावी मुकाबले में उतरते हैं। माना जा रहा है कि मकर संक्रांति के बाद भाजपा सहित अन्य पार्टियों के उम्मीदवारों की पूरी सूची आ जायेगी। हालांकि आम आदमी पार्टी समेत कुछ और क्षेत्रीय दल हैं जो पिछले कुछ समय से एक-एक कर अपने उम्मीदवारों की सूची घोषित करने का सिलसिला बनाये हुए हैं। लेकिन अब जब चुनावों का ऐलान हो चुका है तो देखना यह होगा कि कौन-कौन-सी पार्टियां अपने कितने विधायकों का टिकट काटती हैं और जाहिर-सी बात है कि जिनके टिकट कटेंगे वह पाला बदल कर दूसरे दल के उम्मीदवार के रूप में नजर आयेंगे। यह भी देखना होगा कि इस बार चुनावों में उम्मीदवार के रूप में फिल्म, खेल या बिजनेस क्षेत्र की कौन-कौन-सी हस्तियां उतरती हैं।

विधानसभा चुनावों के मुद्दों की बात करें तो उत्तर प्रदेश में स्पष्ट रूप से नजर आ रहा है कि भाजपा जहां योगी और मोदी सरकार की उपलब्धियों और डबल इंजन वाली सरकार के फायदे गिना रही है

और एक साफ और कठोर निर्णय करने वाले मुख्यमंत्री की छवि रखने वाले योगी आदित्यनाथ के नाम पर वोट मांग रही है तो वहीं सत्ता में आने को आतुर दिख रही समाजवादी पार्टी यह दावा कर रही है कि योगी सरकार जिन कामों को गिना रही है उन्हें सपा सरकार ने ही शुरू किया था। सपा का यह भी आरोप है कि पिछले पांच साल में बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार बढ़ा है और किसानों को उनकी उपज का सही दाम इस सरकार के कार्यकाल में नहीं मिल पा रहा है। जहां तक बसपा की बात है तो वह भी सपा और भाजपा दोनों पर ही आरोप लगाकर अपने शासनकाल की उपलब्धियां याद दिला कर वोट मांग रही है। कांग्रेस और आम आदमी पार्टी ने तो वादों का पिटारा ही खोल दिया है। इन दोनों पार्टियों के वादों पर तो उत्तर प्रदेश में खूब हंसी-ठिठोली भी चल रही है। बाकी अन्य क्षेत्रीय दल किसी ना किसी गठबंधन के तहत अपनी-अपनी चुनावी संभावनाएं बेहतर करने में लगे हुए हैं। सभी पार्टियों ने अपने घोषणापत्रों को अंतिम रूप देना भी शुरू कर दिया है। देखना होगा कि उम्मीदवारों की सूची आने के बाद जब पार्टियां

अपना घोषणापत्र लाएंगी तो उसमें क्या बड़े-बड़े वादे होंगे। फिलहाल अगर मुख्य मुकाबले की बात करें तो यहां भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन और समाजवादी पार्टी के नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच ही टक्कर नजर आ रही है। यह चुनाव जितना योगी आदित्यनाथ के लिए चुनौतीपूर्ण है उतना ही अखिलेश यादव के लिए भी हैं क्योंकि यदि योगी दोबारा जीते तो सत्ता में वापसी करने वाले मुख्यमंत्री के रूप में इतिहास रचने के साथ ही भाजपा के शीर्ष नेताओं में शुमार हो जायेंगे वहीं अगर अखिलेश यादव फिर से यह चुनाव हारे तो समाजवादी परिवार में बगावत होना तय है।

बात उत्तराखण्ड की करें तो यहां मुख्य मुकाबला भाजपा और कांग्रेस के बीच ही नजर आ रहा है लेकिन आम आदमी पार्टी भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने के लिए जीतोड़ प्रयास कर रही है। यहां भाजपा ने स्थिर सरकार तो दी लेकिन पांच साल में तीन मुख्यमंत्री बदल दिये। हालांकि अब जो पुष्कर सिंह धामी मुख्यमंत्री बनाये गये हैं उनकी कर्मठ और साफ छवि का फायदा भाजपा को मिल सकता है। भाजपा यहां बढ़त में इसलिए भी नजर आ रही है क्योंकि कांग्रेस यहां काफी गुटों में बंटी दिखाई दे रही है। कांग्रेस नेता हरीश रावत चाहते हैं कि पार्टी उन्हें मुख्यमंत्री उम्मीदवार बनाकर चुनाव लड़े लेकिन पार्टी के अन्य नेता इस बात के खिलाफ हैं। टिकटों को लेकर भी कांग्रेस के भीतर जो झगड़ा नजर आ रहा है वह ऐन चुनावों के समय पार्टी की मुश्किलें बढ़ा सकता है। पिछले कुछ समय से उत्तराखण्ड में दल बदल का खेल चल रहा है लेकिन अब इसके और तेज होने की उम्मीद है। भाजपा यहां पांच साल की अपनी उपलब्धियों और केंद्र सरकार की ओर से मिली विकास परियोजनाओं के नाम पर वोट मांग रही है तो कांग्रेस राज्य सरकार की नाकामियां गिनाते हुए अपने को वोट देने की अपील कर रही है। वहीं आम आदमी पार्टी का कहना है कि जनता ने भाजपा और कांग्रेस को देख लिया इसलिए अब उसको मौका दिया जाना चाहिए।

बात पंजाब की करें तो यहां का चुनाव इस बार बेहद दिलचस्प है। यहां कांग्रेस सत्तारुढ़ तो है लेकिन उसके तमाम गुट आपस में ही एक दूसरे की टांग खींचने में लगे हुए हैं। चरणजीत सिंह चन्नी चाहते हैं कि उन्हें ही मुख्यमंत्री उम्मीदवार के रूप में घोषित कर चुनाव लड़ाया जाये तो नवजोत सिंह सिद्धू की चाहत खुद मुख्यमंत्री बनने की है। सुनील जाखड़ समेत अन्य कई कांग्रेस नेता भी यह पद पाने का सपना संजोये हैं इसलिए टिकटों के बंटवारे के समय कांग्रेस में जबरदस्त घमासान देखने को मिल सकता है। पूर्व मुख्यमंत्री अमरिंदर सिंह अपनी अलग पार्टी बनाकर भाजपा के साथ चुनाव लड़ रहे हैं तो कई किसान संगठन भी अपना मोर्चा बनाकर चुनाव मैदान में हैं। शिरोमणि अकाली दल भाजपा का साथ छोड़कर इस बार बहुजन समाज पार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ रही है। आम आदमी पार्टी भी पहले से बेहतर संगठन और अच्छी रणनीति के साथ मैदान में है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हालिया पंजाब दौरे के दौरान उनकी सुरक्षा में हुई चूक के चलते शहरी क्षेत्रों में भाजपा के पक्ष में सहानुभूति का भी माहौल है। चुनावी मुद्दों की बात करें तो इस बार के चुनाव में कौन कितना क्या

फ्री दे सकता है इसकी सर्वाधिक गूँज है। किसानों से जुड़े मुद्दे भी प्रमुख हैं। देखना होगा कि जनता आखिर स्पष्ट बहुमत वाली सरकार चुनती है या फिर राज्य में त्रिशंकु विधानसभा बनती है।

जहां तक गोवा की बात है तो इस छोटे से राज्य की सत्ता हासिल करने के लिए अन्य राज्यों की आधा दर्जन पार्टियां यहाँ पहुँच चुकी हैं। गोवा में मुख्य मुकाबला वैसे तो भाजपा के नेतृत्व वाले गठबंधन और कांग्रेस के नेतृत्व वाले गठबंधन के बीच ही है लेकिन मैदान में आम आदमी पार्टी और तृणमूल कांग्रेस भी ताल ठोंक रही हैं। इस बार के चुनावों में यहां कई नेता पुत्रों की फौज भी देखने को मिल सकती है क्योंकि बताया जा रहा है कि भाजपा और कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता अपने-अपने पुत्रों को टिकट दिलाने की जुगत में लगे हुए हैं। तृणमूल कांग्रेस और आम आदमी पार्टी की नजर ऐसे लोगों पर बनी हुई है जिन्हें भाजपा या कांग्रेस से उम्मीदवारी नहीं मिले तो वह उनके पाले में आ सकें। यहां चुनावी मुद्दों की बात करें तो भाजपा अपने विकास कार्यों को गिना रही है तो कांग्रेस समेत अन्य पार्टियां कोरोना की दूसरी लहर के दौरान राज्य सरकार की कथित नाकामियों, भ्रष्टाचार, महंगाई, खनन आदि को मुद्दा बना रही हैं। लेकिन फिर भी भाजपा को उम्मीद है कि साफ छवि वाले मुख्यमंत्री प्रमोद सावंत उसे सत्ता में वापिस ले आयेंगे। हम आपको याद दिला दें कि गोवा में भाजपा को पिछली बार भी सत्ता नहीं मिली थी और वह दूसरे नंबर की सबसे बड़ी पार्टी बनी थी लेकिन उसके बावजूद उसने जोड़तोड़ कर सरकार बना ली। यदि इस बार भी ऐसा ही हो जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मणिपुर की बात करें तो पिछले पांच साल में यह प्रदेश अपेक्षाकृत शांत रहा और इसे विकास की कई परियोजनाएं मिली हैं। यहां भाजपा की पहली सरकार है और उसका यह कहना है कि उसे अभी काम पूरे करके दिखाने के लिए और समय चाहिए इसीलिए यहां उसके खिलाफ कोई नकारात्मक माहौल नजर नहीं आ रहा है। कांग्रेस के कई नेताओं ने जिस तरह हाल ही में पाला बदला है उससे ऐन चुनावों से पहले पार्टी की स्थिति कमजोर हुई है। मणिपुर में भाजपा अपने सहयोगी दलों को साथ रखने और नये लोगों

को साथ जोड़ने में कामयाब हुई है इसलिए फिलहाल उसका पलड़ा भारी नजर आ रहा है। लेकिन हाल में एकाध उग्रवादी घटनाओं और नगालैंड की घटना को देखते हुए कुछ नाराजगी भी दिख रही है। देखना होगा कि भाजपा यह नाराजगी कैसे दूर कर पाती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने हालिया दौरे के दौरान राज्य को विकास की कई सौगातें देकर गये हैं जिसका भाजपा को फायदा हो सकता है। कांग्रेस नेताओं ने वादा किया है कि यदि उनकी सरकार बनती है तो कैबिनेट की पहली बैठक में पूरे मणिपुर से अफ्स्पा हटाया जायेगा। देखना होगा कि इस वादे का कितना असर जनता पर होता है।

बहरहाल, पाँच राज्यों में अब चूँकि चुनावी बिसात बिछ चुकी है इसलिए पल-पल राजनीतिक घटनाक्रम बदलता रहेगा। देखना होगा कि इन पाँच में से चार राज्यों में सत्तारुढ़ भाजपा क्या फिर से चारों राज्यों की सत्ता हासिल कर पाती है और क्या वाकई पंजाब में प्रभावी उपस्थिति दर्ज करा पाती है। जहां तक कांग्रेस की बात है तो यदि उसने पंजाब की सत्ता खो दी तो गांधी परिवार के खिलाफ जी-23 ग्रुप फिर से खुलकर सामने आ सकता है। इसमें भी कोई दो राय नहीं कि यह चुनाव परिणाम 2024 में होने वाले लोकसभा चुनावों की भी दशा-दिशा तय करेंगे।

आम आदमी की उम्मीदों पर खरा उतरेगा इस बार का बजट ?

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण इन दिनों बेहद व्यस्त हैं। हों भी क्यों न! यही तो समय है जब वह देश का सालाना बजट तैयार करती होती हैं। बजट में क्या हो, इसके लिए वह अर्थशास्त्रियों से तो मशविरा तो करती ही हैं, बिजनेस चैंबर्स, व्यापारी संगठन, चार्टर्ड एकाउंटेंट्स वगैरह से भी बात करती हैं। हैरानी की बात यह है कि जो वर्ग बजट से काफी प्रभावित होता है और जो देश के राजस्व में सबसे दमदार योगदान करता है, उससे कोई बात नहीं की जाती। आज तक किसी भी वित्त मंत्री ने बजट के सिलसिले में देश के मिडल क्लास से बातचीत नहीं की। कोरोना वायरस ने देश की इकॉनमी को तो भारी चोट पहुंचाई ही है, मिडल क्लास को तबाह कर दिया है।

उसकी संख्या में भारी कमी हो गई है। लाखों मिडल क्लास लोग नौकरियों से हाथ धो बैठे, लाखों की सैलरी कम हो गई। उसकी परचेजिंग पावर काफी घट गई। इसका भी नुकसान इकॉनमी को हुआ और उसमें गिरावट आ गई क्योंकि यह खपत पर आधारित इकॉनमी है। यह ऊंचाइयों पर पहुंची भी इसी वजह से थी। जब नरसिंह राव ने इकॉनमी को आजादी दी और लाइसेंस राज का खात्मा कर दिया तो देश में भारी विदेशी निवेश होने लगा। विदेशी कंपनियां बड़ी संख्या में भारत का रुख करने लगीं। इसलिए कि यहां एक विशाल मिडल क्लास है। जो बहुत ही महत्वाकांक्षी है। जो हर नई चीज, नया ब्रैंड खरीदना चाहता है।

जैसे-जैसे इकॉनमी बढ़ी, इस क्लास की संख्या और खरीदारी दोनों ही तेजी से बढ़ी। इसने जीडीपी ग्रोथ को खूब सहारा दिया और हमारी इकॉनमी बन गई दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी। भारत के 25 करोड़ मिडल क्लास को देखकर विदेशी निवेशक भारत आने लगे, लेकिन 2018 से मंदी का एक दौर दिखने लगा और कोरोना काल में तो यह माइनस में ही चला गया। इसका सबसे ज्यादा नुकसान मिडल क्लास को हुआ क्योंकि कंपनियों ने लाखों कर्मचारियों की छंटनी कर दी। और लॉकडाउन के कारण छोटे कारोबारियों, उद्यमियों की तो शामत आ गई। सरकार ने कई राहत पैकेज दिए, लेकिन मिडल क्लास

की तकलीफ दूर करने के लिए कुछ नहीं किया। मुफ्त अनाज से लेकर नकद सहायता तक, सभी दूसरे वर्गों के लिए थे। मिडल क्लास की सुध लेने वाला कोई नहीं था। मिडल क्लास कोई वोट बैंक नहीं होता है। इसलिए किसी भी सरकार ने इसके लिए कभी कोई बड़ा कदम नहीं उठाया। लेकिन यह बात ध्यान देने योग्य है कि इसी क्लास के हाथों में इकॉनमी के ग्रोथ की कुंजी है। इसे तुरंत सहारा चाहिए। वर्ल्ड डेटा की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत के मिडल क्लास का देश की कुल खपत में 70 प्रतिशत योगदान है, जबकि उसकी संख्या देश की कुल आबादी के एक तिहाई से भी कम। पिछले बजट में सरकार ने इसे टैक्स में कोई राहत नहीं दी थी। अब उसकी सख्त जरूरत है। सरकार को इनकम टैक्स की सीमा बढ़ानी चाहिए, जो पिछले कई वर्षों से वहीं की वहीं है। इनकम टैक्स में कटौती की मांग कई वर्षों से हो रही है। इस साल यह और भी मायने रखती है क्योंकि लोगों की परचेजिंग पावर घट गई है। उसकी यह परचेजिंग पावर ही मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर को बढ़ावा देगी, जिससे जीडीपी ग्रोथ बढ़ेगी।

मिडल क्लास की चाहत है कि इनकम टैक्स की न्यूनतम सीमा 2.5 लाख रुपए से बढ़ाकर 5 लाख रुपये तक की जाए। यह बात कई बार उठाई जा चुकी है और इस पर आश्वासन भी मिलते रहे हैं। पिछले बजट में वित्त मंत्री ने एक चोट उन लोगों को पहुंचाई, जो प्रॉविडेंट फंड से पैसे निकालते हैं। उन्होंने 2.5 लाख रुपए ब्याज की रकम से ज्यादा निकालने वालों पर टैक्स लगा दिया था। इतना ही उन्होंने 'यूलिप' (यूनिट-लिंक्ड इंश्योरेंस प्लान) पर भी टैक्स का भार डाल दिया। इससे निवेशकों को धक्का लगा। देश में बचत और निवेश बढ़ाने की बहुत जरूरत है लेकिन यह कदम इसमें रुकावट बन गया। कोरोना काल में लोगों का अस्पताल और इलाज खर्च बढ़ गया है। साथ ही मेडिकल इंश्योरेंस भी महंगा हुआ है। इस पर 18 प्रतिशत जीएसटी है, जिसे कम करने की जरूरत है क्योंकि इस टैक्स के कारण लोग इंश्योरेंस कराने से हिचकते हैं। एक तरफ तो सरकार ने कम इनकम ग्रुप के लोगों के लिए मुफ्त में पांच लाख रुपये तक के इलाज की व्यवस्था कर रखी है, दूसरी तरफ मिडल क्लास के इलाज के रास्ते में भारी टैक्स से बाधा पैदा कर रखी है। इस देश में लगभग 14 करोड़ सीनियर सिटिजन हैं।

आखिर विराट कोहली ने क्यों छोड़ी कप्तानी

विराट कोहली ने कप्तानी छोड़ कर देश को हैरान कर दिया है। दक्षिण अफ्रीका दौरे में टेस्ट सीरीज में पराजय को इसकी पृष्ठ भूमि में रखा जा सकता है। उससे पहले उठे विवाद ने भी कोहली को मानसिक रूप से इसके लिए तैयार किया होगा। विराट के टी-20 प्रारूप की कप्तानी छोड़ने के बाद से ही जिस तरह की खबरें आईं वह मान सम्मान को ठेस पहुंचाने वाली थीं। बीसीसीआई अध्यक्ष सौरव गांगुली और बाद में चयन समिति के अध्यक्ष चेतन शर्मा के बयानों से भ्रम की स्थित बिनी। उन्हें वनडे की कप्तानी से हटा दिया गया। रोहित शर्मा और विराट कोहली के बीच अनबन की रिपोर्ट भी आई। कुल मिला कर देखें तो विराट ने यह निर्णय सोच समझ कर ही किया है। यदि टीम इंडिया दक्षिण अफ्रीका में सीरीज जीत जाती तो स्थित अलग होती। फिर शायद विराट कप्तान बने रहते। मगर, इस हार ने उन्हें निर्णय करने पर विवश कर दिया। वैसे भी पराजय के बाद कप्तान पर ही ठीकरा फूटता है। भारतीय टीम उस टीम से हार गई जिसे कमजोर माना जा रहा था। बल्लेबाजों के खराब प्रदर्शन से टीम हारी है और चूंकि कप्तान विराट भी रन बनाने में नाकाम चल रहे हैं, इसलिए उन पर भी अंगुली उठ रही थी। टेस्ट मैचों में कप्तानी का एक बढ़िया रिकॉर्ड विराट कोहली ने बनाया है। उन्होंने 68 टेस्ट मैचों में कप्तानी की जिसमें से 40 में विजय हासिल हुई। इस नाते उनकी यह उपलब्धि उन्हें सबसे आगे कर देती है। इसमें शक नहीं कि बतौर कप्तान विराट का सफर शानदार रहा है। वह भारत के सबसे सफल टेस्ट कप्तान रहे हैं। उनके नेतृत्व में भारत ने टेस्ट रैंकिंग में नंबर एक स्थान हासिल किया।

विदेशों में भारत को दिलाई जीत

भारतीय टीम की सबसे बड़ी कमजोरी रही है विदेशी मैदानों पर जीत नहीं पाना। मगर, विराट की कप्तानी में टीम ने इस तस्वीर को बदला है। पिछले साल इंग्लैंड को इंग्लैंड में हराया। 2018 में ऑस्टेलिया को उसी की धरती पर हरा कर टेस्ट सीरीज में जीत हासिल की। 2019 में वेस्ट इंडीज को उसी के मैदान पर टेस्ट सीरीज में हराया। दक्षिण अफ्रीका से सीरीज जीतने का सुनहरा मौका इस बार था लेकिन यह अवसर हाथ से फिसल गया। टीम को जूझारू नेतृत्व उन्होंने दिया। मैदान पर विराट के आक्रामक व्यहार की आलोचना होती है लेकिन इसी नाते वह विपक्षी टीम को दबाव में रखते हैं। पहले हमारी टीम कंगारू खिलाड़ियों की फब्तियां सुन कर चुप रह जाती थी

लेकिन विराट उनको उसी भाषा में जवाब देते हैं। ये चीजें बहुत मायने रखती हैं।

लचर बल्लेबाजी से हो रही थी आलोचना

दक्षिण अफ्रीका दौरे में या इससे पहले नवम्बर 2021 में हुए टी-20 विश्व कप में लचर बल्लेबाजी के कारण भारत की हार हुई है। कप्तान विराट कोहली का बल्ला भी काफी दिनों से खामोश चल रहा है। इसे लेकर उनकी आलोचना भी हो रही थी। विराट का पिछला शतक नवम्बर 2019 में बांग्लादेश के खिलाफ कोलकाता टेस्ट में बना था। उसके बाद से किसी भी फार्मेट में उन्होंने शतक नहीं लगाया। कप्तान के अच्छे प्रदर्शन से टीम का मनोबल बढ़ता है। पर, उनकी खराब बल्लेबाजी खेल प्रेमियों को खटकने लगी। चूंकि टीम जीत रही थी इसलिए यह बात ढकी रह गई थी। चेतेश्वर पुजारा और अजिंक्य रहाणे भी लगातार नाकाम हो रहे हैं। उस पर यदि कप्तान का बल्ला भी रूठ जाए तो यह कोढ़ में खाज वाली स्थित हो जाती है। कप्तानी का बोझ हटने के बाद विराट को अब अपनी बल्लेबाजी पर ध्यान देना होगा। अभी चार-पांच साल वह आराम से खेल सकते हैं। अपने अनुभव से नए खिलाड़ियों को लाभान्वित करें। वह भारतीय टीम को जिस मुकाम पर ले गए हैं, उसे बनाए रखना होगा।

विश्व कप नहीं जीत पाने का मलाल

विराट कोहली की कप्तानी में भारत ने आईसीसी का कोई भी विश्व कप नहीं जीता। यह मलाल बना रहेगा पर इसका अफसोस करने का अब कोई फायदा नहीं होगा। अकेले कप्तान के हाथ में सब कुछ नहीं होता। पूरी टीम मेहनत करती है तब नतीजा हासिल होता है। क्रिकेट के खेल में किस्मत का बड़ा योगदान रहता है। जीवन में इनसान की हर ख्वाहिश पूरी नहीं हो पाती। विराट ने कोई कसर नहीं रखी लेकिन भाग्य उनके साथ नहीं था। मजबूत टीम बनाने में कई साल लगते हैं। विराट के योगदान की सराहना करनी चाहिए कि उन्होंने भारतीय टीम को लड़ने के लायक बनाया। कप्तानी से हटाए जाने पर ज्यादा दुख होता लेकिन उन्होंने खुद इस पद को त्याग दिया है इसलिए अब यह प्रकरण बंद हो जाना चाहिए। देश से बड़ा कोई नहीं है। इसी भावना के साथ बीसीसीआई को भी सभी का सम्मान करना चाहिए। भारत की जो टीम दक्षिण अफ्रीका गई थी उसे देख कर हर कोई कह रहा था कि यह टीम टेस्ट सीरीज जीत कर लौटेगी। पर, मेजबान टीम ने बाजी पलट दी। कप्तान डीन एल्गर और तेज गेंदबाज रबादा को छोड़ उनकी टीम में कोई स्थापित खिलाड़ी नहीं था। उनके कई वरिष्ठ खिलाड़ी संन्यास ले चुके हैं। विकेटकीपर क्विंटन डी काक ने पहले टेस्ट के बाद संन्यास ले लिया। ऐसे में भारत के पास सीरीज जीतने का सुनहरा मौका था। हमारे बल्लेबाजों ने काफी निराश किया। ऐसा चुनौती वाला स्कोर नहीं दिया कि गेंदबाज विपक्षी टीम को आउट कर पाते।

इस बार ठंड ने रूलाया

कहते हैं आमतौर पर मुंबई में लोग दिसंबर के महीने में पसीना पोंछते नजर आते थे, लेकिन इस बार मौसम ने ऐसी करवट ली कि नये साल में न्यूनतम तापमान ने पिछले एक दशक का रिकॉर्ड तोड़ दिया। देश की आर्थिक राजधानी में साल की शुरुआत में तापमान 15 से लेकर 13 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुंचा। कहा जा रहा है कि मुंबई वाले इस तापमान के लिये नहीं बने हैं। सोशल मीडिया में मुंबई की ठंड को लेकर खूब फिकरे कसे जा रहे हैं और लोग गर्म कपड़े तलाश रहे हैं। केवल मुंबई के मौसम की तल्खी ही चर्चा में नहीं है, पूरा उत्तर भारत मौसम की करवट से दो-चार रहा। लुढ़कते पारे ने लोगों की तमाम मुश्किलों में इजाफा कर दिया। गरीब को तो मौसम की तल्खी झेलनी ही होती है, लेकिन अबकी बार अमीर भी परेशान हैं। वजह है देश में कोरोना संकट की तीसरी लहर का होना। ठंड लगने से होने वाला सर्दी-जुकाम शक पैदा कर देता है कि कहीं कोरोना की चपेट में तो नहीं आ गये। दरअसल, दोनों के प्रारंभिक लक्षण मिलते-जुलते जो हैं। यूं तो सर्दी में अलाव तापने की तस्वीरें पूरे देश से आती रही हैं लेकिन मुंबई में सार्वजनिक स्थलों में ऐसा दृश्य अनूठा ही कहा जायेगा। दरअसल, मुंबई की ठंड की वजह उत्तर भारत में पड़ी ज्यादा ठंड को बताया जा रहा है, लेकिन महाराष्ट्र में कई जगहों पर बारिश के साथ ओले पड़ने के भी समाचार मिले थे, जिसका प्रभाव मुंबई के तापमान पर पड़ा। लेकिन यह तय है कि देश-दुनिया मौसम में जो अप्रत्याशित उतार-चढ़ाव महसूस कर रही है, उसके मूल में कहीं न कहीं ग्लोबल वार्मिंग का संकट भी है। मौसम के इस तेवर का असर पूरी दुनिया में है। यहां तक कि मध्यपूर्व के रेगिस्तानी इलाकों में बर्फबारी की खबरें आ रही हैं। पाकिस्तान के एक हिल स्टेशन में पिछले दिनों हुई अप्रत्याशित बर्फबारी में 22 लोग कारों में ही दम घुटने से मर गये। निस्संदेह देश के अनेक हिस्सों में ठंड की तल्खी रक्त जमाने वाली है जो कि सामान्य मौसम-चक्र से अलग

है। पहाड़ी राज्यों में हुई अप्रत्याशित बर्फबारी ने मैदानी इलाकों में सामान्य जीवन को भी बाधित किया है। वह भी जब कोरोना का नया वेरिएंट ओमीक्रोन देश में लाखों लोगों को रोज अपनी चपेट में ले रहा है, ऐसे में मौसम की तल्खी ने दोहरी चिंता बढ़ा दी है। यूं तो ठंड और बारिश इस मौसम में सामान्य बात है लेकिन इसकी तीव्रता परेशान करने वाली है, जिसने उत्तर भारत के राज्यों में तापमान में अप्रत्याशित कमी की है। मौसम विज्ञानी बता रहे हैं कि मौसम की तल्खी की एक वजह पश्चिमी विक्षोभ भी है, जिससे उत्तर-पश्चिमी भारत में अधिक बारिश हुई और पारा लुढ़का। इसके मूल में अरब सागर के ऊपर अधिक नमी के क्षेत्र का विकसित होना रहा। इस हवा के मध्य भारत की ओर उन्मुख होने से बारिश की स्थितियां बनी हैं। जब ये हवायें हिमालयी राज्यों से चलीं तो मैदानी इलाकों में ठंड का प्रकोप बढ़ा है, जिसके अनुकूल लोगों को खुद को ढालने में परेशानी का सामना करना पड़ा है। इस संकट का सबसे ज्यादा शिकार समाज का वंचित तबका ही होता है, जिसके नसीब में छत तक नहीं है। हाशिये के लोगों को राहत देने की बातें तो सरकारें करती हैं, लेकिन हकीकत में इन्हें किस सीमा तक मदद मिलती है यह एक यक्ष प्रश्न है। खासकर यह स्थिति तब विकट हो जाती है जब देश एक महामारी के दौर में हो। देश में चुनाव केंद्रित राजनीति के शोर में समाज का वंचित वर्ग भगवान भरोसे ही नजर आता है। हाल-फिलहाल ठंड से जल्दी राहत मिलने की भी संभावना नजर नहीं आती। ऐसे में समाज के संपन्न तबके व स्वयं सेवी संस्थाओं का भी दायित्व बनता है कि मौसम की तल्खी झेलने वाले वंचित समाज की मदद को आगे आयें। स्थानीय प्रशासन की भी जिम्मेदारी है कि बेघरों के लिये बनाये गये रैन बसेरों में रहने व खाने की पर्याप्त व्यवस्था हो। महामारी के दौर में यह चुनौती बड़ी है।

आखिर क्यों बदल रहा पृथ्वी का तापमान

बे मौसम बरसात, तापमान का तेज हो जाना तो कभी कड़कड़ाने वाली ठंड देश के नागरिकों को प्रतिवर्ष झेलनी पड़ती है। सीधे कहें तो किसी भी नागरिक की निजी जिंदगी के हिस्से में पर्यावरण अहम किरदार निभाता है। दुनियाभर के देशों के नागरिक जब ईंधन की खपत ज्यादा करेंगे तो पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा ही। पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा तो उससे क्लाइमेट चेंज का खतरा बढ़ना स्वाभाविक है। पर्यावरण पर हमारी समझ लगातार कम होती जा रही है। या हम तब समझना शुरू करते हैं जब मुसीबत पास खड़ी हो जाती है। मीडिया की रिपोर्ट्स में भी पर्यावरण से जुड़े मुद्दे औसत से कम ही पढ़ने और देखने को मिलते हैं। ऐसे में नागरिकों को जागरूकता की कमी महसूस होती है। इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि स्कूल कॉलेज में पर्यावरण अनिवार्य विषय के रूप में होते हुए भी हम पर्यावरण पर इतने नकारात्मक रवैये के साथ जीवन क्यों कर रहे हैं? हीरे की चाहत में बक्सवाहा के जंगलों को खत्म करने का विरोध कितने नागरिकों ने किया होगा? यह सवाल स्वयं से पूछना चाहिए। नर्मदा बचाओ अभियान की जमीनी हकीकत को उदाहरण स्वरूप ले तो पता चलता है कि प्राइवेट कंपनियां अपने निजी फायदे के लिए बड़े वादे तो कर देती हैं लेकिन उन्हें पूरा करने में सदियां बीत जाती हैं। पर्यावरण बचाओ की जरूरत इस सदी में सबसे ज्यादा महसूस की जा रही है। पृथ्वी का तापमान बढ़ने के कई कारण हैं जिनमें से एक है कोयले की खपत का ज्यादा होना। 1992 में पृथ्वी के इसी बढ़ते तापमान को लेकर यूनाइटेड नेशंस फ्रेमवर्क कन्वेंशन ऑन क्लाइमेट चेंज यानी यूएनएफसीसीसी ने जिस मुहिम की शुरुआत की उसके निष्कर्ष अभी दूर की कौड़ी मालूम देते हैं। दुनिया के 197 देशों के सहयोग से यूएनएफसीसीसी पृथ्वी के तापमान को 2 डिग्री सेल्सियस से कम रखने के उद्देश्य को पूरा करने की कोशिश में हर साल 1995 से लेकर अब तक बैठक करता आ रहा है। लेकिन उसके नतीजे क्या निकले ये दुनिया से छिपा नहीं है। 1995 में जर्मनी से संगठन द्वारा शुरू हुए सम्मेलन की 26 वीं बैठक स्कॉटलैंड में हाल ही में हुई थी। जिसे सीओपी26 के नाम से जाना गया। इस बैठक की थीम मेक अ प्लान फॉर अवर फ्यूचर नेट जीरो 2050 था। यानी जितना कार्बन डाइऑक्साइड का उत्सर्जन कोई देश करेगा उतना ही उसे सोख लेने पर जोर देगा। नेट जीरो कर देगा। दुनियाभर की निगाहें इस सम्मेलन पर रही थी। लेकिन दुनिया के तीन देश छ्हक्क 26 का हिस्सा नहीं रहे। चीन, रूस और तुर्की। चीन और रूस 2060 तक अपने देश को नेट जीरो करने की बात कह रहे हैं। वहीं भारत इस लक्ष्य को 2070 तक पूरा करने की बात कह रहा है। ऐसे में दूसरा पहलू यह भी है कि दुनियाभर में कार्बन सिंक का विस्तार कितना हो रहा है?

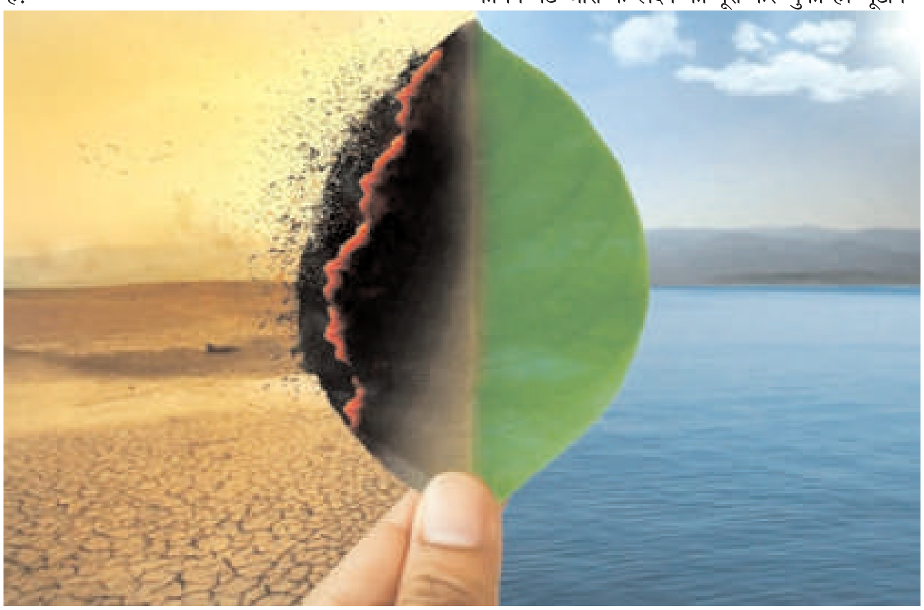

जो सवाल इन शिखर सम्मेलनों में उठाए जाते हैं उनके क्रियान्वयन पर कितना जोर होता है? कौन सा देश पृथ्वी के तापमान को लेकर कितना चिंतित है? ये सवाल मीडिया के मुख्य पृष्ठ पर जब तक नहीं आएंगे हल निकालना मुश्किल है? कार्बन सिंक ऐसे स्थान को कहा जाता है, जो कार्बन डाइऑक्साइड को सबसे ज्यादा सोखते हैं। कार्बन के उत्सर्जन को कम करना मुश्किल तो है लेकिन 1991 के बाद से जिस तरह दुनियाभर ने तकनीकी विकास के क्रम में इंडस्ट्री खोली है उसका असर दुनियाभर के समुद्रों में भी पड़ा है। माना जाता है कि ये समुद्र लगभग 30 सालों से कार्बन को सोखते रहे हैं। लेकिन अब ये भी जवाब दे चुके हैं। वहीं दूसरी तरफ कार्बन के नेट जीरो करने के क्रम में जंगलों की भूमिका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। लेकिन दुनिया भर के जंगलों को जिस तरह नष्ट किया जा रहा है उससे इस लक्ष्य को इनके सहारे भी पूरा करना मुश्किल है। पृथ्वी का फेफड़ा कहे जाने वाले ब्राजील के जंगलों को ही उदाहरण स्वरूप देखे तो पाएंगे कि दुनिया का 20 प्रतिशत ऑक्सीजन यहीं से आता है। इसे कार्बन सिंक में सर्वश्रेष्ठ स्थान में रखा जाता है। वहीं दूसरी तरफ सूरीनाम जैसा देश अब कार्बन सिंक के साथ-साथ कार्बन नेट जीरो के लक्ष्य को पूरा कर चुका है। भूटान इस दिशा में दुनिया का सर्वोत्तम देश माना जा सकता है। कार्बन निगेटिव होने के साथ-साथ पड़ोसी देश चीन नेपाल और भारत का भी कार्बन सोखने की दिशा में काम करता हुआ दिखता है। दुनिया के उन देशों जिनमें अमेरिका 27 प्रतिशत, चीन 14 प्रतिशत, और भारत 7 प्रतिशत कार्बन का उत्सर्जन करते हैं, उन्हें इस मॉडल से सीख लेनी चाहिए। कम से कम इन देशों को भूटान की तरक्की में मानवीय आधार पर तो मदद कर ही देनी चाहिए। लेकिन चीन भूटान को किस कदर निगलना चाहता है ये किसी से छिपा नहीं है। भारत चाह कर भी भूटान को हल्के में नहीं ले सकता क्योंकि चीन की चाल उसे परेशान कर सकती है। विकसित देशों ने अपने विकास के लिए जितना चाहा उतना इंडस्ट्री में बिना नियम कायदों से काम किया।

आखिर वीवीआईपी की सुरक्षा में चूक दर चूक पर उठते सवालों का जवाब कौन देगा?

पीएम मोदी की सुरक्षा में हुई चूक के बाद बीजेपी और कांग्रेस के नेताओं के बीच हुए वाद-विवाद से जाहिर है कि हमारे नेताओं ने इससे पहले भी हुई ऐसी ही चूक की कई घटनाएं, जिनमें शहीद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से लेकर मौजूदा राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद तक शामिल हैं।जिस देश में राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्रों की वजह से दो-दो प्रधानमंत्रियों की नृशंस हत्याएं हो चुकी हों, एक प्रधानमंत्री की विदेश में हुई मौत सवालों के घेरे में हो, कतिपय मुख्यमंत्री और मंत्रियों की भी हत्याएं हो चुकी हों, वहां पर वीवीआईपी की सुरक्षा व्यवस्था में सामने आ रही चूक दर चूक की घटनाओं को इतने हल्के में नहीं लिया जा सकता, जितने कि इसे हल्के में लेने के लिए हमारे नेता और प्रशासनिक अधिकारी आदी हो चुके हैं।

वहीं, सर्वोच्च न्यायालय को भी पीएम नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में हुई ताजा चूक की घटना पर स्वतः संज्ञान लेना चाहिए, क्योंकि उसके कतिपय निर्णय ने केंद्र सरकार के हाथ बांध दिए हैं, जिससे वह अक्षम राज्य सरकार पर भी ठोस कार्रवाई करने से महज इसलिए हिचकती है कि कहीं न्यायालय उसके फैसले को पलट नहीं दे। जी हां, हमारा इशारा किसी भी लापरवाह राज्य में तत्काल राष्ट्रपति शासन लागू करने के केंद्र सरकार के फैसले कि न्यायिक समीक्षा से है, जिससे प्रतिपक्ष शासित राज्य सरकारें अब बेखौफ हो चुकी हैं!

इसलिए वीवीआईपी की सुरक्षा में चूक समेत जनहित से जुड़ी गम्भीर लापरवाही के प्रकाश में आने के बाद न्यायालय यदि त्वरित संज्ञान लेना शुरू कर दे, तो सियासत परस्त प्रशासनिक अधिकारियों की मनमर्जी पर जहां रोक लगेगी, वहीं भारतीय प्रशासनिक व्यवस्था के सुचारू रूप से चलते रहने में भी आशातीत मदद मिलेगी। क्योंकि भारतीय प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारी हों या राज्य प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारी, जब वे दलगत प्रतिबद्धताओं से जुड़कर निर्णय लेते अथवा टालते रहते हैं तो न केवल व्यापक जनहित प्रभावित होता है, बल्कि प्रशासनिक प्रतिष्ठा और उसकी जनसाख पर आंच आती है। जो किसी भी स्वस्थ लोकतांत्रिक परम्परा की मूल भावना के खिलाफ भी है।

बुद्धवार को पंजाब में पीएम मोदी की सुरक्षा में हुई चूक के बाद बीजेपी और कांग्रेस के नेताओं के बीच हुए वाद-विवाद से जाहिर है कि हमारे नेताओं ने इससे पहले भी हुई ऐसी ही चूक की कई घटनाएं, जिनमें शहीद प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से लेकर मौजूदा राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद तक शामिल हैं और अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी इस अहम कड़ी का हिस्सा बन चुके हैं, से कोई सबक नहीं सीखी है। इस बार भी हमारे अधिकारीगण अपनी प्रशासनिक औपचारिकताएं पूरी कर लेंगे। लेकिन वीवीआईपी की सुरक्षा में चूक दर चूक पर उठते सवालों का कोई माकूल जवाब नहीं मिल पाएगा, पिछली दर्जनाधिक घटनाओं की तरह। इसलिए मेरी स्पष्ट राय है कि इन तमाम लापरवाहियों पर न्यायालय स्वतः संज्ञान ले, ताकि जंग खाये जा रहे इस सिस्टम को दुरुस्त किया जा सके।

आंकड़े इस बात की चुगली कर रहे हैं कि पीएम नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में हुई ताजा चूक से पहले भी वीवीआईपी की सुरक्षा में चूक कई अन्य घटनाएं भी हुई हैं, जिसमें मौजूदा राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद से लेकर पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी समेत कई दिग्गज राजनेता शामिल हैं। इसलिए हम आपकी स्मृतियों को तरोताजा करने के लिए यहां बता रहे हैं कि ऐसी लापरवाही भरी घटनाएं कब-कब हुई हैं।

पहली, भाजपाई प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी बुद्धवार को जब बठिंडा, पंजाब से सड़क मार्ग से हुसैनीवाला शहीद स्मारक जा रहे थे तो उनका काफिला एक फ्लाईओवर पर जाम में फंस गया और तकरीबन 20 मिनट तक पीएम यहां फंसे रहे। जिसके बाद आनन-फानन में उनका काफिला वापस लौट गया। प्रथम दृष्टया पंजाब के मुख्य सचिव और पुलिस महानिदेशक इस चूक के लिए नैतिक रूप से जिम्मेदार बनते हैं तो अंततोगत्वा वहां के मुख्यमंत्री तक जाती है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इनलोगों से इस बाबत न केवल पूछा है, बल्कि जिम्मेदारी तय करने की भी बात कही है।

दूसरी, लगभग दो माह पूर्व नवंबर 2021 में एनडीए के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद की सुरक्षा में चूक का मामला भी सामने आया था। तब राष्ट्रपति कोविंद अपने गृह जनपद कानपुर, उत्तरप्रदेश के दौरे पर थे और उनके पूरे दिन के कामकाज की जानकारी सोशल मीडिया पर लीक हो गई थी, जिससे उनकी जान को खतरा हो सकता था।

तीसरी, निवर्तमान कांग्रेसी प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की सुरक्षा में भी बड़ी चूक मामला वर्ष 2007 में सामने आया था, जब तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह रूस के दौरे पर निकले थे। बताया जाता है कि तब उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त होने से बाल-बाल बचा था, क्योंकि उस वक्त उनके विमान के पायलटों ने लैंडिंग के लिए जरूरी लैंडिंग गियर को नीचे नहीं किया था। जिसके बाद मॉस्को एटीसी ने इस बात की जानकारी केबिन क्रू मेंबर्स को दी, जिसके बाद जाकर विमान के पहियों को नीचा किया गया। समझा जाता है कि यदि ऐसा नहीं किया गया होता तो विमान लैंडिंग के वक्त दर्दनाक हादसा हो सकता था। बता दें कि तत्कालीन प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री की मौत भी ताशकंद (रूस) में हो चुकी थी, इसलिए 2007 में यदि कोई अनहोनी हो गई होती, तो यह उसपर मढ़ा जाने वाले दूसरा कलंक होता, जो कि उसकी सक्रियता के कारण टल गया।

कई अच्छी-बुरी यादें देकर विदा हो रहा है 2021, 2022 से पूरी दुनिया को हैं बड़ी उम्मीदें

देश में विकास का पहिया तेजी से बढ़ा। नेशनल हाई-वे के किनारे युद्धक विमानों के आपातकाल के प्रयोग के लिए हवाई पट्टी भी मिली। डेढ़ साल की चीन से तनातनी के बीच देश ने अपने युद्ध क्षमता का विकास किया। अपने को आने वाले हालात के अनुरूप ढालने के जतन हुए। 2021 विदा हुआ 2022 में हमें बड़ी उम्मीदें हैं। 2021 ये साल दहशत से लड़ने और जीवट से जीने का साल रहा। मौत को सबने बहुत नजदीक से देखा। इस अजीब तरह की जंग में चौकसी बरतने वाले बचे रहे। कोरोना महामारी बनकर आया। इसमें रिश्ते-नाते एक तरह से खत्म कर दिए। जो बीमार हुए उसके पास अपने भी नहीं फटके। मां-बाप बेटे के पास नहीं गए। बेटा-बेटी मां बाप से बचे। अधिकतर को अपनीङ्कअपनी पड़ी थी। बुजुर्गों से सुनते थे कि कभी ऐसा प्लेग फैलने में देखने में आया था। हमने भी इसे देख लिया। अंतिम संस्कार की रस्म भी जैसे-तैसे पूरी हुई। जहां आपदा का लाभ उठाने वाले मिले, वहीं खुले हाथों मदद करने वाले भी बहुत नजर आए। चिकित्सीय स्टाफ तो सदा की तरह आगे रहा ही। पहली बार पुलिस का नया चेहरा दिखाई दिया। उसमें मानवीयता की झलक मिली। हां देहात में रिश्ते नहीं दरके।

जब कोरोना आया था, तो हमारे पास स्वास्थ्य सेवाएं नाकाफी थीं। इसी कारण कोरोना के दूसरे फेज में मौत बढ़ी। अस्पतालों में बैड नहीं मिले। मरीज और उनके तीमारदार ऑक्सीजन के लिए मारे-मारे फिरे। इस क्षेत्र में भी हमने बड़ी उपलब्धि हासिल की। लगभग प्रत्येक जनपद में आज कोरोना की टैंस्टिंग लैब बन गई तो सरकारी अस्पतालों में ऑक्सीजन युक्त बैड बढ़े। हर जिले पर सरकारी मैडिकल

कॉलेज खोलने पर काम हुआ। इससे पांच-छह साल बाद हमारे पास चिकित्सकों की कमी नहीं रहेगी। चिकित्सा का मजबूत ढांचा विकसित होगा।

चीन से तनातनी को देख लगता रहा कि हमें युद्ध भी झेलना होगा। पूरे साल दोनों देश की सेनाएं आमने-सामने रहीं। पर सब शांत रहा। सब ठीक रहा। आतंकवाद से चल रही लड़ाई का देश ने जमकर मुकाबला किया। मुंबई और संसद जैसे हमलों से देश दूर रहा। जाते-जाते ये साल सीडीएस बिपिन रावत के हैलिकाप्टर दुर्घटना का बड़ा घाव देश को दे गया। इससे उबरने में देश को समय लगेगा। अफगानिस्तान में तालिबान के आने के बाद लगा था कि वहां हमारे द्वारा कराया विकास खत्म हो जाएगा। पाकिस्तान सोचता रहा कि तालिबान उसके इशारों पर नाचेगा। देश के नेतृत्व ने वहां से अपने नागरिकों को सुरक्षित ही नहीं निकाला, अपनी विदेश नीति की बदौलत फिर से अपने संबंध संवारने का काम किया।

देश में विकास का पहिया तेजी से बढ़ा। नेशनल हाई-वे के किनारे युद्धक विमानों के आपातकाल के प्रयोग के लिए हवाई पट्टी भी मिली। डेढ़ साल की चीन से तनातनी के बीच देश ने अपने युद्ध क्षमता का विकास किया। अपने को आने वाले हालात के अनुरूप ढालने के जतन हुए। आज हम बैलेस्टिक मिसाइल तक विकसित कर रहे हैं। सेना को आधुनिक बनाने के प्रयास जारी हैं। एक्सप्रेस-वे बन रहे हैं। हालात ऐसे ही हैं जैसे 2021 के आगमन पर थे। कोरोना की तीसरी लहर दस्तक दे चुकी है। केस फिर से बढ़ने लगे हैं। लापरवाही कम नहीं हो रही। पुराना दुश्मन पाकिस्तान अपनी हरकत से बाज नहीं आ रहा। चीन की फौज सीमा पर तनी खड़ी है। देश में बहुत से विभीषण मौजूद हैं। भाजपा राम मंदिर, काशी को संवारने में लगी थी। अब उसे मथुरा और वृंदावन याद आने लगे हैं। पिछले कुछ सालों में देश की राजनीति से मजबूत विपक्ष गायब हो गया। विपक्ष का कमजोर होना लोकतंत्र के लिए हानिकारक है। पर समय अपनी व्यवस्था खुद बना लेता है। किसान आंदोलन इसका सही उदाहरण है। हम भारतीय आशावादी हैं। विपरीत परिस्थिति में भी निराश नहीं होते। आशा करते हैं कि नया साल नई भोर के साथ नए सुख, सुविधा, संकट से निपटने के रास्ते लेकर आएगा। इस साल में जीवन को सरल ढंग से जीने की दिशा में और काम होंगे।

भारत को विश्व गुरु और हिंदी को विश्व भाषा कैसे बनाया जा सकता है?

विश्व हिंदी दिवस और प्रवासी भारतीय दिवस, ये दोनों इतने महत्वपूर्ण दिवस हैं कि इन्हें भारत की जनता और सरकारें यदि पूरे मनोयोग से मनाएं तो अगले कुछ ही वर्षों में भारत सांस्कृतिक और आर्थिक दृष्टि से विश्व की महाशक्ति बन सकता है। जो लोग भारत को विश्व गुरु बना हुआ देखना चाहते हैं, उनकी जिम्मेदारी तो और भी ज्यादा है। विश्व हिंदी दिवस 10 जनवरी को था और प्रवासी भारतीय दिवस 9 जनवरी को। ये दोनों दिवस साथ-साथ आते हैं लेकिन इस वर्ष इन दिवसों पर भारत में धूम मचना तो दूर, पत्ता भी नहीं खड़का। कोरोना की महामारी में सावधानी जरूरी है लेकिन इसी दौरान 'झूम' पर झूम-झूमकर रैलियां हुईं, संगोष्ठियां हुईं, कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन हुए लेकिन इन दोनों महत्वपूर्ण दिवसों को हमारे प्रचारतंत्र, नेताओं और समाजसेवियों ने याद तक नहीं किया।

विश्व हिंदी-दिवस पहली बार 1975 की 10 जनवरी को नागपुर में आयोजित हुआ था। प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने इसका उद्घाटन किया था। कई देशों के हिंदीप्रेमी उसमें शामिल हुए थे। अब तक लगभग दर्जन भर विभिन्न देशों में ये सम्मेलन हो चुके हैं लेकिन इसकी ठोस उपलब्धियां क्या हैं? हिंदी की बैलगाड़ी आज भी वहीं खड़ी है, जहां वह अब से 46 साल पहले खड़ी थी। क्या हिंदी किसी विश्व-मंच पर आज तक प्रतिष्ठित हुई? क्या संयुक्त राष्ट्र संघ की छह आधिकारिक भाषाओं में वह आज तक शामिल हो पाई? भारत तो 54 देशों के राष्ट्रकुल का सबसे बड़ा देश है। क्या कभी राष्ट्रकुल में हिंदी की प्रतिष्ठा हुई? जिन राष्ट्रों में हमारे भारतीय लोग बहुसंख्यक हैं, क्या वहां हिंदी को राष्ट्रभाषा का दर्जा मिला? क्या वहां छात्रों को अनिवार्य रूप से हिंदी पढ़ाई जाती है? क्या कोई भी विषय की पढ़ाई का माध्यम वहां हिंदी है?

मान लें कि मैंने ऊपर जो काम बताए हैं, वे काम सरकारों के हैं लेकिन क्या जनता ने भी हिंदी को विश्व-भाषा का दर्जा दिलाने के लिए कोई ठोस कदम उठाए? हम भारतीय लोग और खास तौर से हम हिंदीभाषी लोग ही अपने महत्वपूर्ण अधिकारिक काम हिंदी में नहीं करते तो विदेशों में रहने वाले भारतीयों को दोष क्यों दें? हिंदीभाषी लोग अपने हस्ताक्षर तक हिंदी में नहीं करते। वे अपने खातों और कानूनी दस्तावेजों पर अंग्रेजी में दस्तखत करते हैं जबकि स्वभाषा में हस्ताक्षर करने को कोई ताकत नहीं रोक सकती। विदेशों में रहने वाले भारतीय नागरिक यदि अपने हस्ताक्षर हिंदी में करने लगें तो उनकी अलग पहचान बनेगी और वे जानेंगे कि भारत की भाषा हिंदी है, जो विश्व-भाषा बनने के योग्य है। पिछले 50-55 साल में मैं लगभग 80 देशों में गया हूं। मेरे किसी भी पारपत्र (पासपोर्ट) पर दस्तखत अंग्रेजी में नहीं हैं। किसी भी विदेशी बैंक ने मेरे हिंदी हस्ताक्षर वाले चेक को अस्वीकार नहीं किया है।

यह संतोष का विषय हो सकता है कि आजकल दुनिया के दर्जनों विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ाई जाने लगी है लेकिन कुछ अपवादों को छोड़कर विदेशी लोगों को उनकी सरकारों द्वारा हिंदी इसलिए पढ़ाई जाती है कि उन्हें या तो भारत के साथ कूटनीति या जासूसी के काम में लगाना होता है। हमारे कुछ भारतीय हिंदीप्रेमी मित्रों के प्रयत्नों से कुछ देशों में हिंदी पाठशालाएं खोली गई हैं, यह सराहनीय कदम है।

यदि हिंदी को विश्व-भाषा बनना है तो उसे अभी कई सीढ़ियां चढ़नी होंगी लेकिन सबसे पहले उसे संयुक्त राष्ट्र की एक आधिकारिक भाषा बनना होगा। इस समय छह आधिकारिक भाषाएं हैं- अंग्रेजी, फ्रांसीसी, चीनी, रूसी, हिस्पानी और अरबी ! इनमें से एक भी भाषा ऐसी नहीं है, जिसके बोलने वालों की संख्या दुनिया के हिंदीभाषियों से ज्यादा है। अंग्रेजी दुनिया के बस चार-पांच देशों की ही भाषा है। इसे अंग्रेजों के पूर्व गुलाम देशों के दो से पांच प्रतिशत लोग इस्तेमाल करते हैं। जहां तक चीनी भाषा का सवाल है, उसके आधिकारिक मंडारिन भाषाभाषियों की संख्या भी हिंदीभाषियों से कम है। यह तथ्य मुझे चीन के शहरों और गांवों में दर्जनों बार घूमने से मालूम पड़ा है। हिंदी को इन सभी भाषाओं के पहले संयुक्त राष्ट्र की भाषा होना चाहिए था लेकिन जिस भाषा को हमने भारत में ही नौकरानी बना रखा है, वह विश्व मंच पर महारानियों के साथ कैसे बैठ सकती है? बस, यहां संतोष की बात यही है कि अटलजी और मोदीजी, दो ऐसे प्रधानमंत्री हुए हैं, जिन्होंने अपने भाषण वहां हिंदी में दिए। 1999 में भारतीय प्रतिनिधि के तौर पर मैंने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देना चाहा तो मालूम पड़ा कि उस समय उसके

अनुवाद की ही कोई व्यवस्था नहीं थी।

संस्कृत की पुत्री होने और दर्जनों एशियाई भाषाओं का संगम होने के कारण हिंदी का शब्द भंडार दुनिया की किसी भी भाषा से बहुत बड़ा है। यदि वह संयुक्त राष्ट्र की भाषा बन जाए तो वह विश्व की सभी भाषाओं को कृतार्थ कर सकती है। इससे भारत में चल रही अंग्रेजी की गुलामी भी घटेगी और हमारी अंतरराष्ट्रीय कूटनीति और व्यापार में भी चार चांद लग जाएंगे। इस समय विदेशों में प्रवासी भारतीयों की संख्या लगभग सवा तीन करोड़ है। दुनिया के ज्यादातर देशों की आबादी भी इतनी नहीं है। अब से 50-55 साल पहले मैं जब न्यूयार्क में पढ़ता था तो किसी से हिंदी में बात करने के लिए मैं तरस जाता था लेकिन अब हाल यह है कि जब भी मैं दुबई जाता हूं तो लगता है कि छोटे-मोटे भारत में ही आ गया हूं। आज दुनिया के सभी प्रमुख देशों में प्रवासी भारतीय प्रभावशाली पदों पर हैं और कुछ देशों में तो वे राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री और सांसद हैं। उनमें जातीय, धार्मिक और भाषिक कट्टरता भी बहुत कम है। वे औसतन विदेशियों से अधिक संपन्न भी हैं। उन्होंने इस साल भारत को साढ़े छह लाख करोड़ रु. भेजे हैं।

ज्योति का विलय

सन् 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध की प्रतीक अमर जवान ज्योति ज्वाला को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक की ज्वाला से मिला दिया गया है। सरकार का मानना था कि इंडिया गेट पर जिन शहीदों-वीरों के नाम हैं, उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध और एंग्लो-अफगान युद्ध में अंग्रेजों के पक्ष में लड़ाई लड़ी थी, जबकि अमर जवान ज्योति बांग्लादेश की मुक्ति के लिए शहीद हुए वीरों की याद में है, अत- दोनों अलग-अलग हैं। इस लिहाज से औपनिवेशक काल के प्रतीक इंडिया गेट को स्वतंत्र रहने देना चाहिए और अमर जवान ज्योति को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में लाना एक लिहाज से सरकार का तर्कपूर्ण फैसला है। फिर भी अमर जवान ज्योति इंडिया गेट की पहचान रही है। इंडिया गेट के बीच अनवरत लगभग 50 वर्षों से यह ज्योति प्रज्वलित थी, जिसे देखकर शहादत की भव्यता और गर्व की अनुभूति होती थी। कम से कम तीन पीढ़ियां ऐसी बीती हैं, जिनके लिए इंडिया गेट के साथ अमर जवान ज्योति के दर्शन का विशेष महत्व था।

अ राजधानी दिल्ली में इंडिया गेट पर नेताजी सुभाष चंद्र बोस की ग्रेनाइट से बनी भव्य प्रतिमा स्थापित की जाएगी. इस बात की जानकारी खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दी है. पीएम मोदी ने ट्वीट करके कहा है, ऐसे समय में जब पूरा देश नेताजी सुभाष चंद्र बोस की 125वीं जयंती मना रहा है, मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि ग्रेनाइट से बनी उनकी भव्य प्रतिमा इंडिया गेट पर स्थापित की जाएगी. उन्होंने आगे कहा, जब तक नेताजी बोस की भव्य प्रतिमा पूरी नहीं हो जाती, तब तक उनकी होलोग्राम प्रतिमा उसी स्थान पर मौजूद रहेगी. मैं नेताजी की जयंती 23 जनवरी को होलोग्राम प्रतिमा का अनावरण करूंगा.अब हमारी शान का एक प्रतीक इंडिया गेट तो वहां रहेगा, लेकिन ज्योति के दर्शन वहां नहीं, वहां से 400 मीटर दूर राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में होंगे। सरकार के इस निर्णय पर बड़ी संख्या में पूर्व सैनिकों ने खुशी जताई है। आमतौर पर यही यथोचित है कि दिल्ली में एक ही स्थान पर ऐसी शहादत को समर्पित ज्योति रखी जाए। शहीदों के सम्मान में जब राष्ट्रीय युद्ध स्मारक में ज्योति जलाई गई थी, तभी से भी इंडिया गेट की अमर जवान ज्योति पर चर्चा हो रही थी। यह संभव था कि राष्ट्रीय युद्धस्मारक का वजूद अलग रहता और इंडिया गेट पर पचास वर्षों से प्रज्वलित ज्योति को यथावत रहने दिया जाता। खैर, यह सरकार का फैसला है और देश के शहीदों, वीरों के सम्मान पर

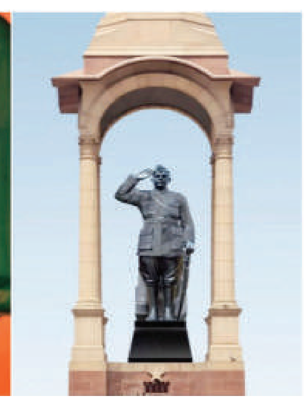

किसी तरह के विवाद की कोई गुंजाइश नहीं रहनी चाहिए। यदि सेना को भी यही लगता है कि राष्ट्रीय युद्ध स्मारक ही एकमात्र स्थान है, जहां वीरों को सम्मानित किया जाना चाहिए, तो इस फैसले और स्थानांतरण का स्वागत है। इधर, सरकार ने एक और फैसला लिया है कि इंडिया गेट के पास नेताजी सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा स्थापित होगी। यह फैसला भी अपने आप में बड़ा है। अभी तक वहां किसी प्रतिमा के लिए कोई जगह नहीं थी, अब अगर जगह निकल रही है, तो आने वाली सरकारों को संयम का परिचय देना पड़ेगा। अलग-अलग सरकारों के अपने-अपने आदर्श रहे हैं और अलग-अलग सरकारों द्वारा अलग-अलग प्रकार के स्मारक बनाने का रिवाज भी रहा है। यही विचार की मूल वजह है। स्मारकों और प्रतिमाओं का सिलसिला सभ्य और तार्किक होना चाहिए। इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे स्मारक देशवासियों को प्रेरित करते हैं और इससे देश को मजबूती मिलती है, लेकिन तब भी हमें राष्ट्रीय महत्व के कुछ स्मारकों को उनके मूल स्वरूप में ही छोड़ देने पर अवश्य विचार करना चाहिए। अब यह इतिहास है कि तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने 26 जनवरी, 1972 को अमर जवान ज्योति का उद्घाटन किया था और यह भी इतिहास है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 25 फरवरी, 2019 को राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का उद्घाटन किया, जहां अब तक शहीद हुए देश के 25,942 सैनिकों के नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं। अब अमर जवान ज्योति के आगमन से राष्ट्रीय युद्ध स्मारक का महत्व बहुत बढ़ गया है और बेशक, इससे राष्ट्रभक्ति और राष्ट्र सेवा को बल मिलेगा।

सुभाष चंद्र बोस जैसे क्रान्तिकारी नेता विरले ही होते हैं

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। उनके द्वारा दिया गया जय हिन्द का नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है। तुम मुझे खून दो मैं तुम्हे आजादी दूंगा का नारा भी उस समय अत्यधिक प्रचलन में आया। दूसरे विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ लड़ने के लिये, उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिन्द फौज का गठन किया था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 को उड़ीसा में कटक के एक संपन्न बंगाली परिवार में हुआ था। बोस के पिता का नाम जानकीनाथ बोस और मां का नाम प्रभावती था। जानकीनाथ बोस कटक शहर के मशहूर वकील थे। प्रभावती और जानकीनाथ बोस की कुल मिलाकर 14 संतानें थीं, जिसमें 6 बेटियां और 8 बेटे थे। सुभाष चंद्र उनकी नौवीं संतान और पांचवें बेटे थे। नेताजी की प्रारंभिक पढ़ाई कटक के रेवेंशॉव कॉलेजिएट स्कूल में हुई। तत्पश्चात् उनकी शिक्षा कलकत्ता के प्रेजिडेंसी कॉलेज और स्कॉटिश चर्च कॉलेज से हुई। बाद में भारतीय प्रशासनिक सेवा की तैयारी के लिए उनके माता-पिता ने बोस को इंग्लैंड के केंब्रिज विश्वविद्यालय भेज दिया। उन्होंने सिविल सर्विस की परीक्षा में चौथा स्थान प्राप्त किया।

1921 में भारत में बढ़ती राजनीतिक गतिविधियों का समाचार पाकर बोस सिविल सर्विस छोड़ कर कांग्रेस के साथ जुड़ गए। सुभाष चंद्र बोस बहुत जल्द ही देश के एक महत्वपूर्ण युवा नेता बन गये। 1928 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झण्डे दिखाये। कोलकाता में सुभाष ने इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। साइमन कमीशन को जवाब देने के लिये कांग्रेस ने भारत का भावी संविधान बनाने का काम आठ सदस्यीय आयोग को सौंपा। मोतीलाल नेहरू इस आयोग के अध्यक्ष और सुभाष उसके एक सदस्य थे। 1928 में कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में कोलकाता में हुआ। इस अधिवेशन में सुभाष ने खाकी गणवेश धारण करके मोतीलाल नेहरू को सैन्य तरीके से सलामी दी।

26 जनवरी 1931 को कोलकाता में राष्ट्र ध्वज फहराकर सुभाष एक विशाल मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे तभी पुलिस ने उन पर लाठी चलायी और उन्हें घायल कर जेल भेज दिया। जब सुभाष बोस जेल में थे तब गांधी जी ने अंग्रेज सरकार से समझौता किया और सब कैदियों को रिहा करवा दिया। लेकिन अंग्रेज सरकार ने भगत सिंह जैसे क्रान्तिकारियों को रिहा करने से साफ इन्कार कर दिया। भगत सिंह की फांसी माफ कराने के लिये गांधी जी ने सरकार से बात तो की परन्तु नरमी के साथ। सुभाष चाहते थे कि इस विषय पर गांधीजी अंग्रेज सरकार के साथ किया गया समझौता तोड़ दें। लेकिन

गांधीजी अपनी ओर से दिया गया वचन तोड़ने को राजी नहीं थे। अंग्रेज सरकार अपने स्थान पर अड़ी रही और भगत सिंह व उनके साथियों को फांसी दे दी गयी। भगत सिंह को न बचा पाने पर सुभाष गांधी और कांग्रेस के तरीकों से बहुत नाराज हो गये।

1930 में सुभाष कारावास में ही थे कि चुनाव में उन्हें कोलकाता का महापौर चुना गया। इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गयी। 1932 में सुभाष को फिर से कारावास हुआ। इस बार उन्हें अल्मोड़ा जेल में रखा गया। अल्मोड़ा जेल में उनकी तबियत फिर से खराब हो गयी। चिकित्सकों की सलाह पर सुभाष इस बार इलाज के लिये यूरोप जाने को राजी हो गये। सन् 1933 से लेकर 1936 तक सुभाष यूरोप में रहे। यूरोप में सुभाष ने अपनी सेहत का ख्याल रखते हुए अपना कार्य बदस्तूर जारी रखा। वहां वे इटली के नेता मुसोलिनी से मिले, जिन्होंने उन्हें भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में सहायता करने का वचन दिया। 1934 में सुभाष को उनके पिता के मृत्युशय्या पर होने की खबर मिली। खबर सुनते ही वे हवाई जहाज से कराची होते हुए कोलकाता लौटे। यद्यपि कराची में ही उन्हें पता चल गया था कि उनके पिता की मृत्यु हो चुकी है फिर भी वे कलकता गये। कलकता पहुंचते ही अंग्रेज सरकार ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया और कई दिन जेल में रखकर वापस यूरोप भेज दिया। सार्वजनिक जीवन में सुभाष को कई बार जेल जाना पड़ा।

विश्व इतिहास में आजाद हिंद फौज जैसा कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता जहां 30-35 हजार युद्ध बंदियों को संगठित, प्रशिक्षित कर अंग्रेजों को पराजित किया। पूर्व एशिया और जापान पहुंच कर उन्होंने आजाद हिन्द फौज का विस्तार करना शुरू किया। रंगून के जुबली हॉल में सुभाष चंद्र बोस द्वारा दिया गया भाषण सदैव के लिए इतिहास के पन्नों में अंकित हो गया। नेताजी की मृत्यु के संबंध में विवाद बना हुआ है कि 18 अगस्त 1945 के बाद का सुभाषचन्द्र बोस का जीवन/मृत्यु आज तक अनसुलझा रहस्य बना हुआ है। नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अंतिम समय को लेकर रहस्य बना हुआ है। माना जाता है कि हवाई हादसे में उनकी मृत्यु हो गई, लेकिन सुभाष के बहुत से प्रशंसक इस थ्योरी में विश्वास नहीं रखते हैं।

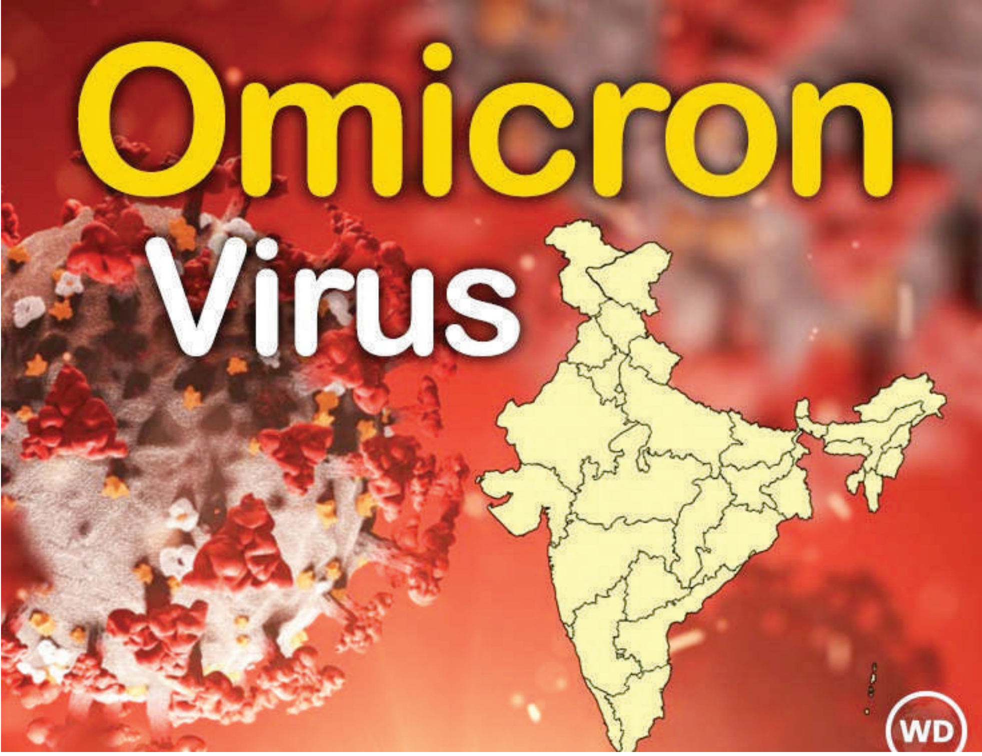

कोरोना संक्रमण की तीसरी लहर

ऐसे वक्त में जब कोरोना संक्रमण की तीसरी लहर में संक्रमितों का आंकड़ा ढाई लाख पार कर गया है, प्रधानमंत्री का विभिन्न मुख्यमंत्रियों के साथ महामारी से लड़ाई के लिये बैठक करना तार्किक नजर आता है। एक सप्ताह में यह प्रधानमंत्री की दूसरी बैठक थी, जिसमें कहा गया कि संक्रमण से बचाव हेतु प्रतिबंधों व उपायों को लागू करते वक्त ध्यान रहे कि स्थानीय स्तर पर लोगों की जीविका पर प्रतिकूल असर न पड़े। स्मरण रहे कि पहली लहर के दौरान लगे सख्त लॉकडाउन से नयी तरह का मानवीय संकट पैदा हुआ था। देश ने विभाजन के बाद पलायन की सबसे बड़ी त्रासदी को देखा।

अब तक भी आर्थिक दृष्टि से स्थिति पूरी तरह सामान्य नहीं हो पायी है। तीसरी लहर के दौरान राज्य सरकारों को स्थानीय प्रशासन को निर्देश देने होंगे कि संक्रमण की कड़ी तोड़ने के लिये एहतियाती उपाय जरूरी हैं, लेकिन जान के साथ जहान की रक्षा भी जरूरी है। देर-सवेर संक्रमण का दायरा सिमटेगा, लेकिन अर्थव्यवस्था को लगी चोट से उबरने में लंबा वक्त लग सकता है। मगर नये संक्रमण को लेकर जैसी दुविधा शासन-प्रशासन के सामने है, वैसी ही दुविधा देश की श्रमशील आबादी के सामने है। हालांकि, केंद्र व राज्य सरकारें आश्वासन दे रही हैं कि पूरा व सख्त लॉकडाउन नहीं लगाया जायेगा, लेकिन दूध का जला छाछ भी फूंक-फूंक कर पीता है। पहली लहर की सख्त बंदिशों से महानगरों में श्रमिकों की त्रासदी की कसक अभी मिटी नहीं है।

यही वजह है कि देश के कई राज्यों से श्रमिकों के पलायन की खबरें मीडिया में तैरती रही हैं। जाहिर है असुरक्षा बोध को दूर करने का आश्वासन उन उद्योगों की तरफ से श्रमिकों को नहीं मिल पाया, जहां वे काम करते हैं। ऐसे संकट के दौर में उद्योग व श्रमिकों के रिश्ते महज आर्थिक आधार पर न देखे जायें और उन्हें

मानवीय संकट के संदर्भ में देखकर ऐसे आश्वासन दिये जाएं कि वे ऊहापोह की स्थिति से निकल सकें। निस्संदेह, कोरोना की तीसरी लहर ने देश के सामने नये सिरे से बड़ी चुनौती पैदा की है, अच्छी बात यह है कि तेज संक्रमण के बावजूद अस्पताल में भर्ती होने वाले लोगों की संख्या में कमी आई है। निस्संदेह, इसके मूल में देश में चला सफल टीकाकरण अभियान भी है। आंकड़े बता रहे हैं कि मरने व अस्पताल में भर्ती होने वाले लोगों में बड़ी संख्या उन लोगों की है जिन्होंने वैक्सीन नहीं लगवाई थी। अब वे लोग भी टीका लगवा रहे हैं, जिन्होंने पहले इसकी अनदेखी की। सुखद है कि देश की पंद्रह से 18 साल तक की किशोर आबादी का टीकाकरण शुरू हो गया है और किशोरों ने उत्साह के साथ टीकाकरण अभियान में भागीदारी की है। इसके बावजूद जैसा कि प्रधानमंत्री ने कहा है कि टेस्टिंग, ट्रैकिंग और ट्रीटमेंट की व्यवस्था जितनी बेहतर होगी, लोगों को अस्पताल में भर्ती करवाने की जरूरत उतनी ही कम पड़ेगी। उन्होंने अधिक संक्रमण वाले इलाकों में निषेध क्षेत्र घोषित करने तथा घरों में पृथकवास पर जोर दिया।

दरअसल, जब से विशेषज्ञों ने कहा कि नया वेरिएंट कम घातक है, तो लोग इस संकट को गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। भीड़भाड़ वाले इलाकों में कोरोना प्रोटोकॉल का पालन न करने की खबरें हैं। पूरी दुनिया कह रही है कि मास्क, सुरक्षित दूरी और बार-बार हाथ धोने से बचाव संभव है। विडंबना ही है कि जब तक प्रशासन सख्ती नहीं करता, हम नियम-कानूनों का पालन स्वेच्छा से नहीं करते। जबकि हमने पहली व दूसरी लहर में बड़ी कीमत चुकायी है। एक संकट यह भी है कि देश में बड़ी आबादी ऐसी है जो खांसी-जुकाम को सामान्य फ्लू मानकर जांच करने से बचती है। फिर गांव-देहात में कोरोना जांच की पर्याप्त चिकित्सा सुविधा न होने की बात कही जाती है। यही वजह है कि विशेषज्ञ कह रहे हैं कि यदि अमेरिका में रोज दस लाख मामले आ रहे हैं तो उनकी जांच प्रक्रिया में तेजी और पर्याप्त चिकित्सा तंत्र का होना है। जांच की स्थिति ठीक होने पर भारत में वास्तविक संक्रमण की दर काफी अधिक हो सकती है।

कर्नाटक में फिर लॉकडाउन!

फिर लौटा पाबंदियों का दौर

कोरोना संक्रमितों की तेजी से बढ़ती संख्या और ओमीक्रोन वेरिएंट के विस्तार से आशंकित राज्य सरकारें एक बार फिर आंशिक लॉकडाउन की ओर लौट चली हैं। राष्टीय राजधानी क्षेत्र में तो कई पाबंदियां पहले से ही लागू हैं, पर दिल्ली सरकार ने अब और सख्ती बरतते हुए सभी निजी दफ्तरों को भौतिक रूप से बंद करने का फैसला किया है, रेस्तरां, होटलों में बैठकर खाने पर भी रोक लगा दी गई है। वैसे तो, एहतियात बरतने के किसी भी कदम का स्वागत ही किया जाएगा, लेकिन सरकारों को यह भी ख्याल रखना होगा कि उनके किसी कदम की अनिवार्यता और उसके असर से गहरी सामाजिक विसंगति न पैदा होने पाए।

दफ्तरों में कर्मचारियों की उपस्थिति को पूरी तरह रोकने से कोविड संक्रमण को काबू में करने में कितना फर्क पड़ा, इसका कोई ठोस अध्ययन अब तक हमारे सामने नहीं आया है, अलबत्ता, ऐसे आंकड़े जरूर हमारे सामने हैं, जो बताते हैं कि पिछले लॉकडाउन ने कितने निम्न-मध्यवर्गीय परिवारों को फिर से गरीबी की खाई में धकेल दिया और बेरोजगारी देश में किस स्तर पर पहुंची ! इसमें तो कोई दोराय हो ही नहीं सकती कि बात जान बचाने की हो, तब गरीबी की चिंता प्राथमिकता सूची में उसके बाद ही रहेगी, मगर विडंबना यह है कि गरीबी की देर तक अनदेखी भी अंततः जानलेवा होती है। पिछले दो साल में देश का विशाल तबका आर्थिक तंगी झेलने को अभिशप्त रहा। यकीनन, सरकार ने अपनी कल्याणकारी भूमिका में गरीबों तक अनाज पहुंचाने के उपक्रम किए हैं, मगर जिंदगी की जरूरतें सिर्फ पेट भरने तक महदूद नहीं हैं। इसके आगे की मांगों के लिए धन चाहिए और जब आर्थिक गतिविधियां ठप होती हैं, तब सबसे ज्यादा मार दिहाड़ी मजदूरों या सबसे कम पगार वाले मुलाजिमों की जिंदगी पर पड़ती है। इसलिए सरकारों को उन्हें ध्यान में रखते हुए ही फैसले करने चाहिए। पिछले एक साल में भारत ने टीकाकरण के मामले में एक लंबा सफर तय किया है, हालांकि विशाल आबादी के कारण इसे अब भी मीलों की दूरी तय करनी है।

कहने की आवश्यकता नहीं कि नई लहर से निपटने के लिए देश के अस्पताल कहीं बेहतर स्थिति में होंगे। सरकार ने इस दौरान स्वास्थ्य क्षेत्र को अधिक आर्थिक संसाधन भी मुहैया कराए हैं। फिर सरकार के ही आंकड़े बता रहे हैं कि इस बार अस्पताल में भर्ती कराने की आवश्यकता पांच से दस प्रतिशत मामलों में पड़ रही है, जबकि पिछली लहर में 20 से 23 प्रतिशत मरीजों को अस्पतालों की जरूरत पड़ी थी। ऐसे में, अधिक व्यावहारिक कदम उठाने की जरूरत है। केंद्र व राज्य सरकारों और महामारी नियंत्रण से जुड़ी सर्वोच्च नियामक संस्था को इस बात पर गौर करना चाहिए कि एहतियाती कदमों की रूपरेखा तय करते हुए उन वर्गों के आर्थिक हितों की रक्षा हो सके, जो रोजगार के लिहाज से सबसे नाजुक स्थिति में हैं। ऐसे लोगों में टीकाकरण को अधिक गति देने की दरकार है। एक तरफ, हम बूस्टर डोज देने की शुरुआत कर चुके हैं और दूसरी तरफ करोड़ों लोग अब भी पहले टीके से ही दूर हैं। डब्ल्यूएचओ बार-बार कह चुका है कि महामारी कल ही खत्म नहीं होने जा रही, तो फिर हमें भी इस लिहाज से एक दीर्घकालिक रणनीति अपनाने की जरूरत है, ताकि कोई भी फैसला किसी के साथ निर्मम होने का एहसास नहीं कराए।

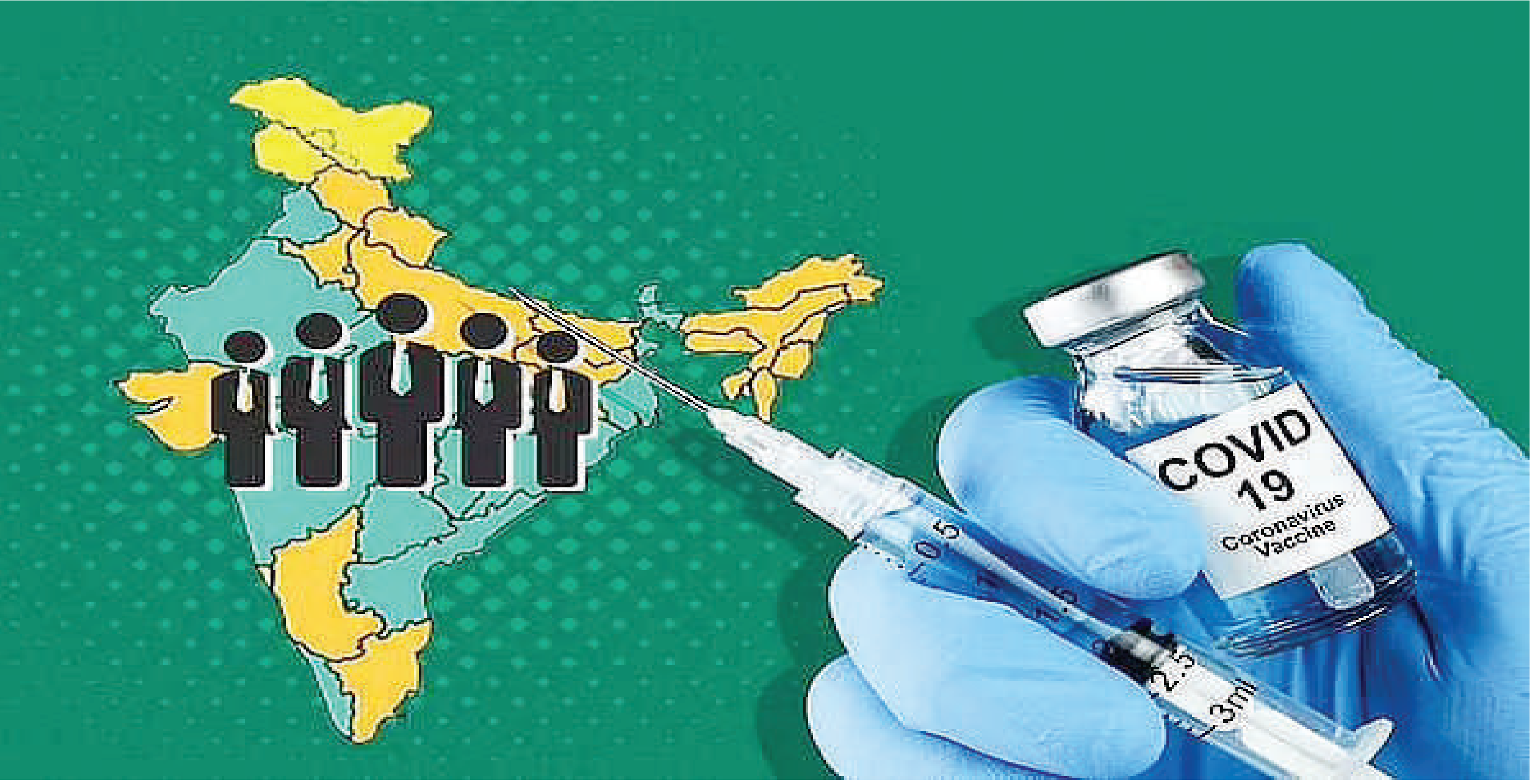

टीकाकरण से हार रहा कोरोना

एक वैश्विक महामारी के खिलाफ स्वदेशी व देश में निर्मित टीकों की मदद से टीकाकरण का कामयाब साल पूरा करना हमारी उपलब्धि है। इतने कम समय में वैज्ञानिकों ने टीका हासिल किया, राजसत्ता ने इच्छाशक्ति दिखायी और चिकित्सकों, स्वास्थ्यकर्मियों तथा फ्रंट लाइन वर्करों ने उसे अंजाम तक पहुंचाया। सब कुछ जीरो से शुरू करने जैसा था, फिर भी देश ने न केवल सवा अरब से ज्यादा आबादी का ख्याल रखा बल्कि दूसरे देशों की भी मदद की। हम याद रखें कि देश की आर्थिक स्थिति कैसी है, हमारा चिकित्सा तंत्र किस हाल में था और संसाधनों की क्या स्थिति है।

दूसरी लहर के दौरान कई बड़े देशों ने वैक्सीन की कच्ची सामग्री देने में आनाकानी की और चीन ने कई तरह के व्यवधान पैदा किये। इतने बड़े व भौगोलिक जटिलताओं के देश के गांव-देहात में जाकर टीके लगाना निस्संदेह कठिन था। टीकों का उत्पादन और फिर सुरक्षित तापमान में लक्षित आबादी तक पहुंचाना आसान नहीं था। जब राज्यों को टीकाकरण का दायित्व दिया गया तो उस दौरान जो राजनीतिक कोलाहल हुआ, उसे देश ने देखा। सुप्रीम कोर्ट की तल्खी भी देखी।

सुखद है कि देश की सत्तर फीसदी वयस्क आबादी को दोनों टीके लगे हैं। करीब 157 करोड़ खुराक दी जा चुकी हैं। वह भी तब जब खुद स्वास्थ्यकर्मियों की जान को भी खतरा था। इनकी प्रतिबद्धता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए राष्ट्र ने डाक टिकट जारी किया। लेकिन ऐसे वक्त में जब रोज नये संक्रमण के मामले दो लाख से अधिक आ रहे हैं और सक्रिय मामलों का आंकड़ा दस लाख पार कर गया है, तो सतर्क रहने की जरूरत है। नये वेरिएंट का खतरा टला नहीं है और वायरस के रूप बदलने की आशंका बनी हुई है। कहा जा रहा है कि ओमीक्रोन के कम घातक होने के कारण केवल अस्पताल में भर्ती होने वाले तथा मरने वालों का ही आंकड़ा जारी किया जाये। साथ ही अनावश्यक

प्रतिबंधों में तार्किक ढंग से ढील दी जाये ताकि समाज के अंतिम व्यक्ति के लिये रोजी-रोटी का संकट पैदा न हो। सख्ती एक नई मानवीय त्रासदी को जन्म दे सकती है। वहीं, यह अच्छी बात है कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय मार्च से बारह से पंद्रह साल के बच्चों के टीकाकरण की दिशा में बढ़ रहा है। निस्संदेह, इससे जहां अभिभावकों की चिंता दूर होगी, वहीं स्कूलों को सामान्य ढंग से खोलने में मदद मिलेगी।

विकसित देश पहले ही इस दिशा में आगे बढ़ चुके हैं। बल्कि सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर करके बारह साल से छोटे बच्चों के टीकाकरण के लिये सरकार को निर्देश देने की मांग की गई है। वहीं दिव्यांगों के टीकाकरण के बाबत दायर याचिका की सुनवाई के दौरान सरकार ने हलफनामा दायर किया है कि किसी को जबरन टीका लगाने को बाध्य नहीं किया जाएगा। साथ ही दिव्यांगों को टीकाकरण का प्रमाणपत्र दिखाने की बाबत कहा कि किसी मानक प्रक्रिया के तहत यह अनिवार्य नहीं है। बहरहाल, इतना जरूर है कि दिव्यांगों की दिक्कतों के चलते उनके घर-घर जाकर टीका लगाने की जरूरत है। लेकिन जब भारत में कोरोना संक्रमण के मामले अमेरिका के बाद दूसरे नंबर पर हैं तो नागरिकों से सजग-सतर्क व्यवहार की उम्मीद है। हम न भूलें कि इतने बड़े अभियान के बाद करोड़ों लोग ऐसे भी हैं जो आज भी टीका लगाने से बच रहे हैं। तीसरी लहर के आंकड़े बता रहे हैं कि अस्पताल में भर्ती होने वालों व मरने वालों में वे ही लोग ज्यादा हैं, जिन्होंने टीका नहीं लगवाया। निस्संदेह, दोनों टीके लगाने के बाद भी कुछ लोगों को संक्रमण हुआ है, लेकिन यह कम घातक रहा और अस्पताल में भर्ती होने की नौबत नहीं आयी। बहरहाल, एक अनजानी महामारी से फौरी तौर पर लोगों को सुरक्षा कवच तो मिला ही है। जिन लोगों के लिये पहली-दूसरी लहर में संक्रमण घातक हुआ उनमें से अधिकांश लोग पहले से ही गंभीर रोगों से ग्रस्त थे। बहरहाल, जो टीकाकरण से रह गये हैं उन्हें जल्दी से जल्दी टीका लगवाना चाहिए। तभी महामारी का खात्मा संभव है।

एफ एम रेडियो के क्षेत्र में बेहतर कैरियर

ग्वालियर का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम . ऑन एयर हो चुका है। और श्रोताओं को इसके प्रोग्राम पसंद आ रहे हैं और गूंज एफ एम घर-घर में अपनी जगह बना रहा है। हमारे पाठकों तक सही सामग्री पहुंचे और उनके लिए सार्थक सिद्ध भी हो सके यह पहला प्रयास हमारा रहेगा। गूंज 98.8 एफ एम के प्रोग्रामों में कृषि, शिक्षा, करियर, परामर्श, महिला सशक्तिकरण, चिकित्सा, मेडिकल, सड़क सुरक्षा, बच्चों के खेल,संगीत व मनोरंजन से भरे होंगे। गूँज का प्रयास रहेगा वो समाज की समस्याओं पर प्रकाश डाले व उनके समाधान के मार्ग बताए।

वर्तमान युग में, रेडियो सिर्फ सूचना का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि अब इसमें मनोरंजन भी शुमार हो गया है। इंफोटेंटमेंट के इस माध्यम में अब आरजे की जिम्मेदारी भी पहले से बढ़ गई है। अब रेडियो जॉकी लोगों को जानकारी भी इस अंदाज में देते हैं ताकि उनका भरपूर मनोरंजन भी हो सके।

क्या होता है काम

एक रेडियो जॉकी का काम सिर्फ रेडियो शो को प्रेजेंट करना ही नहीं होता बल्कि उनके कार्यक्षेत्र में म्यूजिक प्रोग्रामिंग, पटकथा लेखन, रेडियो एडवरटाइजिंग करने से लेकर ऑडियो मैगजीन व डाक्यूमेंट्री भी पेश करने होते हैं। सबसे पहले तो आपको यह समझना होगा कि रेडियो जॉकी की जॉब 9 से 5 की रेगुलर जॉब नहीं है। रेडियो में आपको दिन या रात कभी भी शो होस्ट करना होता है। साथ ही रेडियो जॉकी को न सिर्फ देश-विदेश में होने वाली गतिविधियों की जानकारी होनी चाहिए बल्कि उसे अपने शहर की सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में भी पता होना चाहिए ताकि वह अपने शो को और भी बेहतर व इंफोर्मेटिव बना सके। वैसे तो आरजे अपने शो से पहले पटकथा लिखते हैं, लेकिन फिर भी आपको शो के दौरान चेंज करना आना चाहिए। इसके लिए आपका स्पॉनटेनियस होना आवश्यक है। आज रेडियो भारत की बड़ी इंडस्ट्री में से एक है। हालांकि रेडियो इंडस्ट्री काफी पुरानी है लेकिन फिर भी पिछले कुछ समय में इस क्षेत्र ने काफी तरक्की की है। इस समय देश में बहुत से रेडियो चैनल्स मौजूद हैं, जिन्हें लोगों द्वारा काफी सराहा जा रहा है। जिसके कारण रेडियो जॉकी भी लोगों के काफी प्रिय हो जाते हैं। रेडियो अब घरों से निकलकर लोगों के हाथों तक पहुंच गया है। लोग बसों में सफर करते हुए, कार चलाते हुए यहां तक कि पैदल चलते हुए भी रेडियो सुनना पसंद करते हैं।

स्किल्स

एक आरजे का न सिर्फ एक बेहतर वक्ता होना आवश्यक है बल्कि उसे हर स्थिति को अच्छे से हैंडल करना भी आना चाहिए। साथ ही आपमें प्रेजेंटेशन स्किल भी बेहतर होना चाहिए। इसके लिए आपका आत्मविश्वासी व हाजिरजवाब होना भी बेहद आवश्यक है। आपकी आवाज प्रभावशाली होने के साथ-साथ आपका उच्चारण बेहद साफ व आवाज पर नियंत्रण भी होना चाहिए। आपमें अंदर यह क्षमता होनी चाहिए कि आप अपनी आवाज के उतार-चढ़ाव द्वारा लोगों को आकर्षित कर सकें। साथ ही एक आरजे को हर उम्र के लोगों को एंटरटेन करना होता है, इसलिए उसका बात करने का तरीका भी ऐसा होना चाहिए कि वह हर उम्र के लोगों को प्रभावित कर सके। अगर आप चाहते हैं कि लोग आपको पसंद करें तो आपका अपना खुद का स्टाइल व वह ओरिजिनल होना चाहिए। आपको मिमिक्री, स्थानीय बोली व कॉमेडी करना भी आना चाहिए ताकि आप अपने शो को और भी अधिक मजेदार बना सकें। एक आरजे का म्यूजिक लवर होना भी बेहद आवश्यक है। आपको न सिर्फ बॉलीवुड बल्कि इंटरनेशनल म्यूजिक के बारे में पर्याप्त जानकारी होनी चाहिए।

पुलिस सेवा के दौरान आईजी ग्वालियर द्वारा किये गये कार्यों को ग्वालियर पुलिस सदैव याद रखेगी

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर पुलिस द्वारा सेवानिवृत्त हुए ग्वालियर जोन के पुलिस महानिरीक्षक श्री अविनाश शर्मा को भावभीनी विदाई दी गई तथा डीआईजी ग्वालियर रेंज श्री राजेश हिंगणकर का स्थानान्तरण अतिरिक्त पुलिस आयुक्त इन्दौर के पद पद होने से उन्हे भी इस अवसर पर विदाई दी गई। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी के अलावा एसपी एजेके श्री पंकज पाण्डेय, एसपी (विशेष शाखा) श्री योगेश्वर शर्मा, एसपी सायबर श्री सुधीर अग्रवाल, अति. पुलिस अधीक्षक श्रीमती हितिका वासल, श्री राजेश डण्डोतिया, श्री सत्येन्द्र सिंह तोमर, श्री जयराज कुबेर तथा ग्वालियर पुलिस के समस्त राजपत्रित अधिकारी एवं थाना प्रभारी सहित पुलिस के अन्य अधिकारीगण भी उपस्थित रहे।

इस अवसर पर से.नि. पुलिस महानिरीक्षक श्री अविनाश शर्मा एवं डीआईजी ग्वालियर रेंज श्री राजेश हिंगणकर द्वारा अपनी ग्वालियर रेंज में पदस्थापना के दौरान के अनुभवों को साझा किया और साथ ही उनके द्वारा विधानसभा उप चुनाव, कोरोना काल एवं बाढ़ आपदा के समय ग्वालियर पुलिस द्वारा किये गये कार्य की प्रशंसा की। इस अवसर पर उनके द्वारा उपस्थित पुलिस अधिकारियों से कहा कि पुलिस जैसे अनुशासित बल में होने के नाते समय-समय पर वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा दिये गये निर्देशों/आदेशों का शत्प्रतिशत पालन करना चाहिए। से.नि. पुलिस महानिरीक्षक एवं डीआईजी ग्वालियर रेंज द्वारा इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर तथा उनकी टीम द्वारा प्रारम्भ किये गये नवाचारों की प्रशंसा की साथ ही उन्होने कहा कि ग्वालियर पुलिस के अधिकारियों की कार्यशैली व टीम वर्क की भावना से ही ग्वालियर पुलिस की कार्यप्रणाली में सुदृढ़ता आई है, जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि विगत वर्ष में हुए लगभग सभी गंभीर अपराधों का खुलासा कर आरोपियों को गिरतार करने में ग्वालियर पुलिस को सफलता प्राप्त हुई है। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी ने कहा कि

ग्वालियर पुलिस ने आईजी एवं डीआईजी को दी विदाई

मुझे पूर्व में भी इन दोनों वरिष्ठ अधिकारियों के साथ कार्य करने का अवसर मिला है, दोनों की कार्यशैली से पूर्व से ही भलीभांति अवगत होने के कारण ग्वालियर पदस्थापना

के दौरान मुझे जिले की कानून व्यवस्था बनाये रखने में किसी भी प्रकार की असुविधा महसूस नहीं हुई। दोनों वरिष्ठ अधिकारी मेरे लिये सदैव प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं जिनके अनुभवों का लाभ मुझे लगातार मिलता रहेगा। विदाई समारोह के अंत में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर द्वारा दोनों अधिकारियों को स्मृति चिन्ह व पुष्प गुच्छ भेट कर भविष्य के लिये शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर उपस्थित अन्य सभी पुलिस अधिकारियों द्वारा भी उन्हे पुष्पहार पहनाकर भावभीनी विदाई दी गई।

विदाई समारोह से पूर्व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर श्री अमित सांघी द्वारा ग्वालियर जिले के समस्त राजपत्रित अधिकारियों तथा थाना प्रभारियों की अपराध समीक्षा बैठक ली गई। बैठक में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने विगत वर्ष के लंबित अपराधों की थानावार समीक्षा की तथा अच्छा निकाल करने वाले थाना प्रभारियों को पुरस्कृत भी किया गया। बैठक में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक ने उपस्थित सभी थाना प्रभारियों को समयसीमा में लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण करने की सख्त हिदायत दी।

GOONJ GWALIOR TRAFFIC STORY

ग्वालियर पुलिस की सराहनीय पहल से सुगम हो रहा यातायात

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर पुलिस अधीक्षक अमित सांघी ने ग्वालियर शहर में यातायात व्यवस्था को सुव्यवस्थित तरीके से चलाने एवं यातायात को सुगम बनाने की जिम्मेदारी एएसपी हितिका वासल को दी। शहर को ट्रैफिक से मुक्त कराने एवं ट्रैफि के क्षेत्र में कई तरह

के सुधार एएसपी वासल ने किए और इसे एक चुनौति के रूप में लेकर उन्होंने पूरे दलबल के साथ सड़कों पर उतरकर यातायात को सुगम बनाने हेतु उम्मीदों से भी कई ज्यादा आगे बढ़कर कार्य किया इसी का नतीजा है कि आज ग्वालियर शहर में ट्रैफिक एवं यातायात व्यवस्था में कई सुधार देखने को मिल रहे हैं।

गौरतलब है कि वालियर शहर को अतिक्रमण व जाम से मुक्त रखने और रोड पर खड़े वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थलों में पार्क कराने हेतु एक बहुत ही बड़ा अभियान ग्वालियर पुलिस द्वारा चलाया गया। प्रशासन व यातायात पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा शिन्दे की छावनी से

पिंक निर्भया मोबाइल हेल्पलाइन नम्बर -7049110252

छात्राओं एवं महिलाओं की सुरक्षा को लेकर पिंक निर्भया पुलिस मोबाइल का शुभारंभ

महिला सुरक्षा को लेकर ग्वालियर पुलिस बहुत संवेदनशील है और वर्ष 2022 में महिला सुरक्षा को और अधिक सुदृढ़ बनाना ग्वालियर पुलिस का प्रमुख एजेण्डा है। वर्ष 2020 की तुलना में वर्ष 2021 में महिलाओ से छेड़छाड़ की घटनाओं में कमी आई है, जिसे और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु ग्वालियर पुलिस ने आज एक पिंक निर्भया मोबाइल शुरूआत की है। जिसका शुभारम्भ पुलिस अधीक्षक ग्वालियर अमित सांघी,भापुसेद्वारा पुलिस कन्ट्रोल रूम ग्वालियर से हरी झण्डी दिखाकर किया गया। इस अवसर पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शहर-मध्य/यातायात श्रीमती हितिका वासल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पूर्व राजेश डण्डौतिया, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पश्चिम सतेन्द्र सिंह तोमर, ग्वालियर पुलिस द्वारा इस मौके पर महिलाओं संबंधी अपराधों की रोकथाम एवं उनकी त्वरित सहायता हेतु पिंक निर्भया मोबाइल हेल्पलाइन नम्बर 7049110252 भी जारी किया गया है। इस पिंक निर्भया मोबाइल के जरिए महिलाओं से छेड़छाड़ करने वालों पर पुलिस द्वारा शिकंजा कसा जा सकेगा। यह पिंक निर्भया मोबाइल भीड़ वाले क्षेत्रों के अलावा स्कूल, कॉलेज, पार्कों व ऐसे स्थानों पर पेट्रोलिंग करेगी, जहां शरारती तत्वों के जमा होने की आशंका रहती है। कुछ शरारती तत्व पान व चाय की गुमठी पर खड़े होकर छात्राओं पर कमेंट्स करते हैं, ऐसे लोगों के खिलाफ भी पिंक निर्भया मोबाइल कार्यवाही करेगी।

यातायात नियमों के प्रति लोगों को जागरूकत कर रहा गूंज 90.8 एफ. एम.

ग्वालियर का पहला कम्युनिटी रेडियो स्टेशन गूंज 90.8 एफ. एम. ग्वालियर पुलिस के साथ मिलकर ग्वालियर शहर में यातायात के नियमों के प्रति लोगों को जागरूक करने का काम कर रहा है। शहर के ट्रैफिक सिग्नलों पर गूंज एफ.एम. द्वारा एनाउसमेंट के माध्यम से लोगों को यातायात के नियमों के बारे में जागरूक किया जा रहा है एवं हेलमेट पहनने, मास्क लगाने, आदि नियमों के के प्रति शहरवासियों को जागरूक किया जा रहा है।

हटाये गये अतिक्रमण तथा फल व सब्जी के हाथ ठेलों को हॉकर्स जोन में भेजे जाने की कार्यवाही का एसपी अमित सांघी द्वारा शिन्दे की छावनी पहुंचकर निरीक्षण किया गया। इस अभियान के दौरान डीएसपी यातायात नरेश बाबू अन्नोटिया, विक्रम सिंह कनपुरिया, टीआई यातायात बैजनाथ प्रजापति, निरीक्षक कुलदीप राजपूत तथा दर्शन सिंह बिसारिया द्वारा अपने-अपने क्षेत्रों में अपनी टीम के साथ भ्रमण कर यातायात अवरूद्ध कर रहे वाहनों को चिन्हित कर कार्यवाही की गई।

लैफ्ट टर्न फ्री रखने शहरवासियों से की अपील

यातायात पुलिस ग्वालियर द्वारा एएसपी (यातायात) श्रीमती हितिका वासल ने टीम के साथ शहर के प्रमुख चौराहों/तिराहों पर लैफ्ट टर्न फ्री रखने की समझाइश देने के उद्देष्य से यातायात पुलिस द्वारा स्कूली बच्चो की मदद से हजीरा चौराहे पर वाहन चालकों को लैफ्ट टर्न फ्री रखने की समझाइश दी।

हैलमेट जागरूकता रैली

दिनों दिन सड़क दुर्घटनायें बढ़ रही है इसी को ध्यान में रखते हुए शहर के वाहन चालकों में जागरूकता लाने के लिये एसपी अमित सांघी और एएसपी हितिका वॉसल ने फूलबाग चौराहा से हैलमेट जागरूकता रैली यातायात पुलिस कर्मियों की वाहन रैली हरी झंण्डी दिखा कर रवाना किया।

फ्लैग मार्च निकालकर किया जागरूक

एएसपी (यातायात) श्रीमती हितिका वासल ने थाना पड़ाव, हजीरा व थाना ग्वालियर क्षेत्र में अतिक्रमण व जाम से मुक्त रखने और रोड पर खड़े वाहनों को निर्धारित पार्किंग स्थलों में पार्क कराने हेतु फ्लैग मार्च निकालकर अभियान चलाया गया। एएसपी (यातायात) हितिका वॉसल अगुआई में निकाले गये फ्लैग मार्च में सीएसपी ग्वालियर नागेन्द्र सिंह सिकरवार, सीएसपी महाराजपुरा रवि भदौरिया, डीएसपी यातायात विक्रम सिंह कनपुरिया, तथा थाना प्रभारी ग्वालियर, हजीरा, बहोड़ापुर एवं पुरानी छावनी के अलावा अन्य पुलिस अधिकारी व कर्मचारी सम्मलित रहे।

GOONJ SPECIAL REPORT

मोबाइल वापस मिलने पर मोबाइल मालिकों के चेहरे पर लौटी मुस्कान

ग्वालियर। क्राइम ब्रांच की साइबर सेल ने 30 दिन में अलग-अलग स्थानों से गायब हुए 31 मोबाइल ट्रेस करने का दावा किया है। बरामद मोबाइलों की कीमत पुलिस ने पांच लाख 34 हजार रुपये बताई है। एसपी अमित सांघी ने बरामद मोबाइलों को शिकायतकर्ताओं को बुलाकर वापस किए। मोबाइल मिलने पर लोग खुश हो गए। दो लोग तो ऐसे थे, जो कि मोबाइल गुम होने के बाद दोबारा ले भी नहीं पाए थे। गौर करने वाली बात यह है कि प्रतिदिन चार से पांच मोबाइल गायब होने की सूचना साइबर सेल में दर्ज होती है। एएसपी राजेश दंडौतिया ने साइबर सेल को निर्देशित किया था कि गुम होने वाले मोबाइलों को ट्रेस कर बरामद करने की कार्रवाई में तेजी लाएं। ट्रेस होने के बाद मोबाइल कहां एक्टिव हैं, उस मोबाइल को बरामद करने के लिए संबंधित थाने की पुलिस से मदद ली जा सकती है। क्राइम ब्रांच थाना प्रभारी डीपी गुप्ता व साइबर सेल प्रभारी एसआइ रजनी सिंह ने बताया कि जब्त मोबाइल एपल कंपनी से लेकर सभी कंपनियों के हैं। यह मोबाइल कमलाराजा अस्पताल में पदस्थ चिकित्सक, किसान, छात्र, मजदूर एवं दुकान चलाने वाली महिला के थे।

पीड़ित महिलाओं के प्रति संवेदनशील रवैया रखे और शिकायतों का शीघ्रता से निराकरण करे : अमित सांघी

डीआईजी बनने पर सांघी को दी बधाई

ग्वालियर के पुलिस अधीक्षक अमित सांघी को पुलिस उप महानिरीक्षक पद पर पदोन्नति मिली है। पदोन्नत होने पर उन्हें कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह ने बधाई एवं शुभकामनायें दीं। इस अवसर पर पूर्व विधायक मदन कुशवाह एवं अपर कलेक्टर एच बी शर्मा भी मौजूद थे।

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

ग्वालियर पुलिस कन्ट्रोल रूम सभागार ग्वालियर में एसएसपी अमित सांघी, के निर्देश पर एक दिवसीय कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित महिला पुलिस अधिकारियों को संबोधित करते हुए एसएसपी अमित सांघी ने कहा कि पीड़ित महिलाओं के प्रति संवेदनशील रवैया रखते हुये उनसे संबंधित शिकायतों का शीघ्रता से निराकरण किया जाना चाहिये। विवेचक को रिपोर्ट दर्ज करते समय अपने आप को पीडित महिला के स्थान पर में उपस्थित महिला बाल विकास विभाग के संरक्षण अधिकारी डॉ. मनोज गुप्ता, सहायक जिला लोक अभियोजन अधिकारी राजेश मलहोत्रा द्वारा महिला संबंधी घरेलू हिंसा अधिनियम 2005 के एंव महिला

रखकर रिपोर्ट दर्ज करनी चाहिये एंव महिला संबंधी प्रकरणों की विवेचना में किसी भी प्रकार की लापरवाही नही बरतनी चाहिये।एक दिवसीय कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम में सीएसपी मुरार ने उपस्थित सभी महिला अधिकारी को संबोधित करते हुये कहा कि थाने में आने वाली पीडित महिलाओं की सहानुभूतिपूर्वक बात सुनी जाकर रिपोर्ट दर्ज कर विवेचना निर्धारित अवधि में पूर्ण कर चालान पेश किया जाना चाहिये, जिससे पीडित महिला को समयसीमा में न्याय मिल सके, साथ ही समस्त थानों में पदस्थ महिला पुलिस अधिकारियों को महिला हेल्पडेस्क के कार्यो एंव उनके दायित्वों के संबंध में विस्तार पूर्वक समझाया। कार्यक्रम संबंधी अपराधों के विषय पर विस्तृत जानकारी उपस्थित महिला पुलिस अधिकारियों को दी। एफएसएल अधिकारी डॉ. अखिलेश भार्गव द्वारा सेमिनार में उपस्थित समस्त थानों के पदस्थ महिला पुलिस अधिकारियों एंव ऊर्जा महिला हेल्प डेस्क प्रभारियों को महिला संबंधी अपराधों की विवेचना के आने वाली चुनौतियो के समाधान के बारे बताया एंव कैसे घटनास्थल से भौतिक साक्ष्यों का संकलन करें तथ कैसे अच्छे से पैकेजिंग करें का प्रशिक्षण कराया गया। उक्त एक दिवसीय कौशल उन्नयन प्रशिक्षण कार्यक्रम में समस्त थानों में पदस्थ महिला पुलिस अधिकारी एंव ऊर्जा महिला हेल्प डेस्क प्रभारी उपस्थित हुये।

केंद्रीय मंत्री श्री तोमर की पहल पर मिली मंजूरी.. बाढ़ प्रभावित ग्वालियर-चंबल संभाग को केंद्र से 600 करोड़ रू. की अतिरिक्त सहायता

● टीम गूंज न्यूज नेटवर्क

मानसून के दौरान बाढ़ से प्रभावित हुए ग्वालियर व चंबल संभाग तथा विदिशा जिले को केंद्र सरकार से 600.50 करोड़ रुपये की अतिरिक्त सहायता मंजूर की गई है। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री नरेंद्र सिंह तोमर की पहल पर केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह की अध्यक्षता में उच्च स्तरीय समिति ने केंद्रीय सहायता देने को मंजूरी दी है। मध्य प्रदेश सहित छह राज्यों को 3,063.21 करोड़ रु. की अतिरिक्त सहायता स्वीकृत की गई है। यह, प्राकृतिक आपदाओं का सामना कर रहे इन छह राज्यों के लोगों की मदद करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार के दृढ़ संकल्प को दर्शाता है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून के दौरान, म.प्र. के ग्वालियर व चंबल संभाग के 8 जिले तथा विदिशा जिला अत्यधिक वर्षा के कारण बुरी तरह प्रभावित हुआ था, जिसमें शिवपुरी जिले में तो एक ही दिन में 300 मिलीमीटर से अधिक वर्षा हुई थी। तब राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) की 9 टीमें, राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) की 29 टीमें, सेना के 6 कॉलम, होमगार्ड की 61 टीमें, नागरिक सुरक्षा की 478 टीमें तैनात की गईं और नागरिकों को बचाने के लिए 145 नावों तथा एयरलिफ्ट के लिए 6 विमानों का इस्तेमाल किया गया था। बचाव अभियान के दौरान फंसे हुए 9,334 लोगों को बचाया गया, 32,960 लोगों को स्थानांतरित व 278 लोगों को एयरलिफ्ट किया गया था, वहीं मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के निर्देश पर राज्य द्वारा बाढ़ प्रभावित जिलों में 226 राहत शिविर आयोजित किए थे। केंद्रीय मंत्री और क्षेत्रीय सांसद श्री तोमर ने उस समय बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया था तथा केंद्र व राज्य सरकार में उच्च स्तर पर चर्चा कर प्रभावित जिलों के लिए सहायता देने का अनुरोध किया था। तत्काल प्रकृति के नुकसान का आकलन करने के लिए, केंद्रीय गृह मंत्रालय की अंतर-मंत्रालयी टीम ने 16 से 18 अगस्त 2021 तक राज्य के प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया ताकि नुकसान और अस्थायी प्रकृति की तत्काल राहत के लिए धन की आवश्यकता का मौके पर आकलन किया जा सके। केंद्रीय टीम की रिपोर्ट व राष्ट्रीय कार्यकारी समिति (एससी-एनईसी) की उप-समिति की सिफारिशों पर उच्च स्तरीय समिति (एचएलसी) ने विचार किया और बाढ़ प्रबंधन के लिए एनडीआरएफ से 600.50 करोड़ रु. की अतिरिक्त सहायता को मंजूरी दी। इसके अलावा, केंद्र सरकार ने वर्ष के दौरान विभिन्न आपदाओं के प्रबंधन के लिए एसडीआरएफ में राज्य को अपने हिस्से के 1456 करोड़ रु. पहले जारी कर दिए गए है। श्री तोमर ने सहायता स्वीकृत करने के लिए प्रधानमंत्री श्री मोदी व केंद्रीय गृह मंत्री श्री शाह के प्रति आभार व्यक्त किया है। गृह मंत्री श्री शाह की अध्यक्षता वाली उच्च स्तरीय समिति ने जिन अन्य 5 राज्यों को केंद्रीय सहायता देने को मंजूरी दी, वे हैं-असम, गुजरात, कर्नाटक, उत्तराखंड व पश्चिम बंगाल। इन्हें वर्ष 2021 के दौरान आई बाढ़/भूस्खलन/चक्रवाती तूफान के लिए धनराशि मिलेगी।

चक्रवाती तूफान 'तौकते' के लिए गुजरात को 1,133.35 करोड़ रु., चक्रवाती तूफान 'यास' के लिए पश्चिम बंगाल को 586.59 करोड़ रु., दक्षिण पश्चिम मानसून के दौरान बाढ़/भूस्खलन के लिए असम को 51.53 करोड़ रु., कर्नाटक को 504.06 करोड़ रु. और उत्तराखंड को 187.18 करोड़ रु. की सहायता मंजूर की गई है। यह अतिरिक्त सहायता केंद्र सरकार द्वारा इन राज्यों को एसडीआरएफ में जारी राशि के अतिरिक्त है, जो पहले से ही राज्यों के पास उपलब्ध है। वित्त वर्ष 2021-22 के दौरान केंद्र सरकार ने 28 राज्यों को उनके एसडीआरएफ में 17,747.20 करोड़ रु. जारी किए हैं। इसके अलावा एनडीआरएफ से 7 राज्यों को 3,543.54 करोड़ रु. जारी किए गए हैं।

चक्रवाती तूफान 'तौकते' और 'यास' के बाद एनडीआरएफ से गुजरात को गत 20 मई को एक हजार करोड़ रु. व पश्चिम बंगाल को 29 मई को 300 करोड़ रु. अग्रिम रूप से जारी किए गए थे। वर्ष 2021-22 के दौरान केंद्र सरकार ने प्राकृतिक आपदाओं के तुरंत बाद ही प्रभावित राज्य सरकारों से ज्ञापन प्राप्त होने की प्रतीक्षा किए बिना ही 22 अंतर-मंत्रालय केंद्रीय टीमों (आईएमसीटी) को वहां भेज दिया था।

प्रधानमंत्री फसल बीमा और राहत राशि मिलाकर किसानों की क्षतिग्रस्त फसल की करेगें भरपाई - मुख्यमंत्री श्री चौहान

कोई भी गरीब किसान राहत राशि से वंचित नहीं रहेगा

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि ओलावृष्टि से प्रभावित बीमित फसल का 25 प्रतिशत बीमा कम्पनी एडवांस में भुगतान करेगी। शेष 75 प्रतिशत राशि सेटलमेंट होने के बाद बीमा कम्पनी द्वारा संबंधित कृषकों को भुगतान किया जाएगा। राहत राशि राज्य सरकार देगी। प्रधानमंत्री फसल बीमा और राहत राशि मिलाकर किसानों को उनकी फसल क्षति की भरपाई की जाएगी। कोई भी गरीब किसान राहत राशि से वंचित नहीं रहेगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान आज राजगढ़ जिले के छायन ग्राम में ओलावृष्टि से क्षतिग्रस्त सरसों, गेहूँ, चना और मसूर की फसलों का जायजा लेने पहुँचे थे।मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि किसान भाई परेशान न हो, संकट के समय सरकार उनके साथ है और उन्हें इस संकट से भी निकालेगी। प्रभावित कृषकों की बेटियों का विवाह है, तो वह भी राज्य सरकार कराएगी। किसानों को तकलीफ से बाहर निकालना उनका धर्म है, कर्त्तव्य है और उनकी ड्यूटी भी है।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने जिला प्रशासन को निर्देश दिये कि एक-एक गाँव का सर्वे हो। सर्वे सूची ग्राम में चस्पा कराई जाए, जिससे छूटा हुआ कृषक आपत्ति दर्ज कराकर अपना नाम सर्वे सूची में जुड़वा सके। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि सर्वे कार्य चोरी-छुपे नहीं हो, कोई भी प्रभावित कृषक छूटे नहीं। सभी संबंधित अधिकारी सुनिश्चित करें की सर्वे का कार्य पारदर्शिता और संवदेनशीलता के साथ हो। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि जहाँ गेहूँ, सरसों, चना, मसूर की फसल को ओलावृष्टि से 50 प्रतिशत से अधिक नुकसान हुआ है वहाँ प्रति हेक्टेयर 30 हजार रूपये की राहत राशि प्रदान की जाएगी। पशुओं की मृत्यु होने पर गाय-भैंस के मामले में 30 हजार रूपये प्रति पशु, बैल-भैंसा की मृत्यु होने पर 25 हजार रूपये, बछड़ा-बछड़ी की मृत्यु होने पर 16 हजार रूपये, बकरा-बकरी की मृत्यु होने पर 3 हजार रूपये तथा मुर्गा-मुर्गी की मृत्यु होने पर 60 रूपये प्रति मुर्गा-मुर्गी राहत राशि प्रदान की जायेगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कालीपीठ क्षेत्र में सार्वजनिक वितरण प्रणाली में गड़बड़ी करने की शिकायत मिलने पर प्रभारी जिला आपूर्ति

अधिकारी श्री सुरेश वर्मा और फूड इंस्पेक्टर श्री जसराम जाटव को निलंबित कर दिया। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि गरीबों का हक छीनने वाले बख्शे नहीं जायेंगे। उन्हें जेल भिजवाया जाएगा।मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि गरीबों का राशन खाने वालों की एफ.आई.आर. के साथ गिरफ्तारी भी हो। जिला कलेक्टर जिले की समस्त राशन दुकानों को चेक कराए। बेईमानी करने वाले बख्शे नही जाएँ। सार्वजनिक वितरण प्रणाली व्यवस्था पारदर्शी रहे। गरीबों का राशन वितरण अन्त्योदय समिति सदस्य अपनी निगरानी एवं देख-रेख में कराएँ, जिससे कोई भी हितग्राही परेशान न हो। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने राजगढ़ तहसील के छायन ग्राम में कृषक श्री हेमराज गोड़ के खेत में गेहूँ और सरसों की फसल का जायजा लिया। मुख्यमंत्री श्री चौहान को कृषक हेमराज ने बताया कि लगभग 18 बीघा कृषि भूमि में गेहूँ और सरसों की फसल की बोवनी की थी। ओलावृष्टि के कारण पूरी फसल नष्ट हो गई है, जिससे उन्हें काफी आर्थिक क्षति हुई। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने उन्हें आश्वस्त किया कि नुकसान का आंकलन कर राहत राशि दी जाएगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कृषकों एवं ग्रामीणों के साथ संवाद कर उनकी समस्याएँ सुनी और अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये।

नौकरी के साक्षात्कार के लिए खुद को कैसे करें तैयार

जिस कंपनी के साथ आपका साक्षात्कार हो रहा है, उसके बारे में अच्छी तरह से शोध करना चाहिए, क्योंकि आप यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आप व्यवसाय को समझें और साक्षात्कारकर्ता द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार का अनुमान लगा सकें। आप हॉट सीट पर बैठे हैं और आपकी हथेलियाँ पसीने से तर हैं; आवाज़ कांप रही है; चेहरा फूला हुआ है और मुंह सूखा है। शायद आपका दिल भी तेज़ी से दौड़ रहा है या आपके पेट में कुछ-कुछ हो रहा है। आप संभवतः घबरा रहे हैं। आप शायद नर्वस हैं। और ये स्वाभाविक भी है। वस्तुतः हर कोई नौकरी के साक्षात्कार में कभी-कभी घबरा जाता है। साक्षात्कार कदाचित कठिन होते हैं और जीवन बदल सकते हैं। अपना सर्वश्रेष्ठ पहनावा चुनने के अलावा, एक अच्छी रात की नींद लेना और सबसे कठिन सवालों के जवाब देने में सक्षम होना- इन सबके लिए यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं, जो आपकी नौकरी के साक्षात्कार में आपकी मदद करेंगे। एक दोस्त को बुलाएं और एक नकली नौकरी साक्षात्कार सेट करें। उनसे कठिनतम प्रश्न पूछें। उसे दोहराएँ। इतनी बार दोहराएं कि आप नींद में भी सबसे कठिन सवाल का आत्मविश्वास से जवाब दे सकें। अच्छी तरह से नौकरी के विवरण की समीक्षा करें और अच्छी तरह से तैयार होने के लिए कंपनी पर शोध करें।

आत्मविश्वासी बनें

याद रखिये कि आपका रिज्यूम सबसे अलग-थलग है और इसीलिए आपको कॉल-बैक मिला। जैसे ही आप प्रवेश करते हैं, किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में सोचें जिसकी आप प्रशंसा करते हैं और उनके गुणों पर विचार करें। याद करें कि यह व्यक्ति कैसे खुद को संकलित करता है, वो कैसे चलता है, बात करता है और दूसरों का स्वागत करता है। याद रखें कि वह व्यक्ति किस तरह से आत्मविश्वास से जीता है, और आज आप भी ऐसा ही करेंगे।

इस बात को समझें कि यह वक्त भी गुज़र जायेगा

नर्वस होना सामान्य बात है। याद रखें कि साक्षात्कारकर्ता ने आपको फोन नहीं किया होता, यदि आपको कंपनी के लिए एक अच्छा फिट कैंडिडेट नहीं माना जाता। आपके पास कंपनी को देने के लिए बहुत कुछ है और यह उनका नुकसान है अगर उन्हें अन्यथा निर्णय लेना पड़ा तो। अपने जॉब इंटरव्यू के बारे में सकारात्मक सोचें।

बस इसे आसानी से लीजिये

बिलकुल आसान समझिये इसे, यह जल्द ही खत्म हो जाएगा। साक्षात्कार कक्ष में आपके द्वारा बिताया गया हर मुश्किल क्षण आपके लिए एक गौरवशाली क्षण होता है। आराम से बैठें। आपने अच्छी तरह से तैयारी की है। और आप तैयार भी हैं। मुस्कराते रहिये, समय लगभग पूरा हो चुका है।

अपने व्यक्तित्व को चमकने दें

सभी साक्षात्कारकर्ता आपके बारे में जानते हैं कि उन्होंने आपके बायोडाटा में क्या देखा है। साक्षात्कार में अपने बारे में बताएं भाग में, यह आपके व्यक्तित्व को चमकने का समय है। बात करें कि आपके बुनियादी वैल्यूज कंपनी के लिए कैसे मेल खाते हैं। साक्षात्कारकर्ता द्वारा पूछे गए सभी सवालों का बड़ी सहजता से जवाब दें और किसी प्रकार के संदेह का निःसंकोच निवारण करें।

जल्दबाजी मत कीजिये

पर्याप्त समय लीजिये। साक्षात्कारकर्ता आमतौर पर लगभग एक घंटे का समय आवंटित करते हैं। अपने कॅरियर को उजागर करने के लिए इस समय का सदुपयोग करें, कंपनी के लिए आप क्या बेहतर कर सकते हैं, इस पर सुझाव दें और चर्चा करें कि आपके कॅरियर में ऐसा क्या खास है। अपने उत्तर के बारे में सोचें, भले ही आपने समय से पहले रिहर्सल किया हो। जवाब देने से पहले रुकें। इससे यह ऐसा प्रतीत होता है जैसे आप विचारशील हैं, लेकिन बातचीत के दौरान संघर्ष नहीं कर रहे हैं।

अपनी उत्कृष्टता को पेश करें

कंपनी नौकरी के लिए सर्वश्रेष्ठ योग्य उम्मीदवार की तलाश कर रही है। वह व्यक्ति आप हैं। एक साक्षात्कार मूल रूप से एक महत्वपूर्ण प्राथमिक चरण होता है। साक्षात्कारकर्ता जानना चाहता है कि क्या आप सबसे अच्छे समाधान वाले व्यक्ति हैं।

साक्षात्कार से पहले कुछ महत्वपूर्ण टिप्स

इंटरव्यू से पहले, इन उपयोगी पूर्व-साक्षात्कार टिप्स की समीक्षा करना सुनिश्चित करें, ताकि आप इस मीटिंग में आत्मविश्वास से भरे रहें और अपने संभावित नए नियोक्ता को प्रभावित करने के लिए तैयार रहें।

कंपनी पर व्यापक अनुसंधान करें

जिस कंपनी के साथ आपका साक्षात्कार हो रहा है, उसके बारे में अच्छी तरह से शोध करना चाहिए, क्योंकि आप यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि आप व्यवसाय को समझें और साक्षात्कारकर्ता द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों के प्रकार का अनुमान लगा सकें। अच्छे शोध जैसे- कंपनी के बारे में गूगल सर्च करें, उनकी वेबसाइट की समीक्षा करें, उसके उत्पाद और सर्विसेज इत्यादि का अवलोकन करें। जो लोग आप का साक्षात्कार लेंगे, उनके बारे में जानकारी प्राप्त करेंअपने साक्षात्कार से पहले, उन लोगों की सूची प्राप्त करने का प्रयास करें, जिनके साथ आप मिलेंगे। इसका उद्देश्य अपने साक्षात्कारकर्ताओं की पृष्ठभूमि और रुचियों के बारे में सीखना है ताकि एक तालमेल स्थापित करना आसान हो जाए। उनकी और कंपनी में उनकी भूमिका के बारे में रुचि दिखाएं।

पूछे जाने वाले प्रश्न पहले से ही सोच कर रखें

पूछे जाने वाले प्रश्नों के बारे में पहले से सोचना महत्वपूर्ण है, ताकि आप एक स्पष्ट प्रतिक्रिया तैयार कर सकें। इस प्रकार के सामान्य प्रश्न साक्षात्कार के दौरान अक्सर पूछे जाते हैं, जैसे- क्या आप मुझे अपने बारे में बता सकते हैं, आप हमारी कम्पनी के बारे में क्या जानते हैं, अपनी वर्तमान नौकरी क्यों छोड़ रहे हैं, इस नौकरी के बारे में आपकी क्यों दिलचस्पी है, आप अपनी सबसे बड़ी ताकत और कमज़ोरियाँ क्या मानते हैं, आपकी वेतन आवश्यकताएं क्या हैं, क्या आपके पास मेरे लिए कोई प्रश्न है?

विज़न ज़ीरो

परिवहन विभाग ने सड़क दुर्घटनाएँ रोकने और दुर्घटना में घायल लोगों की जान बचाने के लिए सुरक्षित प्रणाली पर आधारित विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना तैयार की है। विजन जीरो मध्यप्रदेश योजना पाँच स्तम्भों पर आधारित है। इसमें सुरक्षित गति, सुरक्षित रोड़, सुरक्षित वाहन, सुरक्षित चालक व्यवहार और दुर्घटना उपरांत सहायता शामिल है। परिवहन, पुलिस, राष्ट्रीय सड़क विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग, शिक्षण संस्थाओं, चिकित्सक व स्वयंसेवी संस्थाओं सहित सम्पूर्ण सामाज की भागीदारी से विजन जीरो मध्यप्रदेश को अमलीजामा पहनाया जाएगा। सभी लोग अपनी जवाबदेही निभाकर सड़क दुर्घटनायें रोकने में मददगार बनें। हम सबका नैतिक दायित्व है यदि दुर्घटना हो जाती है तो मानवता के नाते घायल को जल्द से जल्द अस्पताल पहुँचाएँ जिससे उसकी जान बचाई जा सके।

90% of ALL ACCIDENTS ARE LINKED TO HUMAN ERROR

THE BEHAVIORS OF ROAD USERS IS THE ARE WITH
BY FAR THE BIGGEST POTENTIAL FOR IMPROVING ROAD SAFETY

IN 30% OF FATAL ACCIDENTS SPEEDING IS THE MAIN FACTOR

DISTRACTION CAUSES 10-30% OF ROAD DEATHS

25% OF ALL ROAD FATALITIES IN EUROPE ARE ALCOHOL- RELATED

ABOUT 65% OF FATAL ACCIDENTS ARE CAUSED BY VIOLATIONS OF TRAFFIC RULES

EDUCATION AND TRAINING ARE CRUCIAL IN INSTILLING APPROPRIATE BEHAVIORS AND ATTITUDES IN ROAD USERS

CRACKING DOWN ON TRAFFIC OFFENCES WILL MAKE A DIFFERENCE

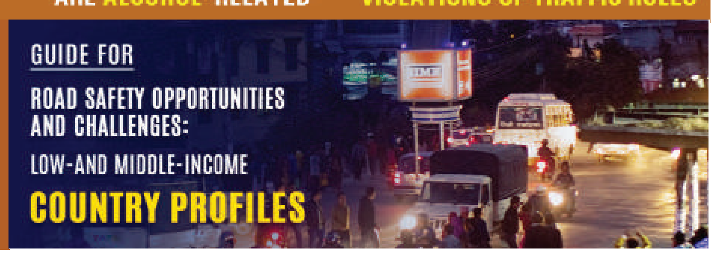

चम्बल की विश्व प्रसिद्ध अनोखी गजक

मुरैना की गजक नाम के प्रिय मिठाई है कि विदेशों तक के गजक -प्रेमियों में गजक की मांग सालभर बनी रहती है। गजक के उत्पादन में 'मुरैना' और चम्बल क्षेत्र की इस विशिष्ट पहचान का भी

डॉ. सुरेश सम्राट
वरिष्ठ संपादक, लेखक
8839261908

एक रोचक इतिहास है। इस इतिहास के पीछे चम्बल क्षेत्र उत्पादित होने वाला 'गन्ना' और ' तिल' से जुडे उपज का विशेष महत्व रहा है। इन दानो बस्तुओं की उपजों की गुणवत्ता से बनी गजक के नमुन कुटीर - उद्योग में आज गजक को विश्वपटल पर प्रतिष्ठित कर दिया है। उससे चम्बल की एक सकारात्मक प्रसिद्व एवं पहचान सिल सिला शुरू हुआ हैं, जो निरन्तर आगे बढ़ा रहा है। मुरैना में आयोजित गजक उत्सव उसी सिलसिले की एक शानदार शुरूआत है।

गजक का इतिहास गजक के समस्त इतिहास और उसके 'नामकरण' की सटीक जानकारी अभी भी रेगज का निवय है। लेकिन वर्तमान समय में इसके सौ साल की जानकारी उपलब्ध है। आज जो वरिष्ठ नागरिक सत्तर अस्सी साल की उम्र के है, उन्होने कुटीर उद्योग के रूप में गजक और रिबडी को सहज रूप् से अपने आस पास वनते हुए देखा हे।

सन 1904 में ग्वालियर रियासत में जिलों का पुनर्गठन किया गया । इसके अन्तर्गत चार तहसीलों जौरा, नुराबाद, अम्बाह और गोहद तहसीलों से इने तवरघार जिले का मुख्यालाय जौरा - अलापुर बनाया गया । जौरा में जिला मुख्यालय 1923 तक रहा और 1923 में मुरैना मुख्यालय बना । उस समय गन्ना, तिल्ली, कला, ज्वरा, बलारा कठिया में हूँ इस क्षेत्र की मुख्य फसले थी,। उच्च गुणतत्ता की तिल्ली और गन्ने के उत्पादन की बजह से गजक और रेबड़ी उस द्वौर की मिठाई

के ऐसे उत्पादन थे, जो उत्सव, प्रसाह और त्यौहार अनेक सांस्कृतिक अवसरों पर इस्तेमाल किए जाते थे। वैसे तो इनका निर्माण तहसील स्तरों पर अपने उपयोग के अनुरूप होता था लेकिन ग्रामो और घरों में तिल के लडू के स्वरूप में यह मिठाई बनती थी। मरक संक्रांति तो तिल और गुड का ऐसा सांस्कृतिक पर्व था जो आज और अधिक आस्था के साथ मनाया जाता है। और इसी पर्व का समय नये गुड़ और तिल्ली के दस्तक देने का समय होता है। उस दौर गजक और रेबड़ी के निर्माण के लिहाज से जौरा अलापुर एक अग्रणी क्षेत्र था । उस समय की गजक खस्ता कम लजीज ज्यादा होती थी। उस लजीज गजक का स्वाद जिसने चरण है वे आज भी उसे याद करते हैं खाते समय देर तक दॉत और जीम के बीच, चीपककर रस मरते हुए जब गले में उतरती थी तो एक अलग ही आनंद आता था। आज खत्त गजक की डिमाणु उस समय लकडी से जलबे वही मटटी, स्थानीय स्तर बने कड़ौड और अन्य औजारों से कारीगर गजक और रेबडी बनाते थे। गजक को कूटते, बनते और कटते देखने का मजा कीह कुछ और था। तब गजक बिस्कुट के आकार की नही बनाती थी आकार में ही बनती थी। बडे आकार में ही बनती थी। तौल को इस करने में उसे तोड़कर बेचा जाता था। रेबड़ी के बनने की विधि देखना तो एक अजीब से अनुभवन का आनंद देता रहे हैं। सुप्रसिद्व रंगकाली हवीब तनवीर ने जो दूरदर्शन पर अनेक बार दिखाया जा चुका है। अपने एक नाटक में तिल - गुड का एक लोकप्रिय गीत शामिल किया है। मुगलो के दौर के इस नाटक में इस गीत का सुनते हुए एक

सांस्कृतिक गौरब की अनुमूति होती है। और इससे यह अनुमान लगाया जासकता है। चम्बल क्षेत्र के तिल - गुड के उत्पादों का इतिहास बहुत पुराना है। यो तिल-गुड के साथ बाजारे के व्यज्जनों का भी अपना लोक इतिहास है, जो अब कुछ घरों तक सिमकता जा रहा

थे।

अच्छी गजक बनाने के लिए अच्छी से अच्छी तिल्ली और श्रेष्ठ गुणतत्ता वाला गुड आवश्यक है। आज मुरैना की गजक उसी क्वालिटी को बनाए रखने के कारण है।

हॉलो कि अब गजक निर्माताओं की इन दोनों कच्चे मालों की व्यवस्था के लिए अनेक प्रयत्न करने पडते हे। क्योकिं चम्बल क्षेत्र में अब तिल्ली की जगह सरसों के उत्पादन ने लेली है। समय के साथ अब परिकृत गजक सामने आ रही है। इसके उत्पादन में घी का उपयोग किया आ रहा है। बैसे मूलतः गजक गुड और तिल के तालमेल का उत्पादन हैं लेकिन शक्क की गजक कैर रबड रनाएँ की गजक जौसे उत्पादन भी पसंद किए जा रहे हैं।

ग्वालियर रियासत की एक रिपोर्ट के अनुसार सन 1935 के आसपास इस क्षेत्र में गुड का भाव 1 रूपये में 30 सेर और तिल्ली का भाव 1 रूपये में 20 सेर बजाया गया है। इस तरह की सहज उपलब्धि से घरेलू कुटीर उद्योग से प्रारम्भ हुई गजक की यात्रा आज विश्व पटल पर एक अनोखे स्वीट ब्रांड के रूप् में उभर रही है। अपना सांस्कृतिक महत्व रखने वाले तिल - गुड पूजा सामग्री के स्वरूप से लेकर चम्बल क्षेत्र में लोक गीतो में भी प्रतिसिद्व है। यदि इसे भी ब्रांड बनाया जाए तो यह चम्बल क्षेत्र के दुसरे अनोखे स्वीट के रूप में विकसित हो सकता है। गुड के साथ बेसन मिल जाए तो गुड़धानी हो जाती है। यो हमारा गुड़ मुगफली की गजक भी बना देता है। लाईसे मिलकर उसकी भी पटटी बना देता है। आज चम्बल में सरसों का भरमार है उसका तेल मुंग की दाल से मिलाकर जो मगोंड़े बनाता है, उसका ब्राड जौरा के मगोडे के नाम से भोपाल तक में देखा जा सकता है। अन्तराष्टीय व्यंजन विशेषज्ञों ने कढी को श्रेष्ठतक पोष्टिक आहारों में शामिल किया है। अगर व चम्बल की बढी चखलें तो उगलियों चाटते रह जाए। यो चम्बल का 'व्यज्जन गौरव' एक अलग किताब का निण्य है, जिसपर फिर कमी चर्चा होगी। बहरहाल संभागीय आयुक्त की गजक उत्सव कर पहल ने इसकी शुरूआत अवश्य कर दी है। हो एक बात और अपना काम निकालना अथवा अपने रिश्तों को मजबूत करने के लिए मुरैना की गजक का एक डिब्बा काफी है। यह सम्बन्धो और मैत्री में मिठाए भर देती है। तभी तो मुरैना की गजक के डिब्बे टेऊनो में मागते और हवाई जहाजों में उड़ते देखे जा सकते हैं।

गोपाचल का कच्छपघात राजवंश

भारत के मुगल कालीन इतिहास में कछवाहा अथवा कच्छपघात राजपुत्रों में महाराजा मानसिंह जैसे पराक्रमी योद्धा तथा सवाई जयसिंह जैसे विद्वान राजनीतिज्ञ राजाओ ने ख्याति अर्जित की है। आमेर , जयपुर के भवन उनकी परिष्कृति रुचि के परिचायक है। यद्यपि ठोस प्रमाण नही है किंतु यह मान्यता है कि आमेर के मीनाओ को पराजित कर वहाँ अपना राज्य स्थापित करने बाले कछवाहा राजपूतों का मूल स्थान गोपाचल ग्वालियर क्षेत्र ही है।

गोपाचल गिरि पर कच्छपघातों अधिकार सन 981ई. में हुआ । जब वज्रदामा ने गाधि नगर (कन्नौज) के किसी राजा को परास्त कर अपना अधिपत्य स्थापित किया। इस वंश का अंतिम शासक सुलक्षण पाल था जिससे सन 1200 ई. में ग्वालियर दुर्ग छीन लिया।लगभग 200 वर्ष तक गोपाचल गढ़ पर राज करने बाले इस राज वंश का इतिहास अत्यंत गौरवशाली है। ग्वालियर के कच्छपघातों के समानान्तर कच्छपघात वंश दो और शाखायें थी जो उस समय क्रमशः नलपुर अर्थात नरवर और डोभ कुण्ड श्योपुर में राज कर रही थी ।

सिंहोनिया मुरैना से प्राप्त वज्रदामा के उल्लेखयुक्त जैन मूर्ति लेख में वज्रदामा को वज्रदामा महाराजाधिराज लिखा है। सन 1088 ई के डोभ शिलालेख में सबसे पहिले कच्छपघात नाम का उल्लेख मिला है। कच्छपघात आज अपने आपको को कुशवाहा लिखते है । उनके भाट उन्हें दाशराथि राम के पुत्र कुश की संतति बतलाते है। उनका मूल राज्य उत्तर कौशल बतलाया जाता है जहाँ से चलकर सोन नदी के किनारे रोहताश्वगढ़ बनाया । यहीं से उनकी एक शाखा नरवर के ओर चली आई। कच्छपघातों की वह शाखा जिसने गोपाचल पर अधिकार किया था उसने आरम्भ में सिहोनियाँ कुतवार में ही शक्ति संचित की थी। सिंहोनिया आसान नदी के किनारे वर्तमान में मुरैना ज़िलान्तर्गत आती है। कभी यह नागकालीन राजधानी कान्तिपुरी के नाम से जानी जाती थी। खड़गराय ने इसे कुंतलपुरी कहा है संभव है कभी ये दोनों एक ही महानगर के भाग हो। पद्मनाथ (सासबहू) मंदिर के शिलालेख में इसे अद्भुत कहा गया है। कच्छपघात वंश राज लक्ष्मण ने संभवतःसन 950 ई आरम्भ किया। पद्मनाथ मंदिर के शिलालेख में उसे कच्छपघात वंशतिलक क्षोणीपति कहा गया है। उसका पुत्र वज्रदामा हुआ। वह प्रारम्भ में सिंहोनियाँ क्षेत्र पर ही राज कर रहा था। उसने प्रतिहारो की ओर से ग्वालियर दुर्ग पर नियुक्त कच्छपों को परास्त कर कच्छघात का विरुद धारण किया। वज्रदामा का पुत्र मंगलराज और मंगलराज के बाद उसका पुत्र कीर्तिराज कच्छपघात सिंहासन पर बैठा। पद्मनाथ मंदिर शिलालेख में उसके द्वारा मलावभूपति को युद्ध मे परास्त करने का उल्लेख है।कीर्तिराज के समय महमूद गज़नबी ने सन 1021 - 1022 ई. में ग्वालियर दुर्ग पर आक्रमण किया किंतु बिफल रहा। कीर्तिराज ने अपनी विजयों को अपने आराध्य को अर्पण करने के लिए अपनी राजधानी सिंह पानिया नगर में पार्वती पति शिव के एक विशाल प्रसाद का निर्माण कराया जो आज ककनमठ के नाम से प्रशिद्ध है। कीर्तिराज के बाद उसका पुत्र मूलदेव कच्छपघात राज्य का स्वामी बना। उसने अनेकों राजाओं को परास्त कर भुवनपाल का विरुद धारण किया। उसकी महारानी देवब्रता था तथा देवपाल और सूर्यपाल दो पुत्र थे। जब देवपाल राजा बना तब उसने अपना निवास गोपाचल को बनाया , सिंहोनियाँ का प्रशासक सूर्यपाल बना दिया गया। मूलदेव के समय मनोरथ कायस्थ मथुरा से गोपाचल आया । उसकी पत्नी का नाम भाषा था और माणिक चंद्र जिसने गोपाचल पर शिव तथा अन्य देवताओं के मंदिर बनवाये। मनोरथ कायस्थ के बारे में कहा जाता है कि उसकी गणित तत्व की विशेषज्ञता की प्रशंसा बृहस्पति भी नही कर सकते थे। देवपाल के बाद उसका पुत्र पदमपाल राजा बना जो अत्यंत पराक्रमी था। उसने डाकूओं का उन्मूलन कर व्यापार को सुरक्षित बनाया। उसके समय ग्वालियर और सिंहोनिया व्यापार के प्रमुख केंद्र बन गए। पदमपाल ने गोपाचल गढ़ पर एक विशाल विष्णुमन्दिर का निर्माण आरम्भ कराया जिसे बाद में महिपाल ने पूर्ण कराया । यह मंदिर सासबहू का मंदिर कहलाता है। पदमपाल की असमय मृत्यु के कारण उसके भाई सूर्यपाल का पुत्र महिपाल कच्छपघात वंश का राजा बना। सूर्यपाल ने पुत्रलाभ के लिए सिंहोनिया में अम्बिका देवी का मंदिर बनबाया और उसके सामने दो कुण्ड बनबाये। यह मंदिर आज भी मौजूद है। प्रशास्तिकार मणिकंठ ने महिपाल के राज्याभिषेक एवं पद्मनाथ मंदिर के बारे में विशद विवरण दिया है। महिपाल के समय गोपाचल पर कच्छपघातों की राजधानी स्थापित हो चुकी थी। सन 1104 ई में महिपाल की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रत्नपाल गद्दी पर बैठा जो सन 1135 ई तक शासक रहा ।उसके बाद गोपाचल के कच्छपघातों का इतिहास स्पष्ट नही है। पर यह सही है कि जब कुतुबुद्दीन ऐबक ने ग्वालियर गढ़ पर आक्रमण किया तब सुलक्षण पाल ने उसका सामना किया और परास्त हुआ इसी के साथ गोप क्षेत्र के इस प्रतापी राजवंश निष्प्रभावी हो गया।

महान कवि हरिवंशराय बच्चन

हिंदी साहित्य में हालावाद के प्रवर्तक एवं मूर्धन्य कवि हरिवंशराय बच्चन उत्तर छायावाद काल के प्रमुख कवियों में से एक हैं। हरिवंशराय बच्चन का जन्म 27 नवंबर, 1907 में इलाहाबाद से सटे प्रतापगढ़ जिले में एक छोटे से गांव बाबूपट्टी में कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम प्रतापनारायण श्रीवास्तव तथा माता का नाम सरस्वती देवी था। उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एमए किया।

हाला, प्याला और मधुशाला के प्रतीकों से जो बात इन्होंने कही है, वह हिंदी की सबसे अधिक लोकप्रिय कविताएं स्थापित हुईं। दरअसल उनका वास्तविक नाम हरिवंश श्रीवास्तव था। इनको बाल्यकाल में बच्चन कहा जाता था, जिसका शाब्दिक अर्थ बच्चा या संतान होता है। बाद में वे इसी नाम से मशहूर हुए। बच्चन ने सीधी, सरल भाषा मे साहित्यिक रचना की। आत्म परिचय व दिन जल्दी जल्दी ढलता है इनकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। दिन जल्दी जल्दी ढलता है में उन्होंने मानव जीवन की नश्वरता को स्पष्ट करते हुए दर्शन तत्व को उद्घाटित करने का सार्थक प्रयास किया है। बच्चन मुख्यतः मानव भावना, अनुभूति, प्राणों की ज्वाला तथा जीवन संघर्ष के आत्मनिष्ट कवि हैं। उनकी कविताओं में भावुकता के साथ ही रस और आनंद भी दिखाई देता है। उनके गीतों में बौद्धिक संवेदन के साथ ही गहन अनुभूति भी है। साहित्य शिल्पी बच्चन की कविता सुनकर श्रोता झूमने लगते थे। वे कहा करते थे सच्चा पाठक वही है जो सहृदय हो। विषय और शैली की दृष्टि से स्वाभाविकता बच्चन की कविताओं की विशेषता है। उनकी कविताओं में रूमानियत और कसक है। वहीं गेयता, सरलता, सरसता के कारण इनके काव्य संग्रहों को काफी पसंद किया गया। बच्चन ने सन 1935 से 1940 के बीच व्यापक निराशा के दौर में मध्यम वर्ग के विक्षुब्ध और वेदनाग्रस्त मन को वाणी दी।

बच्चन का जन्म 27 नवंबर, 1907 में इलाहाबाद से सटे प्रतापगढ़ जिले में एक छोटे से गांव बाबूपट्टी में कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम प्रतापनारायण श्रीवास्तव तथा माता का नाम सरस्वती देवी था। उन्होंने प्रयाग विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में एमए किया और पीएचडी की उपाधि कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से प्राप्त की तथा प्रयाग विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया। कुछ समय तक वे आकाशवाणी के साहित्यिक कार्यक्रमों से भी संबद्ध रहे। उनका विवाह 19 वर्ष की अवस्था में ही श्यामा के साथ हो गया था। सन 1936 में श्यामा की क्षय रोग से अकाल मृत्यु हो गई थी। इसके पांच वर्ष पश्चात 1941 में बच्चन ने तेजी सूरी के साथ प्रेम विवाह किया। तेजी संगीत और रंगमंच से जुड़ी हुई थी। तेजी बच्चन से उन्हें दो पुत्र हुए। अमिताभ एवं अजिताभ। अमिताभ बच्चन हिंदी सिनेमा के एक ख्यातनाम अभिनेता हैं। बच्चन ने आत्मपरकता, निराशा, वेदना जैसे विषयों पर आधारित कविताएं लिखीं। मात्र 13 वर्ष की छोटी सी उम्र से बच्चन ने लिखना प्रारंभ किया था। एक अध्यापक, कवि, लेखक बच्चन ने अपनी कविता, कहानी, बाल साहित्य, आत्मकथा, रचनावली से बहुत लोकप्रियता हासिल की। तेरा हार बच्चन का प्रथम काव्य-संग्रह है पर 1935 में प्रकाशित मधुशाला से बच्चन का नाम एक गगनभेदी रॉकेट की तरह साहित्य जगत पर छा गया। इसी कृति से हिंदी साहित्य में हालावाद का उन्मेष हुआ। यद्यपि हालावाद की उत्पत्ति, विकास और समाप्ति की कहानी बच्चन की तीन पुस्तकों मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश में ही सीमित होकर रह गई। इनका प्रकाशन एक-एक वर्ष के अंतराल से हुआ। इनमें बच्चन ने यौवन, सौन्दर्य, और मस्ती के मादक गीत गाए थे। उस समय नवयुवकों में ये अत्यंत लोकप्रिय हुई थी, किंतु हालावाद एक झौंके की तरह आया और लुप्त हो गया। कारण हालावाद का कवि जगत और समाज से तटस्थ था, उसे विश्व से कोई मतलब न था।

इस तरह की अनुभूतियों का सामाजिक सरोकारों से कोई लेना-देना नहीं था। इसके बाद निशा-निमंत्रण, एकांत-संगीत, सतरंगिनी, मिलन-यामिनी आदि अनेक काव्य प्रकाशित और लोकप्रिय हुए। आकुल अंतर, हलाहल, प्रणय पत्रिका, बुद्ध और नाचघर उनके अन्य काव्य-संग्रह हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने तीन खण्डों में अपनी आत्मकथा क्या भूलूं क्या याद करूं लिखी। साथ ही उन्होंने अनेक समीक्षात्मक निबंध लिखें और शेक्सपियर के कई नाटकों का अनुवाद भी किया। निस्संदेह हिंदी में कवि सम्मेलन परंपरा को सुदृढ़, गरिमापूर्ण, जनप्रिय तथा प्रेरक बनाने में बच्चन का असाधारण योगदान रहा है। उनकी कृति दो चट्टानें को 1968 में हिंदी कविता का साहित्य अकादमी पुरस्कार प्रदान हुआ। इसी वर्ष उन्हें सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार तथा एफ्रो एशियाई सम्मेलन के कमल पुरस्कार से भी नवाजा गया। आत्मकथा क्या भूलूं क्या याद करूं के लिए उन्हें बिड़ला फाउंडेशन ने सरस्वती सम्मान प्रदान किया। सन 1976 में उन्हें भारत सरकार द्वारा साहित्य एवं शिक्षा के क्षेत्र में पद्मभूषण से नवाजा गया। बच्चन की कविता के साहित्यिक महत्व के बारे में अनेक मत हो सकते हैं और हैं, किंतु उनके काव्य की विलक्षण लोकप्रियता को सभी स्वीकारते हैं।

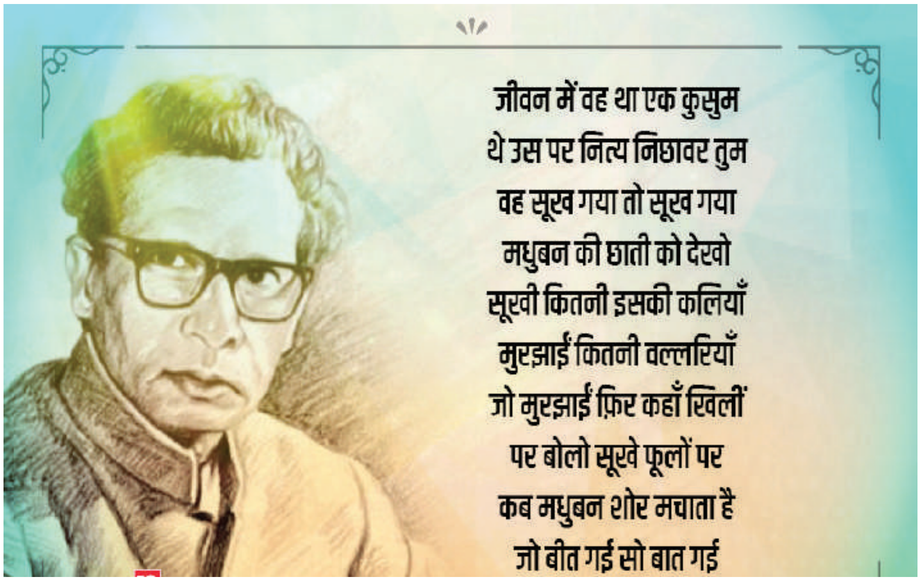

वे हिन्दी के लोकप्रिय कवि रहे हैं और उनकी कृति मधुशाला ने लोकप्रियता के सभी रिकॉर्ड तोड़े हैं। इसका कारण है कि बच्चन ने अपनी कविता के लिए तब जमीन तलाश की, जब पाठक छायावाद की अतीन्द्रिय और अतिवैयक्तिक सूक्ष्मता से उकता रहे थे। उन्होंने सर्वग्राह्य, गेय शैली में संवेदनसिक्त अभिधा के माध्यम से अपनी बात कही तो हिंदी का काव्य रसिक सहसा चौंक पड़ा। उन्होंने सयत्न ऐसा किया हो, ऐसा नहीं है, वे अनायास ही इस राह पर निकल पड़े। उन्होंने काव्य सृजन के लिए अनुभूति से प्रेरणा प्राप्त की तथा अनुभूति को ही काव्यात्मक अभिव्यक्ति देना अपना ध्येय बनाया। उनकी प्रसिद्ध रचना अग्निपथ में वह लिखते हैं- वृक्ष हो भले खड़े, हो घने हो बड़े, एक पत्र छांह भी, मांग मत, मांग मत, मांग मत, अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ। छायावाद के कवि डॉ. बच्चन के व्यक्तित्व व कृतित्व को साधारण लेखक लेखनी में नहीं बांध सकता। कवि ने जीवन के उल्लास में मृत्यु के पार की कल्पना करते हुए भी खूब लिखा- इस पार, प्रिये मधु है तुम हो, उस पार न जाने क्या होगा ! हरिवंशराय बच्चन का देहांत 18 जनवरी 2003 में सांस की बीमारी के वजह से मुंबई में हुआ था।

पूरे जीवन मुगलों से लड़ते रहे पर कभी हार नहीं मानी महाराणा प्रताप ने

महाराणा प्रताप मेवाड़ के शासक और एक वीर योद्धा थे जिन्होंने कभी अकबर की अधीनता स्वीकार नही की। उनका जन्म सिसोदिया कुल में हुआ था। महाराणा प्रताप जीवनपर्यन्त मुगलों से लड़ते रहे और कभी हार नही मानी। महाराणा प्रताप का जन्म 9 मई 1540 को राजस्थान के कुम्भलगढ़ में हुआ था। उनके पिता का नाम महाराणा उदय सिंह द्वितीय और माता का नाम रानी जीवंत कंवर (जयवंता बाई) था। महाराणा प्रताप अपने पच्चीस भाइयो में सबसे बड़े थे इसलिए उनको मेवाड़ का उत्तराधिकारी बनाया गया। वो सिसोदिया राजवंश के 54वें शासक कहलाते हैं।

महाराणा प्रताप को बचपन में ही ढाल तलवार चलाने का प्रशिक्षण दिया जाने लगा क्योंकि उनके पिता उन्हें अपनी तरह कुशल योद्धा बनाना चाहते थे। बालक प्रताप ने कम उम्र में ही अपने अदम्य साहस का परिचय दे दिया था। धीरे धीरे समय बीतता गया। दिन महीनों में और महीने सालों में परिवर्तित होते गये। इसी बीच प्रताप अस्त्र शस्त्र चलाने में निपुण हो गये।

महाराणा प्रताप के काल में दिल्ली पर अकबर का शासन था और अकबर की नीति हिन्दू राजाओं की शक्ति का उपयोग कर दूसरे हिन्दू राजा को अपने नियन्त्रण में लेना था। 1567 में जब राजकुमार प्रताप को उत्तराधिकारी बनाया गया उस वक्त उनकी उम्र केवल 27 वर्ष थी और मुगल सेनाओं ने चित्तौड़गढ़ को चारों ओर से घेर लिया था। उस वक्त महाराणा उदय सिंह मुगलों से भिड़ने की बजाय चित्तौड़गढ़ छोड़कर परिवार सहित गोगुन्दा चले गये। वयस्क प्रताप सिंह फिर से चित्तौड़गढ़ जाकर मुगलों से सामना करना चाहते थे लेकिन उनके परिवार ने चित्तौड़गढ़ जाने से मना कर दिया।

गोगुन्दा में रहते हुए महाराणा उदय सिंह और उसके विश्वासपात्रों ने मेवाड़ की अस्थायी सरकार बना ली थी। 1572 में महाराणा उदय सिंह अपने पुत्र प्रताप को महाराणा का ख़िताब देकर मृत्यु को प्राप्त हो गये। वैसे महाराणा उदय सिंह अपने अंतिम समय में अपनी प्रिय पत्नी रानी भटियानी के प्रभाव में आकर उनके पुत्र जगमाल को राजगद्दी पर बिठाना चाहते थे। महाराणा उदय सिंह के मृत्यु के बाद जब उनके शव को श्मशान तक ले जाया जा रहा था तब प्रताप भी उस शवयात्रा में शामिल हुए थे जबकि परम्परा के अनुसार राजतिलक के वक्त राजकुमार प्रताप को पिता के शव के साथ जाने की अनुमति नहीं होती थी बल्कि राजतिलक की तैयारी में लगना पड़ता था। प्रताप ने राजपरिवार की इस परिपाटी को तोड़ा था और इसके बाद ये परम्परा कभी नहीं निभायी गयी।

प्रताप ने अपने पिता की अंतिम इच्छा के अनुसार उसके सौतेले भाई जगमाल को राजा बनाने का निश्चय किया लेकिन मेवाड़ के विश्वासपात्र चुंडावत राजपूतों ने जगमाल के सिंहासन पर बैठने को विनाशकारी मानते हुए जगमाल को राजगद्दी छोड़ने को बाध्य किया। जगमाल सिंहासन को छोड़ने का इच्छुक नहीं था लेकिन बदला लेने के लिए अजमेर जाकर अकबर की सेना में शामिल हो गया और उसके बदले उसको जहाजपुर की जागीर मिल गयी। इस दौरान राजकुमार प्रताप को मेवाड़ के 54वें शासक के साथ महाराणा का ख़िताब मिला।

1572 में प्रताप सिंह मेवाड़ के महाराणा बन गये थे लेकिन वो पिछले पांच सालों से चित्तौड़गढ़ कभी नहीं गये थे। उनका जन्म स्थान और चित्तौड़गढ़ का किला महाराणा प्रताप को पुकार रहा था। महाराणा प्रताप को अपने पिता के चित्तौड़गढ़ को पुनः देख बिना मौत हो जाने का बहुत अफ़सोस था। अकबर ने चित्तौड़गढ़ पर तो कब्जा कर लिया था लेकिन मेवाड़ का राज अभी भी उससे दूर था। अकबर ने कई बार अपने हिंदुस्तान के जहापनाह बनने की चाह में कई दूतों को महाराणा प्रताप से संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए भेजा लेकिन हर बार राणा प्रताप ने शांति संधि करने की बात कही लेकिन मेवाड़ की प्रभुता उनके पास ही रहेगी। 1573 में संधि प्रस्तावों को ठुकराने के बाद अकबर ने मेवाड़ का बाहरी राज्यों से सम्पर्क तोड़ दिया और मेवाड़ के सहयोगी दलों को अलग थलग कर दिया जिसमें से कुछ महाराणा प्रताप के मित्र और रिश्तेदार थे। अकबर ने चित्तौड़गढ़ के सभी लोगों को प्रताप की सहायता करने से मना कर दिया।

महाराणा प्रताप ने मुगलों से सामना करने के लिए अपनी सेना को सचेत कर दिया। प्रताप ने अपनी सेना को मेवाड़ की राजधानी कुम्भलगढ़ भेज दिया। उसने अपने सैनिकों को अरावली की पहाड़ियों में चले जाने की आज्ञा दी और दुश्मन के लिए पीछे कोई सेना नही छोड़ी। महाराणा युद्ध उस पहाड़ी इलाके में लड़ना चाहते थे जिसके बारे में मेवाड़ सेना आदि थी लेकिन मुगल सेना को बिलकुल भी अनुभव नहीं था। अपने राजा की बात मानते हुए उनकी सारी सेना पहाड़ियों की ओर कूच कर गयी। अरावली पहाड़ियों पर रहने वाले भील भी राणा प्रताप की सेना के साथ हो गये। महाराणा प्रताप खुद जंगलों में रहे ताकि वो जान सकें कि स्वंत्रतता और अधिकारों को पाने के लिए कितना दर्द सहना पड़ता है। उन्होंने पत्तल में भोजन किया, जमीन पर सोये और दाढ़ी नहीं बनाई। दरिद्रता के दौर में वो कच्ची झोपड़ियों में रहते थे जो मिट्टी और बांस की बनी होती थीं।

संगीत एवं नृत्य परंपरा का सितारा थे बिरजू महाराज

पंडित बिरजू महाराज का सृजन, नृत्य एवं संगीत मनोरंजन एवं व्यावसायिकता के साथ आध्यात्मिकता एवं सृजनात्मकता का आभामंडल निर्मित करने वाला है। उनका संगीत, नृत्य एवं गायन का उद्देश्य आत्माभिव्यक्ति, प्रशंसा या किसी को प्रभावित करना नहीं, अपितु स्वान्तः सुखाय, पर-कल्याण एवं ईश्वर भक्ति की भावना है। इसी कारण उनका शास्त्रीय गायन, नर्तन एवं स्वरों की साधना सीमा को लांघकर असीम की ओर गति करती हुई दृष्टिगोचर होती है। उनका गायन एवं नृत्य हृदयग्राही एवं प्रेरक है क्योंकि वह सहज एवं हर इंसान को आत्ममुग्ध करने, झकझोरने एवं आनन्द-विभोर करने में सक्षम है। भगवान श्रीकृष्ण की जीवंतता को साकार करने वाला यह महान् कलाकार सदियों तक अपनी शास्त्रीय-संगीत साधना एवं कथक नृत्य के बल पर हिन्दुस्तान की जनता पर अपनी अमिट छाप कायम रखेगा। कत्थक के सरताज पंडित बिरजू महाराज नहीं रहे। उनके निधन से आज भारतीय संगीत की लय थम गई, सुर मौन हो गए, भाव शून्य हो गए। वे शास्त्रीय कथक नृत्य के लखनऊ कालिका-बिन्दादिन घराने के विश्वप्रसिद्ध अग्रणी नर्तक थे, जिन्होंने इस गौरवशाली परंपरा की सुगंध विश्व भर में प्रसारित की। बिरजू महाराज के अनंत में विलीन होने से गहन सन्नाटा छा गया है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत एवं कथक नृत्य का दुनिया में विशिष्ट स्थान है, क्योंकि यह सत्य, शिवं और सौन्दर्य की युगपत् उपासना की सिद्ध एवं चमत्कारी अभिव्यक्ति है।

बिरजू महाराज का जन्म 4 फरवरी, 1938 को कत्थक नृत्य के लिये प्रसिद्ध जगन्नाथ महाराज के घर हुआ था, जिन्हें लखनऊ घराने के अच्छन महाराज कहा जाता था। ये रायगढ़ रजवाड़े में दरबारी नर्तक हुआ करते थे। बिरजू का नाम पहले दुखहरण रखा गया था, क्योंकि ये जिस अस्पताल पैदा हुए थे, उस दिन वहाँ उनके अलावा बाकी सब कन्याओं का ही जन्म हुआ था, यानी गोपियों के बीच श्रीकृष्ण, उसी कारण उनका नाम बृजमोहन रख दिया गया। यही नाम आगे चलकर 'बिरजू' और 'बिरजू महाराज' हो गया। वे भारतीय संगीत जगत का एक उज्जवल नक्षत्र थे। पारम्परिक कौशल, रचनात्मकता एवं संवेदनशीलता से युक्त कालिका-बिन्दादिन घराने के प्रतिनिधि गायक एवं नर्तक पद्मविभूषण बिरजू महाराज गायन एवं कथक नर्तन में कल्पनाशील विस्तार, गहन अलौकिकता और अचूक कलात्मक संयम एवं वैभव के लिये विख्यात हैं। हिन्दुस्तान के कथक नृत्य एवं गायन में सात दशकों के अनुभव के आधार पर कहा जा सकता है कि वे अपनी कला के अकेले महारथि थे। उन्होंने शास्त्रीय संगीत एवं कला को लोकरंजन का साधन बनाने के लिये क्लिष्टता को दूर उसे सुगम बनाया। ईश्वर को आलोकपुंज मानते हुए उससे एकाकार होकर अपनी कला को प्रस्तुति देते हुए बिरजु महाराज ऐसा प्रतीत कराते थे, मानो उनका ईश्वर से सीधा साक्षात्कार हो रहा है। यही कारण है कि उनकी नृत्यकला एवं संगीत साधना से रू-ब-रू होने वाले असंख्य लोग उनकी साधना में गौता लगाते हुए मंत्रमुग्ध हो जाते थे। ऐसे गुणों के भंडार पंडित बिरजू महाराज के जीवन का वर्णन करना संभव नहीं। हम सभी जानते हैं कि बिरजू महाराज कथक नृत्य के एक मुर्धन्य कलाकार थे। परंतु इसके इलावा भी जो उनके अलग विषयों में भी दखल था जिनमें उनका तबला वादन भी अनूठा एवं बेजोड़ था। और उनकी ठुमरी गायकी पर जो दखल था वह हम सभी भली भांति जानते हैं। कुछ फिल्मों में भी

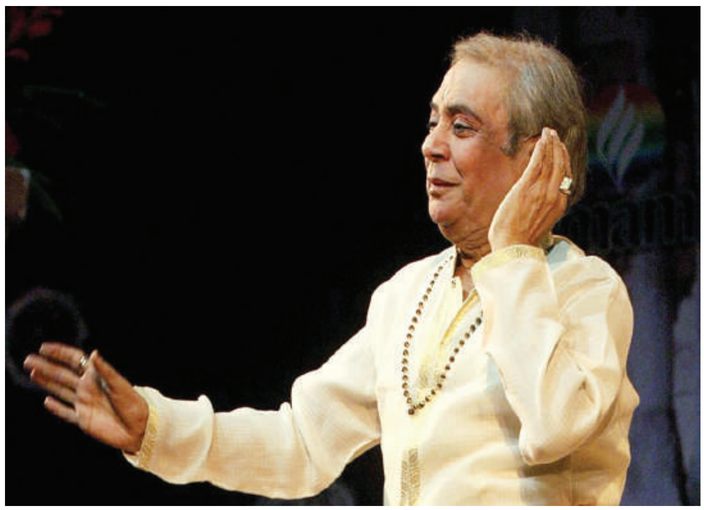

उन्होंने अपना गायकी का परिचय दिया हैं। उनके कथक नृत्य के तो सभी दीवाने थे पर उनका यह चौमुखी विद्या गुण उन्हें सबसे अलग रखता था। जैसे संयम नटराज हमारे बीच से आज विदा लेकर चले गए। उनका यह स्थान कोई पूरा नहीं कर सकता। कत्थक संसार की एक पाठशाला आज वीरान हो गई।

बिरजू महाराज की ख्याति फिल्मी दुनिया तक भी पहुंची और इन्होंने सत्यजीत राय की फिल्म शतरंज के खिलाड़ी की संगीत रचना की, तथा उसके दो गानों पर नृत्य के लिये गायन भी किया। इसके अलावा वर्ष 2002 में बनी हिन्दी फिल्म देवदास में एक गाने 'काहे छेड़ छेड़ मोहे' का नृत्य संयोजन भी किया। इसके अलावा अन्य कई हिन्दी फिल्मों जैसे डेढ़ इश्किया, उमराव जान तथा संजय लीला भंसाली निर्देशित बाजी राव मस्तानी में भी कत्थक नृत्य के संयोजन किये। दिल तो पागल है, गदर एक प्रेम कथा जैसी हिट फिल्मों में अपने गायन और अपने नृत्य से इन फिल्मों में अपनी छाप छोड़ी। बिरजू महाराज को अपने क्षेत्र में आरम्भ से ही काफी प्रशंसा एवं सम्मान मिले, जिनमें 1986 में पद्म विभूषण, संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा कालिदास सम्मान प्रमुख हैं। इनके साथ ही इन्हें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय एवं खैरागढ़ विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट की मानद उपाधि मिली। 2016 में हिन्दी फिल्म बाजीराव मस्तानी में 'मोहे रंग दो लाल' गाने पर नृत्य-निर्देशन के लिये फिल्मफेयर पुरस्कार मिला, 2002 में लता मंगेश्कर पुरस्कार से भी नवाजा गया।

नये भारत के निर्माता थे स्वामी विवेकानन्द

स्वामी विवेकानन्द का जन्म 12 जनवरी,1863 में हुआ। नरेन्द्र ने अपने परिवार को 25 की उम्र में छोड़ दिया और एक साधु बन गए। स्वामी विवेकानन्द का जन्म दिन भारत में युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसमें कोई शक नहीं कि स्वामीजी आज भी अधिकांश युवाओं के आदर्श हैं। उनकी हमेशा यही शिक्षा रही कि आज के युवक को शारीरिक प्रगति से ज्यादा आंतरिक प्रगति की जरूरत है। वे युवकों में जोश भरते हुए कहा करते थे कि उठो मेरे शेरों! इस भ्रम को मिटा दो कि तुम निर्बल हो। हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी नया भारत निर्मित करने की बात कर रहे हैं, उसका आधार स्वामी विवेकानन्द की शिक्षाएं एवं प्रेरणाएं ही है। मोदी स्वामी विवेकानंद को अपना आदर्श मानते हैं। भारतीय संस्कृति एवं स्वामीजी की सोच को विश्वव्यापी विस्तार देने की प्रक्रिया के लिये आज मोदी निरन्तर अथक प्रयास कर रहे हैं। जब से उन्होंने देश की बागडोर अपने हाथों में ली है, तब से सनातन संस्कृति की शिक्षा को आधार मानते हुए इसके प्रसार के लिए वे 'अग्रदूत' की भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। नरेन्द्रनाथ से नरेन्द्र मोदी की नया भारत बनाने की यह यात्रा भारत के सशक्तिकरण एवं विश्वगुरु बनने की प्रक्रिया है।

भारत को आर्थिक एवं भौतिक ही नहीं बल्कि आध्यात्मिक दृष्टि से शक्तिसम्पन्न राष्ट्र बनाने का सफल प्रयत्न करने वाले महानायक का नाम है स्वामी विवेकानन्दजी। वे एक सिद्धपुरुष एवं संस्कृतिपुरुष थे। नैतिक मूल्यों के विकास एवं युवा चेतना के जागरण हेतु कटिबद्ध, मानवीय मूल्यों के पुनरुत्थान के सजग प्रहरी, अध्यात्म दर्शन और संस्कृति को जीवंतता देने वाली संजीवनी बूंटी, भारतीय संस्कृति एवं भारतीयता के प्रखर प्रवक्ता, युगीन समस्याओं के समाधायक, अध्यात्म और विज्ञान के समन्वयक, वेदान्त के विख्यात और प्रभावशाली आध्यात्मिक गुरु हैं स्वामी विवेकानन्द।

स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका स्थित शिकागो में सन् 1893 में आयोजित विश्व धर्म महासभा में भारत की ओर से सनातन धर्म का प्रतिनिधित्व किया था। भारत का आध्यात्मिकता से परिपूर्ण वेदान्त दर्शन अमेरिका और यूरोप के हर एक देश में उनके प्रयासों एवं प्रस्तुति के कारण ही पहुँचा। उन्होंने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की थी जो आज भी भारतीय संस्कृति एवं आध्यात्मिक मूल्यों को सुदृढ़ कर रहा है। वे रामकृष्ण परमहंस के सुयोग्य शिष्य थे। वे जहां आर्थिक समृद्धि के प्रबल समर्थक थे, वही लोकतांत्रिक मूल्यों को बल देने वाले महानायक भी थे। स्वामी विवेकानंद के अनुसार ''लोकतंत्र में पूजा जनता की होनी चाहिए। क्योंकि दुनिया में जितने भी पशु-पक्षी तथा मानव हैं वे सभी परमात्मा के अंश हैं।'' स्वामी जी ने युवाओं को जीवन का उच्चतम सफलता का अचूक मंत्र इस विचार के रूप में दिया था- ''उठो, जागो और तब तक मत रूको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाये।''

स्वामी विवेकानन्द की मेघा के दर्पण से वेदान्त, दर्शन, न्याय, तर्कशास्त्र, समाजशास्त्र, योग, विज्ञान, मनोविज्ञान आदि बहुआयामी पावन एवं उज्ज्वल बिम्ब उभरते रहे। वे अतुलनीय संपदाओं के धनी थे। वे दर्शन, धर्म, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, कला और साहित्य के एक उत्साही

पाठक थे। इनकी वेद, उपनिषद, भगवद् गीता, रामायण, महाभारत और पुराणों के अतिरिक्त अनेक हिन्दू शास्त्रों में गहन रूचि थी। उनको बचपन में भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रशिक्षित किया गया था और ये नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम में व खेलों में भाग लिया करते थे। उन्होंने पश्चिमी तर्क, पश्चिमी दर्शन और यूरोपीय इतिहास का अध्ययन किया। 1881 में इन्होंने ललित कला की परीक्षा उत्तीर्ण की, और 1884 में कला स्नातक की डिग्री पूरी कर ली।

विवेकानन्द बड़े स्वप्नदृष्टा थे। उन्होंने एक ऐसे समाज की कल्पना की थी जिसमें धर्म या जाति के आधार पर मनुष्य-मनुष्य में कोई भेद न रहे। उन्होंने वेदान्त के सिद्धान्तों को इसी रूप में रखा। अध्यात्मवाद बनाम भौतिकवाद के विवाद में पड़े बिना भी यह कहा जा सकता है कि समता के सिद्धान्त का जो आधार उन्होंने दिया उससे सबल बौद्धिक आधार शायद ही ढूँढा जा सके। उन्होंने कहा था कि मुझे बहुत से युवा संन्यासी चाहिये जो भारत के ग्रामों में फैलकर देशवासियों की सेवा में खप जायें। वे पुरोहितवाद, धार्मिक आडम्बरों, कठमुल्लापन और रूढ़ियों के सख्त खिलाफ थे। उन्होंने धर्म को मनुष्य की सेवा के केन्द्र में रखकर ही आध्यात्मिक चिंतन किया था। उनका हिन्दू धर्म अटपटा, लिजलिजा और वायवीय नहीं था। उन्होंने यह विद्रोही बयान दिया था कि इस देश के तैंतीस करोड़ भूखे, दरिद्र और कुपोषण के शिकार लोगों को देवी-देवताओं की तरह मन्दिरों में स्थापित कर दिया जाये और मन्दिरों से देवी देवताओं की मूर्तियों को हटा दिया जाये। उनका यह कालजयी आह्वान एक बड़ा प्रश्नवाचक चिन्ह खड़ा करता है। उनके इस आह्वान को सुनकर पूरे पुरोहित वर्ग की घिग्घी बँध गई थी।

अध्यात्म एवं विज्ञान में समन्वय एवं आर्थिक समृद्धि के प्रबल समर्थक विवेकानंद जी केवल भारत के ही गुरू नहीं वरन् वह जगत गुरू के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व करने की उपयुक्त योग्यता रखते थे उन्होंने अपने गुरू रामकृष्ण परमहंस से विभिन्न धर्मों के सारभौतिक सत्य को आत्मसात किया था। नवयुग का नवीन दर्शन और नवीन विज्ञान है- वैज्ञानिक अध्यात्म। स्वामी जी का मानना था कि अध्यात्म एवं विज्ञान में समन्वय के विचारों में विश्व की सभी समस्याओं के समाधान निहित हैं। विज्ञान की कोशिश है कि लोगों का भौतिक जीवन बेहतर हो, जबकि अध्यात्म का प्रयास है कि प्रार्थना आदि उपायों से इन्सान सच्ची राह चले। विज्ञान और अध्यात्म के मिलन से तेजस्वी नागरिक का निर्माण होता है। तर्क और युक्ति विज्ञान व अध्यात्म के मूल तत्त्व हैं। धार्मिक व्यक्ति का लक्ष्य आध्यात्मिक अनुभूति प्राप्त करना है, जबकि वैज्ञानिक का मकसद कोई महान् खोज या अविष्कार करना होता है। यदि जीवन के ये दो पहलू आपस में मिल जाएँ तो हम चिन्तन के उस शिखर पर पहुँच जाएँगे जहाँ उद्देश्य एवं कर्म एक हो जाते हैं। इस आधार पर उच्चतम विकसित समाज का निर्माण साकार होगा।

सर्दियों में गले की खराश से हैं परेशान तो अपनाएं ये घरेलू उपाय

अगर ठण्ड लग जाए और लगातार खांसी आने लगे तो गले में दर्द और हल्?की सूजन से हम परेशान हो जाते हैं। सर्दियों में होने वाली गले में खराश के कई कारण हो सकते हैं जैसे ठंड लगना या कुछ ठंडा खा लेना। ऐसे में लोग आमतौर पर सिरप या गोलियों का सहारा लेते हैं। सर्दियों में ठंड हवा का असर सबसे पहले गले पर होता है। इस मौसम में खांसी-जुखाम के अलावा गले की खराश भी एक आम समस्या है जो बहुत परेशान कर देती है। अगर ठण्ड लग जाए और लगातार खांसी आने लगे तो गले में दर्द और हल्की सूजन से हम परेशान हो जाते हैं। सर्दियों में होने वाली गले में खराश के कई कारण हो सकते हैं जैसे ठंड लगना या कुछ ठंडा खा लेना। ऐसे में लोग आमतौर पर सिरप या गोलियों का सहारा लेते हैं। लेकिन आज हम आपको कुछ ऐसे अचूक घरेलू नुस्खे बताएंगे जो आपकी गले की खराश को मिनटों में दूर कर देंगे -

नमक का पानी

अगर आप गले की खराश से परेशान हैं तो नमक के पानी से गरारे करने से आपको जल्द राहत मिलेगी। नमक वाले पानी से गरारे करने से गले में जमे म्यूकस को बाहर निकालने में मदद मिलती है। इससे गले की खराश के साथ-साथ गले के दर्द में भी आराम मिलता है। अगर आप भी गले की खराश से परेशान जाओ तो एक गिलास गर्म पानी में आधा चम्मच नमक मिलाकर

गरारे जरूर करें।

शहद और नींबू

गले की खराश को दूर करने के लिए शहद भी बहुत फायदेमंद है। शहद में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं जो बैक्टीरिया को खत्म करके, गले की खराश से राहत दिलाते हैं। इसके साथ ही यह गले के अंदर की सूजन को कम करके जल्द राहत पहुंचाता है। गले की खराश को दूर करने के लिए गुनगुने पानी में नींबू और शहद मिलाकर पिएँ। ऐसा करने से आपको गले की खराश से जल्द आराम मिलेगा। नींबू में विटामिन सी मौजूद होता है जो इंफेक्शन से लड़ने में मदद करता है।

हल्दी वाला दूध

सर्दियों में हल्दी वाला दूध पीने की सलाह आपको बहुत लोगों ने दी होगी। गले की खराश दूर करने के लिए भी हल्दी वाला दूध फायदेमंद होता है। इसमें मौजूद एंटीसेप्टिक और एंटीबायोटिक गुण गले में सूजन और दर्द को कम करने में मदद करते हैं। इसके लिए रात में सोते समय एक गिलास गर्म दूध में हल्दी मिला कर पिएँ।

तुलसी के पत्ते

सर्दी-खासी के इलाज के लिए तुलसी का इस्तेमाल प्राचीन समय से हो रहा है। गले की खराश को दूर करने के लिए उबले हुए पानी में कुछ तुलसी के पत्ते मिलाकर स्टीम लें। आप चाहें तो पानी में तुलसी और अदरक उबालकर, इसका काढ़ा बनाकर भी पी सकते हैं।

ब्लोटिंग का कारण बन सकते हैं यह फूड्स

ब्लोटिंग का मुख्य कारण आपके खान-पान से जुड़ा है। कई लोगों का पाचन तंत्र नॉन-डाइजेस्टबल फाइबर फूड्स को आसानी से पचा नहीं पाता। यह फूड्स आपकी बड़ी आंत में जाकर अधिक फरमेंट होते हैं, जिसके कारण आपको गैस की समस्या बढ़ जाती है। ब्लोटिंग या पेट का फूलना भले ही एक सामान्य समस्या लगे, लेकिन वास्तव में यह स्थिति काफी असहज हो सकती है। कभी-कभी खाने के बाद पेट फूला हुआ महसूस होता है और इस स्थिति में आपको काफी अनकंफर्टेबल महसूस होता है। ब्लोटिंग की समस्या को दूर करने के लिए लोग कई तरह के नुस्खे भी अपनाते हैं। लेकिन इससे पहले जरूरी है कि आप इसके कारणों पर गौर करें। न्युट्रिशनिस्ट एक्सपर्ट पूजा मखीजा ने हाल ही में अपने अकाउंट पर ब्लोटिंग के कारणों व उसके उपचार से जुड़े कुछ जरूरी टिप्स शेयर किए हैं, जिनके बारे में आपको भी अवश्य जानना चाहिए- ब्लोटिंग का मुख्य कारण आपके खान-पान से जुड़ा है। कई लोगों का पाचन तंत्र नॉन-डाइजेस्टबल फाइबर फूड्स को आसानी से पचा नहीं पाता। यह फूड्स आपकी बड़ी आंत में जाकर अधिक फरमेंट होते हैं, जिसके कारण आपको गैस की समस्या बढ़ जाती है। अब सवाल यह है कि ऐसे कौन से फूड है जो ब्लोटिंग को ट्रिगर कर

सकते हैं तो वह कुछ इस प्रकार हैं- सब्जियां:- ब्रोकली, फूलगोभी, ब्रसेल्स स्प्राउट्स, और पत्ता गोभी फलः आलूबुखारा, सेब, नाशपाती, और आड़ू साबुत अनाजः गेहूं, जई, और गेहूं की भूसी फलियां:- बीन्स, दाल, मटर, और बेक्ड बीन्स शुगर अल्कोहल और आर्टिफिशियल स्वीटनर्सः कृत्रिम मिठास और चीनी मुक्त च्युइंग गम में पाए जाने वाले जाइलिटोल, सोर्बिटोल और मैनिटोल पेयः सोडा और अन्य कार्बोनेटेड पेय पदार्थ

यूं निपटें ब्लोटिंग की समस्या से

ब्लोटिंग के कारणों को जानने के अलावा उससे निपटने के कुछ उपायों के बारे में भी आपको जान लेना चाहिए। जिसके बारे में पूजा मखीजा ने बताया है सबसे पहले तो अपनी डाइट में सॉल्यूबल व इनसॉल्यूबल फाइबर की मात्रा को बढ़ाएं। इसके लिए आप होल ग्रेन, फ्रूट्स, वेजिटेबल, नट्स व सीड्स को खाएं इसके अलावा, पर्याप्त मात्रा में पेय पदार्थों का सेवन करना भी बेहद आवश्यक है। कोशिश करें कि आप दिन में कम से कम ढाई से तीन लीटर पानी का सेवन अवश्य करें- वहीं, नियमित रूप से एक्सरसाइज करना भी बेहद जरूरी है। आप वॉकिंग, जॉगिंग, स्विमिंग और साइकिलिंग जैसी एक्टिविटी को करीबन 30 मिनट के लिए अवश्य करें। यह बाउल मूवमेंट को रेग्युलेट करने में मदद करता है।

विंटर पार्टीज में खुद को कुछ इस तरह करें स्टाइल

अगर आपके लिए विंटर में लेयरिंग करना संभव नहीं है तो आप अपने लुक्स में ही कुछ बदलाव करने की कोशिश करें। मसलन, अगर आपने विंटर पार्टी में साड़ी पहनने का मन बनाया है तो ऐसे में आप उसके साथ फुलस्लीव्स ब्लाउज को स्टाइल कर सकती हैं। ठंड के मौसम में अगर कोई फंक्शन या पार्टी होती है तो अक्सर महिलाओं को खुद को स्टाइल करने में परेशानी होती है। दरअसल, ठंड से बचने के लिए उन्हें लेयरिंग करनी पड़ती है। लेकिन वहीं, दूसरी ओर वह अपने स्टाइल को लेकर किसी तरह का समझौता नहीं करना चाहतीं। जिसके कारण वह स्टाइलिश आउटफिट तो पहन लेती हैं, लेकिन उन्हें ठंड लगती रहती हैं, जिसके कारण पार्टी में उन्हें कपकपी छूटती है और वह परेशान होती हैं। हालांकि, अगर आप चाहें तो विंटर पार्टीज में खुद को स्मार्टली स्टाइल कर सकती हैं और खुद को बेहद आसानी से ठंड से बचाकर अपने लुक को भी फ्लॉन्ट कर सकती हैं। तो चलिए जानते हैं ऐसे ही कुछ स्टाइल टिप्स के बारे में-

फुलस्लीव्स को दें प्राथमिकता

अगर आपके लिए विंटर में लेयरिंग करना संभव नहीं है तो आप अपने लुक्स में ही कुछ बदलाव करने की कोशिश करें। मसलन, अगर आपने विंटर पार्टी में साड़ी पहनने का मन बनाया है तो ऐसे में आप उसके साथ फुलस्लीव्स ब्लाउज को स्टाइल कर सकती हैं। आप फुल स्लीव्स वुलन क्रॉप टॉप को भी बतौर ब्लाउज पहन सकती हैं। यह आपके लुक को और भी ट्रेंडी बनाएगा। साथ ही साथ आपको ठंड से भी बचाएगा।

वुलन वार्मर का करें इस्तेमाल

यह भी एक तरीका है खुद को ठंड से बचाने और बेहतर तरीके से स्टाइल करने का। मसलन, अगर आपने फंक्शन में लहंगा पहनने का मन बनाया है तो ऐसे में आप लहंगे के नीचे वुलर वार्मर पहन सकती हैं। यह विजिबल नहीं होगा, लेकिन इससे आपको ठंड से बचने में काफी हद तक मदद मिलेगी।

कुछ ऐसे दें यूनिक लुक

विंटर में आपको स्टाइलिंग थोड़ा स्मार्टली करनी चाहिए। मसलन, पार्टीज लुक्स में आप जैकेट, वुलन केप्स, बेल्ट, शॉल आदि को बेहद एलीगेंट तरीके से शामिल कर सकती हैं। आप साड़ी के साथ शॉल को वन शोल्डर पर ड्रेप कर सकती हैं या फिर जैकेट पहनकर उसके साथ बेल्ट भी स्टाइल कर सकती हैं।

सर्दियों में बॉडी शेप के हिसाब से चुनें विंटर कोट, दिखेंगी बेहद स्टाइलिश

सर्दियों के मौसम में हर लड़की के वॉर्डरोब में विंटर कोट जरूर होते हैं। विंटर कोट ना केवल सर्दियों में गर्माहट देते हैं बल्कि देखने में भी स्टाइलिश लगते हैं। अक्सर महिलाएं विंटर कोट खरीदते समय अपने लिए किसी भी स्टाइल का कोट खरीद लेती हैं। लेकिन विंटर कोट खरीदते समय आपको हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि वह स्टाइल आपकी बॉडी टाइप पर सूट करता है या नहीं। अगर आप बिना सोचे समझे विंटर कोट खरीद लेती हैं तो इससे आपको वैसा लुक नहीं मिल पाएगा जैसा आपने सोचा होगा। आज के इस लेख में हम आपको बताएंगे कि आपको अपने बॉडी शेप के अनुसार कैसा विंटर कोट चुनना चाहिए -

ऑवर ग्लास

अगर आपका बॉडी शेप ऑवर ग्लास है यानी आपकी वेस्ट वेल डिफाइंड है तो आपको ऐसा विंटर कोट चुनना चाहिए जिससे आपकी वेस्ट अधिक डिफाइन दिखे। आपको ऐसे कोट पहनने चाहिए जिसमें बेल्ट लगी हो और कोट की लेंथ हिप्स के नीचे हो। बेल्टेड कोट में आप अधिक स्लिम दिखेंगी।

एप्पल

अगर आपका बॉडी शेप एप्पल है यानी आपका सेक्शन चौड़ा है और लेग्स स्लिम हैं तो आपको ऐसा कोट चुनना चाहिए जो आपकी वेस्ट से लोगों का ध्यान हटाए। ऐसे बॉडी शेप वाली महिलाओं को ए लाइन कोट पहनने चाहिए क्योंकि इससे ध्यान आपकी लेग्स पर जाएगा।

टॉल और रैक्टेंगुलर

अगर आपका बॉडी शेप टॉल और रैक्टेंगुलर है तो आप पर ओवर साइज कोट अच्छे लगेंगे। इसके अलावा आप वॉइड हेमलाइन या स्विंग कोट पहन सकती हैं। ऐसे विंटर कोट में आप बेहद स्टाइलिश दिखेंगी।

पियर

अगर आपका बॉडी शेप पियर है तो आपको ऐसे कोट पहनने चाहिए जिससे आपकी अपर और लोअर बॉडी में बैलेंस नजर आए। इसके लिए आप ट्रेंचकोट या बेल्टेड कोट पहन सकती हैं।

पेटिट

अगर आपका बॉडी शेप पेटिट है यानी आपकी हाइट शॉर्ट है तो आपको शॉर्ट कोट पहनने चाहिए। ऐसे बॉडी शेप वाली महिलाओं को लॉन्ग कोट पहनने से बचना चाहिए क्योंकि इसमें आप अधिक मोटी दिखेंगी। आप शॉर्ट या मीडियम लेंथ के वूल कोट पहन सकती हैं।

फेस पैक में भूलकर भी ना करें यह इंग्रीडिएंट्स इस्तेमाल, स्किन को होगा नुकसान

कु कुछ लोग अपने स्किन केयर रूटीन में बेकिंग सोडा का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मुंहासों को कम करने, काले धब्बों को हल्का करने और अन्य स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करने में मदद करता है। लेकिन, वास्तव में यह निश्चित रूप से सुरक्षित नहीं है।

स्किन की केयर का सबसे बेहतर तरीका है नेचुरल चीजों को इस्तेमाल करना। आमतौर पर, अपनी स्किन को पैम्पर करने के लिए हम घर पर ही फेस पैक बनाना अधिक पसंद करते हैं और इसके लिए किचन में ही मौजूद कई तरह के इंग्रीडिएंट्स को यूज भी करते हैं। लेकिन वास्तव में यह सोचना कि किचन में मौजूद हर इंग्रीडिएंट आपकी स्किन को लाभ पहुंचाएगा, यह गलत है। कभी-कभी कुछ नेचुरल इंग्रीडिएंट्स भी आपकी स्किन पर विपरीत असर डाल सकते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको कुछ ऐसे ही नेचुरल इंग्रीडिएंट्स के बारे में बता रहे हैं, जिन्हें आपको अपने स्किन केयर रूटीन या फेस पैक के मिक्सचर में शामिल करने से बचना चाहिए-

नींबू

नींबू एक ऐसा इंग्रीडिएंट है, जिसे अमूमन महिलाएं अपने स्किन केयर रूटीन में शामिल करती हैं या फिर फेस पैक का हिस्सा बनाती हैं। लेकिन हर किसी को नींबू का इस्तेमाल फेस पर करने की सलाह नहीं दी जाती है। दरअसल, नींबू प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होता है और त्वचा में जलन पैदा कर सकता है। इसके अलावा, इसका तेल यूवी किरणों के संपर्क में आने पर आपकी त्वचा पर

फोटोटॉक्सिक प्रतिक्रिया पैदा कर सकता है। इसका मतलब है कि यह फफोले या चकत्ते पैदा कर सकता है। इसलिए, नींबू का इस्तेमाल बेहद सोच-समझकर करें।

बेकिंग सोडा

कुछ लोग अपने स्किन केयर रूटीन में बेकिंग सोडा का इस्तेमाल करते हैं। ऐसा माना जाता है कि यह मुंहासों को कम करने, काले धब्बों को हल्का करने और अन्य स्किन प्रॉब्लम्स को भी दूर करने में मदद करता है। लेकिन, वास्तव में यह निश्चित रूप से सुरक्षित नहीं है। दरअसल, बेकिंग सोडा में कई कंपाउंड होते हैं जो कि आपकी त्वचा को नुकसान पहुंचा सकते हैं और स्किन की एलर्जी का कारण बन सकता है।

विनेगर

नींबू की तरह ही विनेगर का इस्तेमाल भी फेस पैक में करना अच्छा आइडिया नहीं है। दरअसल, सिरका में उच्च पीएच होता है और प्रकृति में अत्यधिक अम्लीय होता है। यह जलन, सनबर्न, रासायनिक जलन आदि का कारण बन सकता है। इसलिए जहां तक संभव हो, आप विनेगर को फेस पैक में इस्तेमाल करना अवॉयड करें।

चीनी

कई फेस स्क्रब में लोग चीनी का इस्तेमाल करना पसंद करते हैं। ऐसा कहा जाता है कि चीनी एक प्राकृतिक एक्सफोलिएटर के रूप में काम करती है और आपके चेहरे से गंदगी और कीटाणुओं को दूर करती है। लेकिन यहां आपको यह भी समझना आवश्यक है कि आपकी फेस स्किन बॉडी स्किन से अधिक कोमल होती है और इससे फेस पर इस्तेमाल करने से आपकी स्किन में रेडनेस व अन्य प्रॉब्लम्स हो सकती है। यदि आप अपना फेस पैक तैयार करते समय प्राकृतिक स्क्रबर का उपयोग करना चाहते हैं, तो आप नमक या ओटमील का ऑप्शन चुन सकते हैं।

ट्राई करें आईलाइनर लगाने के यह 6 अलग तरीके बढेगी खूबसूरती

कुहते हैं कि आंखें चेहरे की जुबां होती हैं। यही वजह है कि चेहरे पर मेकअप करने के बाद भी चेहरे की रौनक आंखों से ही बढ़ती है। मेकअप करते समय आई लाइनर लगाए बिना मेकअप अधूरा लगता है। लेकिन अक्सर लड़कियों को आई लाइनर लगाने का सही तरीका समझ नहीं आता है। अगर आईलाइनर ठीक से ना लगाया हो तो इससे चेहरे का पूरा लुक बिगड़ सकता है। वहीं कई लड़कियों को लगता है कि आई लाइनर सिर्फ एक ही तरीके से लगाया जा सकता है। लेकिन ऐसा नहीं है। आज के इस लेख में हम आपको आई लाइनर लगाने के लिए 6 बेहतरीन तरीके बताएंगे -

कैट स्टाइल आईलाइनर

कैट स्टाइल आईलाइनर लुक के लिए आँखों के निचले और ऊपर के दोनों हिस्सों में काजल और लाइनर लगाकर विंग्स बनाए। इसके बाद आई ब्रश से ब्लेंड करके कैट आई का लुक दें।

रेट्रो स्टाइल लाइनर

यह स्टाइल बॉलीवुड डीवाज़ के बीच काफी लोकप्रिय है। इसे लगाने के लिए आँखों के ऊपरी हिस्से में लिक्विड लाइनर लगाएं और कॉर्नर तक कई कोट लगाएं। इसे

सूखने दें और उसके बाद विंग खींचे और लाइनर से जोड़ें। इसके बाद ऊपरी पलकों को मस्कारे के कई कोट दें।

डबल विंग्ड आईलाइनर

डबल विंग्ड आईलाइनर स्टाइल में आंख के ऊपरी और निचले हिस्सों में डबल आईलाइनर लगाना पड़ता है। दोनों तरफ लाइनर लगाते समय हमेशा ध्यान रखें कि दोनों विंग्स में थोड़ा सा गैप होना जरूरी है। गैप के बाद आपका लाइनर काफी अच्छे तरीके से दिखेगा।

स्मोकी आईलाइनर

स्मोकी आईलाइनर स्टाइल को लगाने के लिए पहले आंख में नार्मल आईलाइनर लगा लें। उसके बाद आई शैडो ब्रश से ग्रे, ब्राउन या ब्लैक कलर का आई शैडो लगाकर उसे अच्छे से ब्लेंड कर लें।

मल्टीकलर्ड आईलाइनर

मल्टीकलर्ड आईलाइनर स्टाइल देखने में बेहद ही खूबसूरत लगता है जिसमें आँखों के निचे दूसरा और ऊपर दूसरा रंग लगा लेने से एक नया लुक सामने आता है। मल्टीकलर आईलाइनर लगाते टाइम एक बात का ध्यान रखें कि ब्राउन शेड्स का इस्तेमाल इस आईलाइनर स्टाइल में करने से बचें।

मेटैलिक आई लाइनर

मेटैलिक आईलाइनर स्टाइल के लिए मेटैलिक आईलाइनर की जरूरत पड़ती है। इस स्टाइल की खास बात यह है कि ये लगाने के बाद दिखने में बहुत शाइन करता है। इसके लिए आप मेटैलिक आईलाइनर पेंसिल को आंखों के ऊपरी हिस्से पर अंदर की ओर लगाएँ।

“

ग्रेट वॉल ऑफ चाइना के बारे में तो आपने सुना होगा, लेकिन कुंभलगढ़ को ग्रेट वॉल ऑफ इंडिया कहा जाता है। 80 किलोमीटर उत्तर में उदयपुर के जंगल में स्थित, कुंभलगढ़ किला चित्तौड़गढ़ किले के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा किला है। किले की दीवार 36 किलोमीटर की विशाल लंबाई तक फैली हुई है और इसलिए इसे द ग्रेट वॉल ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता है। अरावली रेंज में फैला कुंभलगढ़ किला मेवाड़ के प्रसिद्ध राजा महाराणा प्रताप का जन्मस्थान है। यही कारण है कि राजपूतों के दिलों में इस किले के प्रति एक विशेष स्थान है। 2013 में, किले को विश्व धरोहर समिति के 37 वें सत्र में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया था।

सैलानियों के आकर्षण का केंद्र है ग्रेट वॉल ऑफ इंडिया

राजस्थान का अपना एक अलग समृद्ध इतिहास है, जो इसे सैलानियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बनाता है। यहां के किले व महल अनजाने ही लोगों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। वैसे तो जयपुर के आमेर फोर्ट से लेकर जैसलमेर के किले लोगों के बीच काफी प्रसिद्ध हैं, लेकिन इन्हीं के बीच कुंभलगढ़ का किला अपना एक अलग महत्व रखता है। कुम्भलगढ़ किला पश्चिमी भारत में राजस्थान राज्य के उदयपुर के पास राजसमंद जिले में अरावली पहाड़ियों की एक विस्तृत श्रृंखला पर मेवाड़ का किला है। इस किले की खासियत है उसकी 36 किलोमीटर लंबी दीवार। यह राजस्थान के हिल फॉर्ट्स में शामिल एक विश्व धरोहर स्थल है। 15 वीं शताब्दी के दौरान राणा कुंभा द्वारा निर्मित इस किले की दीवार को एशिया की दूसरी सबसे बड़ी दीवार का दर्जा प्राप्त है। तो चलिए विस्तारपूर्वक जानते हैं इसके बारे में-

ग्रेट वॉल ऑफ चाइना के बारे में तो आपने सुना होगा, लेकिन कुंभलगढ़ को ग्रेट वॉल ऑफ इंडिया कहा जाता है। 80 किलोमीटर उत्तर में उदयपुर के जंगल में स्थित, कुंभलगढ़ किला चित्तौड़गढ़ किले के बाद राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा किला है। किले की दीवार 36 किलोमीटर की विशाल लंबाई तक फैली हुई है और इसलिए इसे द ग्रेट वॉल ऑफ इंडिया के नाम से जाना जाता है। अरावली रेंज में फैला कुंभलगढ़ किला मेवाड़ के प्रसिद्ध राजा महाराणा प्रताप का जन्मस्थान है। यही कारण है कि राजपूतों के दिलों में इस किले के प्रति एक विशेष स्थान है। 2013 में, किले को विश्व धरोहर समिति के 37 वें सत्र में यूनेस्को की विश्व विरासत स्थल घोषित किया गया था।

कुछ ऐसा है कुंभलगढ़ किला

किले को सात विशाल द्वारों से बनाया गया है। इस भव्य गढ़ के अंदर मुख्य भवन बादल महल, शिव मंदिर, वेदी मंदिर, नीलकंठ महादेव मंदिर और मम्मादेव मंदिर हैं। कुम्भलगढ़ किला परिसर में लगभग 360 मंदिर हैं, जिनमें से 300 जैन मंदिर हैं, और बाकी हिंदू हैं। इस किले की एक खासियत यह भी है कि इस भव्य किले को वास्तव में युद्ध में कभी नहीं जीता गया था। हालांकि इस पर केवल एक बार मुगल सेना द्वारा छल द्वारा कब्जा कर लिया गया था जब उन्होंने किले की पानी की आपूर्ति में जहर डाल दिया था।

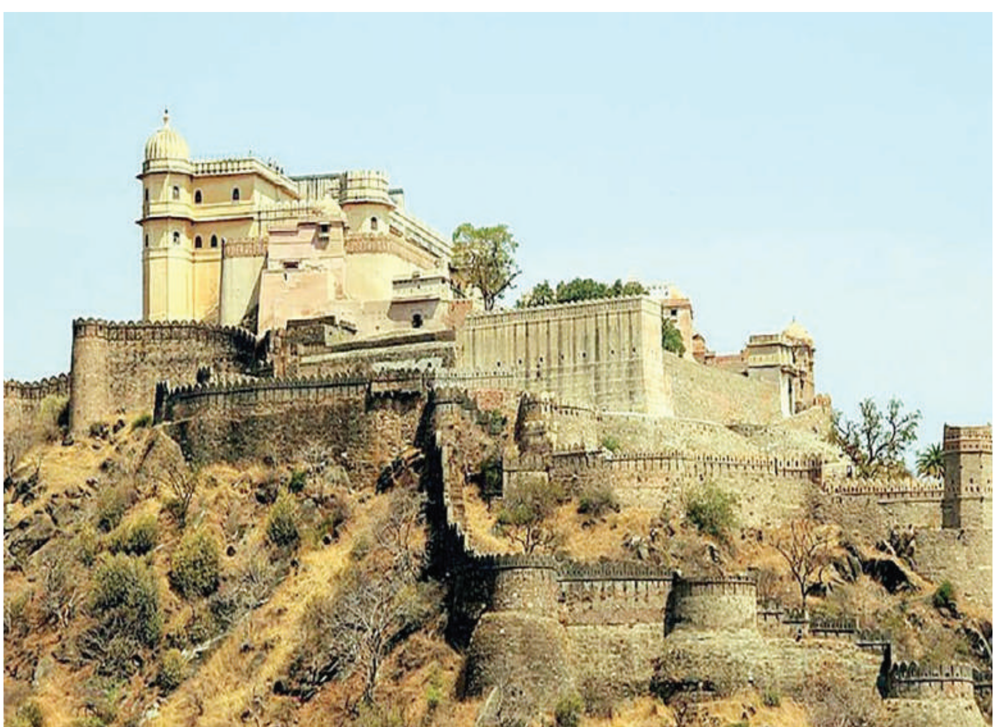

सिनेमा में वापसी करेंगी अनुष्का

बॉलीवुड अभिनेत्री-निर्माता अनुष्का शर्मा जल्द ही फिल्मों में वापसी करने जा रही हैं। बता दें कि अभिनेत्री को आखिरी बार बड़े पर्दे पर फिल्म 'जीरो' में देखा गया था और अब वह तीन साल बाद कमबैक करने जा रही हैं। सूत्रों के मुताबिक अनुष्का शर्मा ने तीन बड़े बॉलीवुड प्रोजेक्ट्स साइन किए हैं। इसमें से दो फिल्में थिएटर्स में रिलीज हो सकती हैं। वहीं एक ओटीटी ओरिजनल फिल्म होगी। रिपोर्ट्स में यह भी दावा किया जा रहा है कि ओटीटी पर रिलीज होने वाली अनुष्का शर्मा की यह फिल्म भारत में डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए बनने वाली सबसे बड़ी फिल्म होगी। जिसके साथ अनुष्का अपना डिजिटल डेब्यू करेंगी। उम्मीद की जा रही है कि अगले साल की शुरुआत में इन बॉलीवुड प्रोजेक्ट्स की अनाउंसमेंट हो सकती है सूत्रों के मुताबिक, अनुष्का शर्मा की एक्टिंग स्किल्स और वर्सटैलिटी के कारण इन प्रोजक्ट्स को लेकर फिल्म इंडस्ट्री में काफी हाईप है। मेकर्स उम्मीद कर रहे हैं कि अनुष्का शर्मा की वजह से प्रोजेक्ट्स की अनाउंसमेंट एक बड़ा बज क्रिएट कर सकती है। रिपोर्ट्स में यह भी दावा किया जा रहा है कि अनुष्का की फिल्मों की चॉइस दर्शकों को कुछ नया और फ्रेश दिखाने की कोशिश करेगी।

टीवी पर डेब्यू करेंगी परिणीति चोपड़ा

बॉलीवुड अभिनेत्री परिणीति चोपड़ा रियलिटी शो हुनरबाज-देश की शान से टीवी पर डेब्यू करने जा रही है। परिणीति चोपड़ा हुनरबाज-देश की शान में मिथुन चक्रवर्ती और करण जौहर के साथ बतौर जज नजर आएंगी। परिणीति चोपड़ा ने कहा, ÷मैं पिछले कई सालों से टीवी पर डेब्यू करना चाहती थी। मै हमेशा से ही एक मल्टी टैलेंट शो से अपना टीवी डेब्यू करने की ख्वाहिश रखती थी और आखिरकार अब जाकर मेरा सपना पूरा हुआ। मैं इस बात को अच्छी तरह से जानती थी कि टीवी शो साइन करने के बाद मेरा शेड्यूल ऊपर-नीचे होगा और मुझे बहुत मेहनत करनी होंगी। टीवी करना कोई आसान नहीं है।ये सब चीजों के लिए मैं तैयार थी। परिणीति चोपड़ा ने कहा, मेरी फिल्म ऊंचाई की शूटिंग चल रही हैं। वहीं फिल्म एनिमल की शूटिंग जल्द ही शुरू होंगी और इसी बीच ये टीवी शो। मेरे लिए ये तीनों ही बड़े प्रोजेक्ट हैं और मेहनत करने में कहीं से भी मेरी कमी नहीं होने वाली हैं।

पैन-इंडिया स्टार तमन्ना भाटिया सबसे लोकप्रिय एक्टर्स की सूची में

निविवाद रूप से तमन्ना भाटिया का वर्ष रहा है. लगातार चार बैक-टू-बैक ब्लॉकबस्टर देने के बाद, पैन-इंडिया स्टार ने अब भारत में सबसे लोकप्रिय ओटीटी एक्टर्स की सूची में स्थान अर्जित किया है. तमन्ना ने 11थ हावर और नोवेम्बर स्टोरी के साथ डिजिटल क्षेत्र में कदम रखा. जबकि दोनों शो में उन्हें विपरीत रंगों में दिखाया. वह दर्शकों और आलोचकों के बीच एक बड़ी हिट बन गईं. ओरमैक्स मीडिया की ताजा सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक, बहुमुखी अभिनेत्री शीर्ष दस पसंदीदा ओटीटी सितारों में से एक है. उसी के बारे में बात करते हुए तमन्ना ने कहा, मैंने एक वेब शो में काम करने की प्रक्रिया का आनंद लिया. यह एक ताज़ा अनुभव था. मैं हमेशा 11थ हावर और नोवेम्बर स्टोरी को अपने दिल के करीब रखूंगी. मुझे यह जानकर खुशी हुई कि दर्शक ने उनमें मेरे प्रदर्शन का आनंद लिया और मुझे बहुत प्यार दिया. सूची में मनोज वाजपेयी, पंकज कपूर, नवाजुद्दीन सिद्दीकी, सुष्मिता सेन, सामंथा रूथ प्रभु और अन्य भी शामिल हैं. इस बीच, तमन्ना बॉलीवुड में प्लान ए प्लान बी और यार दोस्त और दक्षिण में एफ3, भोला शंकर और गुरथुंधा सीताकलम के साथ व्यस्त नए साल के लिए तैयार हैं.

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर साल 2022 की धमाकेदार शुरुआत

पिछले साल की तरह साल 2022 में भी दर्शकों के इंटरटेनमेंट का पूरा इंतजाम है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि इस वीकेंड आप ओटीटी पर कौन सी लेटेस्ट सीरीज देख सकते हैं स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के लिए साल 2021 काफी धमाकेदार था। कोरोना लॉकडाउन के दौरान ओटीटी प्लेटफॉर्म लोगों के इंटरटेनमेंट का एक बड़ा सहारा था। साल 2021 में मिर्जापुर, फैमिली मैन 2, गुल्लक, सनफ्लावर जीत की जिद जैसे कई बेहतरीन शोज़ को ओटीटी प्लेटफॉर्म पर रिलीज किया गया। ओटीटी ने कुछ ही वक्त में दर्शकों के दिल में एक बहुत बड़ी जगह बना ली है। दर्शक घर पर ही नई फिल्में और शोज़ का आनंद ले सकते हैं। पिछले साल की तरह साल 2022 में भी दर्शकों के इंटरटेनमेंट का पूरा इंतजाम है। आज हम आपको बताने जा रहे हैं कि इस वीकेंड आप ओटीटी पर कौन सी लेटेस्ट सीरीज देख सकते हैं -

ये काली काली आंखें

ताहिर राज भसीन, श्वेता त्रिपाठी शर्मा और आंचल सिंह स्टारर %ये काली काली आंखें% एक रोमांचक थ्रिलर है। 8 एपिसोड की इस वेब सीरीज को नेटफ्लिक्स पर रिलीज किया गया है। इसका निर्देशन सिद्धार्थ सेनगुप्ता ने किया है। यह विक्रांत नाम के साधारण आदमी की कहानी है, जिसे पूर्वा नाम की लड़की बहुत पसंद करती है। पूर्वा वहां के सबसे ताकतवर आदमी की बेटी है। वह विक्रांत को पाने के लिए किसी भी हद तक जा सकती है। इस सीरीज में आपको एक्शन और थ्रिल के साथ-साथ डार्क ह्यूमर का बेहतरीन कॉम्बिनेशन देखने को मिलेगा।

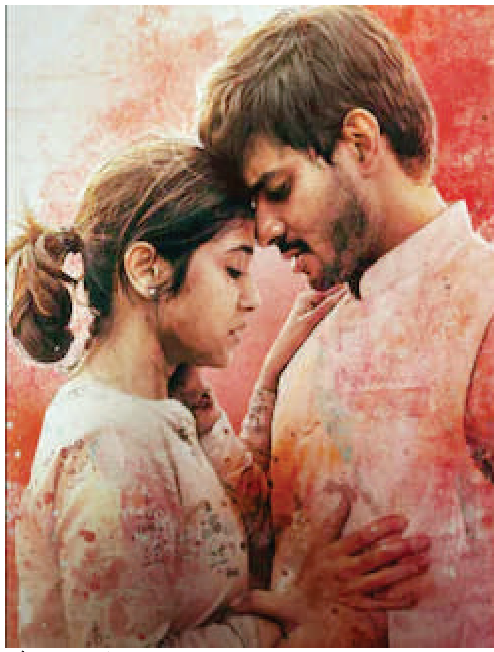

ह्यूमन

विपुल अमृतलाल शाह और मोज़ेज़ सिंह द्वारा निर्देशित और निर्मित ह्यूमन एक मेडिकल थ्रिलर है। इसमें शेफाली शाह और कीर्ति कुल्हारी मुख्य किरदारों में हैं। यह शो बड़े-बड़े फार्मा दिग्गजों के पैसा कमाने के लिए फास्ट ट्रैक ह्यूमन ड्रग ट्रायल के रहस्यों को दिखाता है। यह इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि परीक्षणों को कैसे संभाला जाता है, उनके लिए कौन साइन अप करता है, और क्या वे इसमें शामिल जोखिमों से अवगत हैं, खासकर भारत जैसे देश में।

रंजिश ही सही

वूट सेलेक्ट के नए शो %रंजिश ही सही% में ताहिर भसीन और आमना परवेज मुख्य किरदारों में हैं। इस शो की कहानी बॉलीवुड फिल्म निर्देशक महेश भट्ट और एक्ट्रेस परवीन बाबी के वास्तविक जीवन की लव स्टोरी से प्रेरित है। शो में शंकर एक स्ट्रगलिंग फिल्म निर्माता है जिसे बॉलीवुड एक्ट्रेस आमना परवेज से प्यार हो जाता है। आमना के लिए शंकर अपनी पत्नी अंजू को भी छोड़ देता है। अब शंकर इस भावनात्मक उथल पुथल से कैसे जूझेगा, यह इस शो को कहानी है।

पुथम पुधु कलई विद्याधा

अमेज़न प्राइम वीडियो की %पुथम पुधु कलई विद्याधा% 2020 एंथोलॉजी पुथम पुधु कलई का फॉलो अप है। इसमें फिल्म निर्माता बालाजी मोहन, हलीता शमीम, मधुमिता, सूर्य कृष्ण और रिचर्ड एंथनी द्वारा अभिनीत पांच कहानियां हैं। सभी कहानियां कोरोनावायरस की दूसरी लहर के दौरान लगाए गए लॉकडाउन की पृष्ठभूमि पर सेट की गई हैं।

इटरनल

मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स मूवी इटरनल को अब डिज्नी प्लस हॉटस्टार पर हिंदी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ और अंग्रेजी में रिलीज किया गया है। इस फिल्म में सुपरहीरो हैं जो ब्रह्मांड को पार करके एक अनदेखी दुनिया का पता लगाते हैं और मानव जाति के लिए अज्ञात जीवों से युद्ध करते हैं। इस मूवी में एंजेलिना जोली, सलमा हायेक, किट हैरिंगटन, गेम्मा चैन, रिचर्ड मैडेन, बैरी केओघन और कुमैल नानजियानी जैसे स्टार्स हैं।

बेटी संरक्षण दिवस पर प्रतिभावान बेटियों का हुआ सम्मान, छात्राओं को बांटी पाठ्य सामग्री

हिम्मत, हौंसला , बुद्धि और विवेक से आगे बढ़ें बेटियां

बेटियों को आत्मनिर्भर बनाने के साथ बेटों को संस्कारित करने की आवश्यकताः समीक्षा गुप्ता

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

आज बेटियां हर वो काम कर सकती है, जिसके लिए मां-बाप बेटों पर निर्भर होते हैं। इसलिए बेटियां को भी वही संस्कार, लालन-पालन व शिक्षा दें, जो हम बेटों के लिए सोचते हैं। बेटियां हर कार्य करने में सक्षम हैं। बेटियां हिम्मत, हौंसला , बुद्धि और विवेक से आगे बढ़ें तो उन्हें आगे बढ़ने से दुनिया की कोई ताकत नहीं रोक सकती है । उक्त आशय के विचार बेटी संरक्षण दिवस के अवसर पर शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हिंदी विद्यापीठ तिलक नगर में आयोजित बेटी सम्मान कार्यक्रम के दौरान मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित कैबिनेट मंत्री दर्जा प्राप्त मध्य प्रदेश लघु उद्योग निगम की अध्यक्ष श्रीमती इमरती देवी ने प्रतिभावान बेटियों का सम्मान करते हुए व्यक्त किए।

बेटियों को शिक्षित करने एवं आत्मनिर्भर बनाने तथा उनकी सुरक्षा एवं सामाजिक विकास के उद्देश्य से पिछले 9 वर्षो से आयोजित किए जा रहे बेटी संरक्षण दिवस का आयोजन आज 30 दिसंबर गुरुवार को पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता फैंस क्लब द्वारा तिलक नगर स्थित शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हिंदी विद्यापीठ, बेटी बचाओ चौराहे के पास किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में मध्य प्रदेश लघु उद्योग निगम की अध्यक्ष श्रीमती इमरती देवी उपस्थित रहीं। कार्यक्रम की अध्यक्षता बेटी संरक्षण दिवस की प्रेरक एवं कार्यक्रम की संयोजक पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता द्वारा की गई। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में भाजपा के जिला अध्यक्ष कमल माखीजानी, समाजसेवी राजेश ऐरन, मंडल अध्यक्ष चेतन मंडलोई , सतीश साहू, विद्यालय के प्राचार्य आईसी गुप्ता एवं अशोक जैन उपस्थित रहे। कार्यक्रम की प्रस्तावना राजीव गुप्ता द्वारा प्रस्तुत की गई। उन्होंने बताया कि 16 दिसंबर 2012 को निर्दयता की पराकाष्ठा को लांघते हुए दिल्ली में पैरामेडीकल की छात्रा के साथ हुई सामूहिक बर्बरता के बाद 13 दिन जिंदगी से जंग लडते हुए निर्भया 29 दिसंबर 2012 को जिंदगी से हार गई और पूरे देश में बेटियों की सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरुक कर गई। तब ग्वालियर की तत्कालीन महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता ने ग्वालियर की प्रथम नागरिक होने के नाते शहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के साथ मिलकर निर्भया जैसी करोडों प्रतिभावान बेटियों की सुरक्षा व संरक्षण के प्रति समाज को जागरुक करने के लिए प्रतिवर्ष 30 दिसंबर को बेटी संरक्षण दिवस आयोजित कर समाज में जरुरतमंद बेटियों की सहायता करने का संकल्प लिया। तब से लगातार इस प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में इस वर्ष भी पूर्व महापौर श्रीमती समीक्षा गुप्ता फैंस क्लब द्वारा तिलक नगर स्थित शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हिंदी विद्यापीठ, बेटी बचाओ चौराहे के पास किया जा रहा है। कार्यक्रम में प्रदेश व देश में शहर का नाम रोशन करने वाली शहर की प्रतिभाशाली बेटियों का सम्मान किया गया । इसके साथ ही विद्यालय की लगभग 300 जरुरतमंद छात्राओं को निशुल्क पाठ्य सामाग्री एवं स्वेटर आदि वितरित किए गए ।

इस अवसर पर भाजपा जिला अध्यक्ष कमल माखीजानी ने कहा कि बेटियों में पुरुषों को लेकर जो असुरक्षा की भावना है उसे उन्हें त्यागना होगा। अब समय बदल रहा है बेटियां सशक्त हैं, सक्षम हैं और हर क्षेत्र में कार्य करने के लिए तैयार हैं। पूर्व महापौर श्रीमती गुप्ता ने इस अवसर पर कहा कि हम सभी का निरंतर यह प्रयास होना चाहिए कि बेटी के संरक्षण के साथ ही उन्हें शिक्षित करें। उन्होंने कहा कि बेटियां भी प्रकृति का ही एक हिस्सा है यदि हम प्रकृति से खिलबाड करेंगें तो समाज का पतन होना निश्चित हैं। घर की बेटी को संस्कारित करने की चिंता हम सबकी होती है, लेकिन यदि हम बेटों को भी संस्कारित करने की चिंता कर लें तो देश में निभर्या कांड जैसी घटनाएं अपने आप ही कम हो जाएंगी। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने बेटियों की चिंता करते हुए बेटी बचाओ, बेटी पढाओ का नारा दिया जो कि आज देशभर में गूंज रहा है। उन्होंने कहा कि हम आज भी बेटियों को बेटों से बराबरी का दर्जा नहीं दे पा रहे हैं यही कारण है कि आज भी बेटों के मुकाबले बेटियों की संख्या कम है। इस अवसर पर श्रीमती साधना सांडिल्य, जानवी रोहिरा, श्रीमती ममता आर्य, श्रीमती मोना शर्मा बड़ी संख्या में समाजसेवी महिलाएं, पुरुष एवं विद्यालय के शिक्षक व शिक्षिकाएं एवं छात्राओं के अभिभावक उपस्थित रहे। बेटी संरक्षण दिवस के अवसर पर बेटियों की शिक्षा एवं सुरक्षा के लिए आयोजित कार्यक्रम में बेटियों के सम्मान के बाद सभी बेटियों ने शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से रैली निकालकर बेटी बचाओ चौराहे बेटियों की सुरक्षा का संदेश दिया। बेटियों की सुरक्षा का संदेश देने के लिए निकाली गई रैली की अगुवाई पूर्व महापौर एवं कार्यक्रम की संयोजक श्रीमती समीक्षा गुप्ता द्वारा की गई। उनके साथ लगभग 300 छात्राओं एवं 1 सैकड़ा से अधिक महिलाओं ने पैदल मार्च कर बेटी सुरक्षा का संकल्प लिया।

स्मार्ट सिटी सीईओ ने किया विभिन्न गतिशील परियोजना का निरीक्षण दिए निर्देश

आमजन के जीवन को सुगम बनाने के उद्देश्य से परियोजनाओं का किया जा रहा क्रियान्वयन

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

स्मार्ट सिटी मिशन के तहत शहर में किये जा रहे विकास कार्यो को लेकर स्मार्ट सिटी सीईओ श्रीमती

जयति सिंह नें विभिन्न गतिशील परियोजनाओ का निरीक्षण किया और संबंधित एजेंसी को कार्यो को गुणवत्ता व समय सीमा में करने के लिये जरुरी दिशा निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान निर्माण कार्यो से संबंधित अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित थे। श्रीमती सिंह द्वारा शहर में स्मार्ट रोड परियोजना के प्रथम चरण के अंतर्गत सर्वप्रथम विकसित कि जा रही थीम रोड के निमार्ण कार्य़ का निरीक्षण किया। श्रीमती सिंह ने निरीक्षण के दौरान सम्बंधित एजेंसी तथा अधिकारियों को निर्माण कार्य में हेरिटेज थीम को समावेशित करने के निर्देश दिये, व संबंधित एजेंसी के अधिकारीयो से थीम रोड पर होने वाली प्लेसमेकिंग की डिज़ाइन इत्यादी को लेकर गहन चर्चा की। श्रीमती सिंह नें संबंधित एजेंसी को इस कार्य को

समय सीमा मे पूर्ण करने के लिये समय सारणी बनाकर कार्य करने के दिशा निर्देश दिये। वही श्रीमती सिंह नें शहर के विभिन्न मुख्य चौराहो पर जक्शन उन्नयन के निर्माण कार्य का भी निरीक्षण किया। श्रीमती सिंह नें बताया कि ग्वालियर स्मार्ट सिटी द्वारा आमजन की मूलभूत सुविधाओं में सुधार व उनके जीवन को सुगम बनाने के उद्देश्य से विभिन्न परियोजनाओं का क्रियान्वयन किया जा रहा है। इसी क्रम में ग्वालियर स्मार्ट सिटी ने जंक्शन इम्प्रूव्मेंट परियोजना का कार्य शुरू कर दिया है। लैंड्स्केपिंग की विभिन्न शैलियों जैसे एफ़आरपी वॉल, म्युरल, वॉल आर्ट, पत्थर शिल्प, इत्यादि के माध्यम से ये जंक्शन शहर को एक अलग पहचान देंगे। इस परियोजना के तहत उरवाई गेट, हजीरा चौराहा व तानसेन जक्शन पर चल रहे उन्यन कार्य़ का भी श्रीमती सिंह द्वारा निरीक्षण किया गया और संबंधित निर्माण एजेंसी को निर्माण कार्य को लेकर जरुरी दिशा निर्देश दिये गये।

जोश में टीनएजर्स' खुशी- खुशी लेने पहुंचे खुराक

ग्वालियर। टीनएजर्स के वैक्सीनेशन के पहले दिन स्कूली बच्चों का अच्छा रिस्पोंस मिला है। स्कूलों में बनाए गए वैक्सीनेशन संटर पर सुबह 9 बजे से पहले ही बच्चों की भीड़ एकत्रित हो गई थी। वैक्सीन को लेकर टीनएजर्स में उत्साह देखते ही बन रहा था। वैक्सीन लगवाने वाले किशोर अवस्था बच्चों ने कहा है कि हमने वैक्सीन लगवा ली है और हमारी सलाह है ऐसे बच्चे जिनके मन में डर झिझक है तो वह सब कुछ भूलकर वैक्सीन लगवाएं। यही कोरोना से बचाव का आखिरी विकल्प है।

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

सुबह से ही स्कूलों में रहा उत्साह

टीकाकरण को लेकर बच्चों में पहले दिन काफी उत्साह नजर आया है। सुबह 9 बजे वैक्सीनेशन शुरू होना था, लेकिन उससे पहले ही स्कूल के ग्राउंड में वैक्सीनेशन को लेकर छात्रों की लाइन लग गई। वैक्सीनेशन सेंटर पर पहले ही टीम मौजूद थीं। छात्र-छात्राओं को ऑन स्पॉट रजिस्ट्रेशन शुरू किए गए। इसके बाद ठीक 9 बजे से टीका लगना शुरू किए गए हैं। मुरार के उत्कृष्ण शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पहले एक घंटे में 250 से ज्यादा बच्चों को वैक्सीन लग चुकी थी। बच्चे वैक्सीन लगवाने के बाद काफी खुश नजर आ रहे थे। इस स्कूल में सबसे पहला टीका 12वीं की छात्रा 17 वर्षीय प्रिया को लगा था। जब प्रिया से बात की तो उसका कहना था कि उसने वैक्सीन कोरोना वायरस से बचाव के लिए लगवाया है। सभी को वैक्सीन लगवानी चाहिए।

कई सेंटर पर देर से पहुंची टीम

शहर और देहात के 240 स्कूलों को वैक्सीनेशन सेंटर बनाया गया था, लेकिन एक दर्जन से ज्यादा स्कूल ऐसे थे जहां सुबह देरी से वैक्सीनेशन टीम पहुंची हैं। उन स्कूलों के नाम लिस्टेट करके कलेक्टर ग्वालियर को भेजे जा रहे हैं। जहां दल समय पर नहीं पहुंचे हैं वहां कार्रवाई की जाएगी।

पहले कराया नाश्ता फिर लगाई वैक्सीन

स्कूलों में बच्चों के वैक्सीनेशन की विशेष व्यवस्थाएं की गई थीं। सभी सेंटरों पर निर्देश दिए गए थे कि कोई भी बच्चा बिना नाश्ता टीका न लगवा सके। इसको लेकर सभी स्कूलों में बच्चों के लिए नाश्ता मंगाया गया था। जिस क्लास के बच्चों को टीका लगना था उस क्लास में जाकर पहले शिक्षकों ने पूछा कि कौन नाश्ता करकर नहीं आया है। जो बच्चे बिना नाश्ते के स्कूल पहुंचे थे उन्हें सबसे पहले नाश्ता कराया गया। इसके बाद क्लास के बच्चों को एक हॉल में बैठाया गया फिर उन्हें एक-एक कर रजिस्ट्रेशन के लिए भेजा गया। रजिस्ट्रेशन के बाद विद्यार्थियों को टीके लगे। टीका लगने के बाद विद्यार्थियों को गोली देकर एक कमरे में 15 मिनट तक बैठाया गया। किसी भी स्कूल से किसी भी छात्र को टीकाकरण के बाद कोई परेशानी नहीं हुई।

कमिश्नर, कलेक्टर, एसपी ने लगवाया बूस्टर डोज

स्वास्थ्य विभाग द्वारा कोरोना टीकाकरण अभियान के तहत जिले में बूस्टर डोज लगाना शुरू कर दिया। यह बूस्टर डोज फ्रंट लाइन वर्कर के साथ ही 60 वर्ष से अधिक बीमार लोगों को लगाया जा रहा है। लोगों को बूस्टर डोज के लिए जागरूक करने के लिए सोमवार को संभागीय आयुक्त अशीष सक्सेना, कलेक्टर कौशलेन्द्र विक्रम सिंह एवं एसएसपी अमितसांघी ने बूस्टर डोज लगवाया और 60 वर्ष से अधिक उम्र के लोगों को अपील की है कि जो लोग इसके पात्र है वह जरूर वैसीन की बूस्टर डोज लगवाएं।

स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों की माने तो यह बूस्टर डोज उन्हीं बुजुर्गो को लगाया जा रहा है जिनकों कोरानी की वैक्सीन का दूसरा डोज लगाए जाने के 9 माह पूरे हो गए हैं। उन्हें बूस्टर डोज लगाया जा रहा है। बूस्टर डोज के तोर वही वैक्सीन लगाई जा रही है जो जिस वैक्सीन की पहले डोज लगी है। इसके साथ ही 15 से 18 आयु वर्ग के बच्चों का टीकाकारण भी साथ में चलाया जा रहा है।

स्वास्थ्य विभाग को डीएम के निर्देश के मुताबिक मंगलवार तक 15 से 18 आयुवर्ग के बच्चों को टीकाकरण का शत प्रतिशत लक्ष्यहासिल करना है। शासन द्वारा दिए गए टारगेट के मुताबिक इस आयुवर्ग के 1.42 लाख बच्चों को कोरोना की वैसीन लगाई जानी है। अभियान 16 जनवरी 2021 से शुरू हुआ था ग्वालियर जिले में कुल 1628694 लोगों का वैसीनेशन होना है। अभी अब तक जिले में 30 लाख 98 हजार 688 टीका लग चुका है। इन मे पहला टीका 1623244 को पहली डोज एवं 1474138 लोगों को दूसरी डोज लग चुकी है।

इसके साथ ही 15 से 18 आयु वर्ग के बच्चों का टीकाकरण कार्यक्रम भी चल रहा है। इसके लिए जिले में कुल 1.42 लाख बच्चों को वैक्सीन लगनी हैं। अभी तक 63667 बच्चों को कोरोना के वैक्सीने के तौर पर कोवेक्सीन की डोज लगाई जा चुकी है। तीसरी लहर की रफ्तार जारी। कोरोना महामारी की तीसरी लहर ने साल के पहले दिन से रफ्तार पकड़ी है वह दिनों दिन काफी तेज गति से बढ़ती जारही है।

टेनिस के क्षेत्र में युवा बनाएं कैरियर: विकास पाण्डेय

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

इस बार हम अपने पाठकों गूंज विशेष में रूबरू कराएंगे टेनिस कोच विकास पांडेय जी से जो ग्वालियर चंबल टेनिस एसोसिएशन को अपनी सेवाएं दे रहे हैं। जिन्हें टेनिस खेल में योगदान के लिए कई

पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है वह एक होनहार खिलाड़ी भी रह चुके हैं। गूंज ने टेनिस कोच विकास पांडे जी से एक्सक्लूसिब बातचीत की। पेश है बातचीत के कुछ प्रमुख अंशः-

1.हमारे पाठकों से खुद को रुहबरु करायें.

मेरा नाम विकास पांडेय है। मैं टेनिस कोच हूं।1995 से मैंने टेनिस खेलना शुरू किया। 10 साल तक प्रोफेशनल टेनिस प्लेयर रहा। फिर उसके बाद मेरा रुझान कोचिंग की तरफ हुआ। तब मैंने दिल्ली जाकर मैंने एक कोर्स किया आईटीआई लेवल 1 2006 - 2007 में मैंने अपना डिप्लोमा हासिल किया।उसके बाद 2013 में लेवल 2 और अब मैं ग्वालियर चंबल टेनिस एसोसिएशन को अपनी सेवाएं दे रहा हूँ ।

2. टेनिस में कौन-कौन से टूर्नामेंट होते हैं?

टेनिस में होने वाले टूर्णमेंटस को चार भागों में बांट सकते हैं लोकल लेवल जिसमें हम सिटी ओपन या क्लब लेवल के टूर्नामेंट कंसीडर करते हैं। **दूसरा स्टेट लेवल टूर्नामेंट**-मध्य प्रदेश टेनिस एसोसिएशन 4 टूर्नामेंट कराती है साल में ,उसके आधार पर रैंक बनती है। तीसरा ऑल इंडिया टेनिस टूर्नामेंट होते हैं जो अलग-अलग कैटेगरी में खेले जाते हैं। चौथा इंटरनेशनल लेवल, जिसमें ITF, ATP, WTA और ग्रैंड स्लैम टूर्णमेंटस हैं ।

3. क्या टेनिस में अलग अलग आयु वर्ग के हिसाब से टूर्नामेंट होते हैं?

जी हाँ टेनिस में अलग अलग उम्र के टूर्नामेंट होते है जिसमें जो कि 12 साल की उम्र से शुरू हो जाते हैं, अंडर 12,अंडर 14,अंडर 16 और अंडर 18 । उसके बाद मेंस और वुमेंस टूर्नामेंट हो जाता है। उसके बाद ढ्ढ्रक्च्स्र में वेटरन्स टूर्नामेंट भी होते है जो 35 प्लस ,45 प्लस, 55 प्लस, 65 प्लस एज ग्रुप तक होते है।

4. कैरियर में स्टेबिलिटी हम सभी चाहते हैं , टेनिस में स्टेबल करियर आपशन क्या है?

लोगों को लगता है कि हम बच्चे को प्लेयर बनाते हैं तो एक ही हमारे पास ऑप्शन है। जिस तरह पेड़ की कई शाखाएं होती हैं। उसी तरह टेनिस भी बहुत बड़ा है जैसे आप प्लेयर बन सकते हैं। उसके बाद आप कोचिंग में करियर बना सकते हैं। आप फिटनेस कैरियर भी अपना सकते है, डाइटिशियन भी एक अच्छा कैरियर है। इसलिए मुझे लगता है कि यह बहुत स्टेबल कैरियर है।

5. कोरोना ने हमे एक चीज सिखा दी है जो फिट है वही हिट है टेनिस से हम कैसे खुद को फिट रख सकते है?

फिटनेस के पांच कंपोनेंट होते हैं- स्पीड, स्ट्रेंथ ,फ्लैक्सिबिलिटी, कोआर्डिनेशन और इंड्रूें अगर कोई भी व्यक्ति रोज़ 2 घंटे भी टेनिस खेलता है तो इन पांचों चीजों को ठीक किया जा सकता है। मैं दूसरे गेम से रिलेट नहीं कर रहा हूं। पर मुझे लगता है कि टेनिस

में पांचों चीजें बेहतर तरीके से की जा सकती है

6.इंडिया में टेनिस का कैसा फ्यूचर है?

इंडिया में एक दौर था जब बहुत ही कम टॉरमेंट्स होते थे। इंटरनेट भी नहीं था। टेलीफोन मोबाइल नहीं थे तो इंफॉर्मेशन नहीं मिल पाती थी। मैं जब खेला करता था तो आने जाने में दिक्कत हुआ करती थी। पर आज के समय में ऐसा नही है , टूर्नामेंट बहुत ज्यादा बढ़ गए हैं। मैं इसके लिए मध्य प्रदेश टेनिस एसोसिएशन को और ऑल इंडिया टेनिस एसोसिएशन को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उन्होंने बच्चों के लिए इतने सारे टूर्नामेंट कंडक्ट करना शुरू कर दिए हैं ।ग्वालियर शहर के लिए एक बहुत अच्छी खबर रही। इस साल मेरा एक बच्चा दक्ष प्रसाद जो अंडर 16 में नंबर 1 बना, साथ ही साथ वह नेशनल टूर्नामेंट भी जीता।

7 .पेरेंट्स के मन में एक सवाल होता है कि कौन सी उम्र से हमें बच्चों को टेनिस खिलाना शुरू कर देना चाहिए?

मेरे हिसाब से छोटी उम्र में गेम शुरू करा देना चाहिए। पर एक स्पेशल फील्ड जरूरी नहीं है, सबसे पहले बच्चे को प्लेयर बनाना जरूरी है, बहुत जरूरी है कि बच्चे पहले एथलीट बने। इसके बाद वह अपनी पसंद का सपोर्ट खुद चुन सकते हैं।

डॉ संजय धवले और केपी श्रीवास्तव की युगल प्रदर्शनी प्रेरणा दायक

● (गूंज न्यूज नेटवर्क)

रंग शिल्प समिति एवं ग्वालियर स्मार्ट सिटी के संयुक्त तत्वाधान में कला समारोह में ग्वालियर स्मार्ट सिटी की सीईओ श्रीमती जयति सिंह ने रीजनल आर्ट एंड क्राफ्ट सेंटर बैजाताल पर नवनिर्मित कला दीर्घा में डॉक्टर संजय धवले और श्री केशव प्रसाद

श्रीवास्तव की युगल प्रदर्शनी का भव्य समारोह में उद्घाटन किया। उन्होंने प्रदर्शनी को प्रेरणादायक निरूपित करते हुए नगर के कलाकारों को कला आयोजनों में ग्वालियर स्मार्ट सिटी के भरपूर सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होंने रंग शिल्प संस्था के प्रयासों को साधुवाद देते हुए नियमित कला कार्यक्रमों के आयोजन का कैलेंडर बनाने और उस पर अमल करने का सुझाव दिया श्रीमती जयति सिंह ने पूरी गंभीरता से रूचि लेते हुए प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा दोनों कलाकारों के कामों की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

कला में गहरी पैठ रखने वाली श्रीमती सिंह ने पेंटिंग और मूर्तियां का बारीकी से अवलोकन किया। उल्लेखनीय है कि प्रदर्शनी में के पी श्रीवास्तव की 23 पेंटिंग और 14 मूर्तियां तथा डॉ संजय धवले की 16 पेंटिंग प्रदर्शित की गई हैं। इन कलाकृतियों में विषयों और रंगों की विविधता, जीवन और कुदरत का सुंदर चित्रण मिलता है। समकालीन कला दृष्टि से देखे तो इनमें भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्रकृति का अनोखा सौंदर्य दृष्टव्य है। कला समारोह का संभाग आयुक्त आशीष सक्सेना और डीन गजराराजा चिकित्सा महाविद्यालय डॉ. समीर गुप्ता की गरिमामय उपस्थिति में समापन हो गया। अतिथि द्वय ने कला समारोह के अंतिम चरण की युगल प्रदर्शनी जिसमें डॉ. संजय धवले और श्री के पी श्रीवास्तव की मूर्तियां और पेंटिंग्स प्रदर्शित थीं, का अवलोकन किया।

अतिथि द्वय ने प्रदर्शनी में लगीं एक-एक पेंटिंग देखीं। इस अवसर पर संस्था को साधुवाद देते हुए उन्होंने ऐसे आयोजनों की निरंतरता पर बल दिया। साथ ही अलाकारों की कलाकृतियों की भी मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कलाकारों से निरंतर रचनात्मक सृजना द्वारा कला प्रेमियों को आनंदित करते रहने का आग्रह किया। डॉ. धवले ने भी इस अवसर पर अपनी कला सृजना पर संक्षिप्त में जानकारी दी। इस अवसर पर नगर के प्रख्यात पत्रकार एवं लेखक राकेश अचल, चन्द्रवेश पाण्डे, फाईन आर्ट कॉलेज के प्राचार्य मधुसूदन शर्मा, समिति के सदस्य कलाकार, अपर संचालक जनसंपर्क जी एस मौर्य, सहायक संचालक जनसंपर्क मधु सोलापुरकर तथा श्री हितेन्द्र सिंह भदौरिया भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन श्री सुभाष अरोड़ा ने किया।

संगीत के क्षेत्र में उभरता सितारा हैं नमन श्रीवास्तव

ग्वालियर शहर का नाम देश-दुनिया में किया रौशन

आज कई होनहार प्रतिभाएं दुनियाभर में ग्वालियर का नाम रौशन कर रहे हैं ऐसे ही एक युवा सितारे सिंगर नमन श्रीवास्तव जिन्होंने संगीत के क्षेत्र में कई उपलब्धियां अपने नाम की हैं और ग्वालियर का नाम रौशन किया है। आज गूंज पत्रिका अपनी कलम के माध्यम से ग्वालियर के होनहार प्रतिभा को अपनी कलम के माध्यम से सलाम कर रहे हैं। नमन ने अपने हुनर के दम पर यह मुकाम हासिल किया है और साबित कर दिया है कि आज का युवा किसी से कम नहीं हैं। इस बार हम अपने पाठकों को गूंज स्टार के रूप में रूबरू करा रहे हैं नमन श्रीवास्तव से गूंज को दिए साक्षात्कार के कुछ अंश

1.आप अपने बारे में बताएं?

मेरा नाम नमन श्रीवास्तव है और मेरी दुनिया संगीत है बचपन से ही संगीत मे शौक रहा और आज मैं थोड़ा बहुत बिहारी जी की कृपा से संगीत के साथ ही जी रहा हूँ। संगीत के साथ Music Production भी करता हूँ।

2.आप अपनी जॉर्नी के बारे में बताएं!

मैं बचपन से ही थोड़ा बहुत गाना गाया करता था। फिर धीरे धीरे शौक बढ़ता गया और कुछ छोटी छोटी जगहों पर मुझे सक्सेस मिली घर की तरफ से सपोर्ट मिलने से रास्ते और आसान होते गए। दिल्ली जाकर थोड़ी बहुत कवर सोंग्स किये। उसके बाद मुंबई मे कुछ अचीवमेंट मिली अभी कुछ समय पहले मेरा टी-सीरीज पर गाना आया है 'जान' । जिसे काफी ज्यादा पसंद किया जा रहा है।

3.अपने अपकमिंग प्रोजेक्ट के बारे में बताएं।

अभी मेरा एक कवर 1मि. क्रॉस हुआ है कुछ ऑफिशियल सौंग भी 5मीलियन तक गाये है। अपकमिंग कुछ मूवीज में मेरे गाने आने वाले है। कुछ एल्बम दुबई में शूट हुए हैं वो आने वाले है। और अब हम लोग खुद के गाने भी निकाल रहे है मेलोडी बैंक हमारा यूट्यूब चैनल है और ये हमारे नई शुरुआत है ।

4. अपनी inspiration के बारे में बताईये।

Inspiration मुझे मेरे पापा से ही मिली है । उनसे ही सब मैने सिखा है और आज जिस मुकाम पे हु सब उनकी वजह से हू । क्योंकि संगीत मे रुचि मेरे पापा ने ही और जगाई है मम्मी और पापा मेरे inspiration हमेशा रहेगी और मेरे बड़े भाई ने भी मुझे काफी प्रेरणा दी है, जिन्होंने मुझे हर मोड पर सही गलत बताया क्या कैसे करना है।

5. आप सोसाइटी को क्या मेसेज देना चाहेंगे।

सोसाइटी को मैं यही बोलूँगा अपने इंडिया में टैलेंट की कमी नही है । तो अपने बच्चों मे आर्ट को निखरने दें । उन्हे कला में आगे बढ़ाएं एजुकेशन के साथ कला भी बहुत ज़रूरी है।

जन-जन तक पहुंच रही आपकी अपनी आवाज़

GOONJ

National News Magazine

सदस्यता फॉर्म

देश के सभी प्रदेशों एवं मध्य प्रदेश के सभी जिलों में प्रसारित ग्वालियर चम्बल अंचल की लोकप्रिय पत्रिका गूंज की वार्षिक सदस्यता ग्रहण करें

(मात्र 1500 रुपए में वार्षिक सदस्य बनें)

गूंज पत्रिका पढ़ें पूरे एक साल

पत्रिका में अपने संस्थान/संस्था/फर्म/बर्थ-डे/मैरिज एनीवर्सरी/पुण्यतिथि, अथवा कोई भी विज्ञापन पत्रिका में प्रकाशित करवाएं (साइज एक चौथाई) एक बार बिल्कुल फ्री

मैं गूंज नेशनल न्यूज मैगजीन की सदस्यता प्राप्त करने का इच्छुक हूं कृपया मुझे पत्रिका की सदस्यता प्रदान करें।

नाम...जन्म तिथि...............................व्यवसाय...

राज्य...शहर..............................संपर्क/पता...

.

हस्ताक्षर

website : www.goonjgwl.com, Email : goonjgwl@gmail.com

Address : E-69, Harishankarpuram, Gwalior (M.P.) Cont-7880075908 7880040908

PARAKH

X-RAY, ULTRASOUND & COLOUR DOPPLER CENTRE

Dr. R.P. Gupta
M.D. (Radiology)
Sonologist,
Radiologist& C.T.
Scan Specialist

Dr. J.S. Sikarwar
Hony. Consultant
M.D, (Radiology)
Professor, G.R. Medical
College, Gwalior

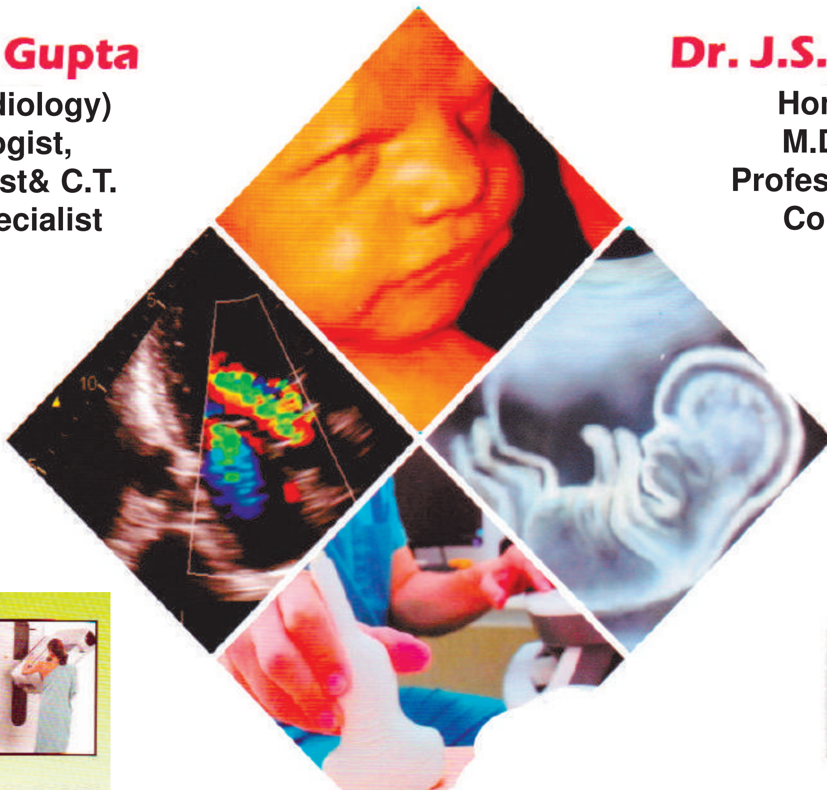

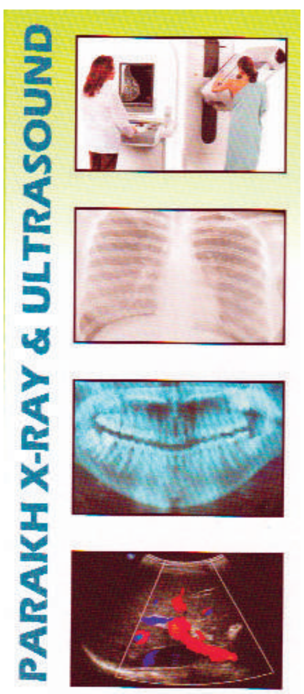

Facilities Available

Digital X-Ray
Ultrasonography
High Resolution Sonography
Colour Doppler
USG - 3D / 4D
Anomaly Scan / Target Scan
O.P.G.
ECHO Cardiography
Mammography

PARAKH
"We Care"

परख

एक्स-रे, अल्ट्रासाउण्ड एवं कलर डॉपलर सेन्टर

पुराना बस स्टेण्ड, कम्पू लश्कर, ग्वालियर- 474009 (म.प्र.) सम्पर्क : (0751) 2628850, 4030299

ABHINAV IMAGING

AND DIAGNOSTICS CENTRE

ULTRASOUND

DR ABHINAV GUPTA

Add. First Floor, Dwarkashish Tower In Front of Dwarkadhish Temple Thatipur, Gwalior (M.P.)

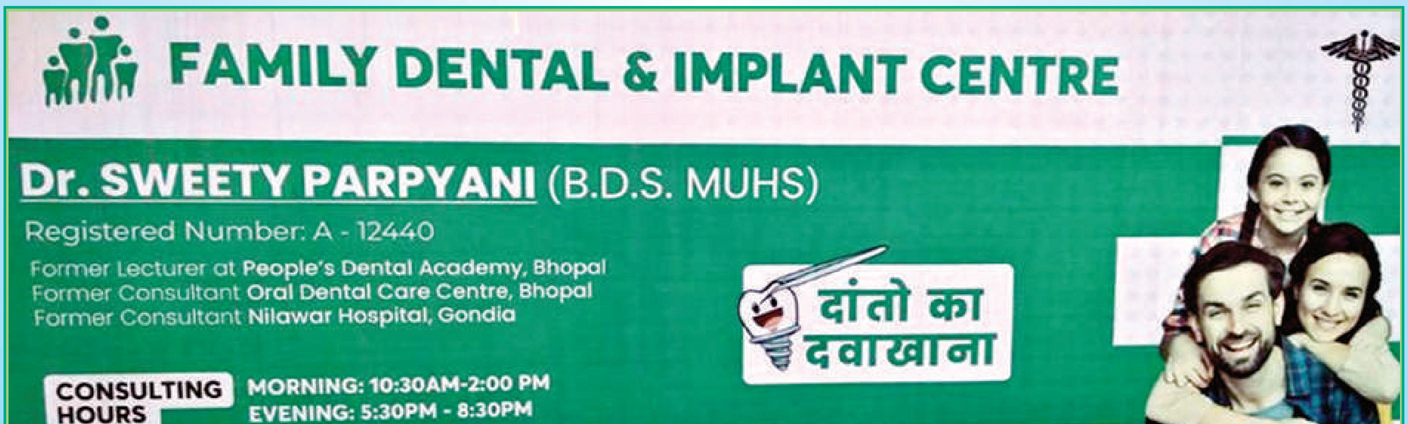

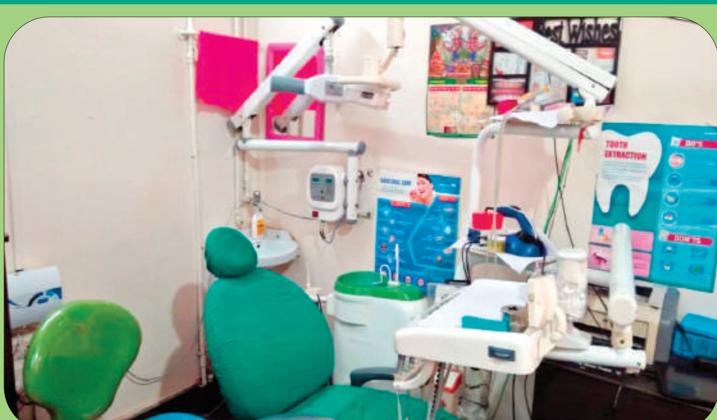

DR, Sweety Parpyani

B.D.S. MUHS

EX. Lecturer at people Dental Academy, Bhopal
Ex. Consultant Oral Dental Care Centre, Bhopal
Ex. Consultant Nilawar Hospital, Gondia

Consulting Hrs.

Morning- 10.30-02.00
Evening 05.30-08.30

D-5, Harishankar puram Gwalior (M.P.) 9479316075